Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

ओ३म्

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५४ अंक - १० महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र मई (द्वितीय) २०१३

महर्षि दयानन्द सरस्वती सन-१८२४ - सन-१८८३
ब्रह्मचारी रामानन्द शिष्य

१

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

ध्यान प्रशिक्षक-प्रशिक्षण शिविर में प्रथम श्रेणी प्राप्त शिविरार्थी-गण

श्री अरविन्द पण्डा, ओडिशा

ब्र. भास्कर, रोहतक

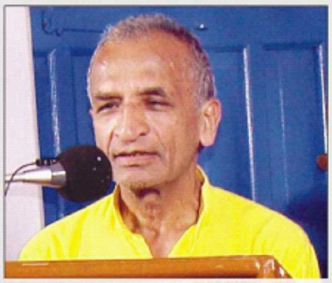
डॉ. रमेश मुनि, अजमेर

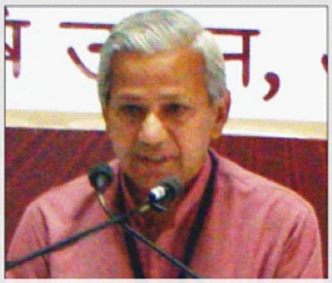
श्री सेवकराम, लखनऊ

श्री के.एम. राजन, केरला

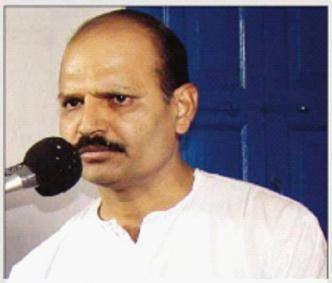
श्री गणेश प्रसाद सिंह, म.प्र.

श्रीमती अंजु, अहमदाबाद

श्रीमती उषा, अजमेर

श्रीमती शशी खुल्लर, गुड़गांव

श्री रामगोपाल गर्ग, अजमेर

श्री शिवाजी सदाशिव ब्रह्मणकर
महाराष्ट्र

ब्र. ओमदेव, रोहतक

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५४ अंक : १०
दयानन्दाब्द: १८९
विक्रम संवत्: वैशाख कृष्ण, २०७०
कलि संवत्: ५११४
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११४

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

मई द्वितीय २०१३

अनुक्रम

१. चीन की समस्या नेहरू से	सम्पादकीय	०४
२. साधक-भाव	स्वामी विष्वङ्	०७
३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	०८
४. वैदिक-ध्यान-प्रशिक्षक-प्रशिक्षण....		१३
५. वेदों की ओर एक कदम और.....	दार्शनेय लोकेश	१६
६. मीमांसा दर्शन-एक भाषाबोधक शास्त्र	वेदनिष्ठ:	१८
७. नैष्ठिक अग्निव्रत की महर्षि दयानन्द से	सत्यजित्	२२
८. ओडिशा यात्रा-उमड़ते अनुभव	सत्येन्द्र	२६
९. सांस्कृतिक पतन	राजेन्द्र प्रसाद	२९
१०. आध्यात्मिक गोष्ठी-आर्यसमाज.....	सत्यजित्	३१
११. पुस्तक-परिचय		३५
१२. संस्था-समाचार		३७
१३. आर्यजगत् के समाचार		४०

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

सम्पादकीय.....

चीन की समस्या नेहरू से मनमोहन तक

चीन ने भारत पर आक्रमण नहीं किया है, भारत ने उसे आक्रमण करने का निमन्त्रण दिया है। आज भी भारत सरकार उसे आक्रामक कहने के लिए तैयार नहीं है, सीमाओं की सुरक्षा में इसे इधर-उधर आने-जाने का खेल बता रही है। चीन को लेकर हमारी सरकारों की सोच में राजनीतिक अपरिपक्वता का ही नहीं देश की अस्मिता व रक्षा भावना से भी शून्य प्रतीत होता है। आज इस देश का प्रधानमन्त्री कह रहा है, चीन का हमारी सीमा में घुस आना कोई आक्रमण नहीं है, हमारी सेनाएँ भी घूमते हुए चीनी सीमा में घुस जाती हैं। यह वक्तव्य एक घरेलू पड़ौसी का भी नहीं हो सकता। परन्तु भारत के प्रधानमन्त्री का है। इसे एक बुद्धिमान् व्यक्ति क्या समझे। नादानी या कायरता? दोनों ही बातें किसी देश के लिए स्वीकार्य नहीं हो सकती। भारत सरकार का विदेश मन्त्री कहता है चीन की करतूत एक हलका सा चेहरे का मस्सा है, जो क्रीम लगाते ही दूर हो जाएगा। यह मानसिकता किसी का भी भला नहीं कर सकती है, उसे भारत में देखा जा सकता है।

आज चीन की सेना भारतीय सीमा में उन्नीस किलोमीटर तक घुसकर अपने तम्बू गाड़ चुकी है। भारत बातचीत से समस्या का समाधान देख रहा है। वह चीन को आक्रमक कहकर नाराज नहीं करना चाहता। भारत कुछ देकर भी उसे सन्तुष्ट देखने की इच्छा रखता है। वर्तमान भारत की सरकार सीमा को सुरक्षित रखने के स्थान पर बाजार व्यवस्था को सुरक्षित रखना अधिक महत्त्वपूर्ण मानती है। दुकानदार कभी चेतावनी की भाषा नहीं बोल सकता। आश्चर्य तो यह है कि इस बाजार व्यवस्था में भी चीन ही भारत से अधिक लाभ उठा रहा है। तब भी भारत चीन को उसकी औकात नहीं बता सकता। यही भारत की स्थिति रह गई है। चीन सदा अपनी सीमाओं को बढ़ाने की दिशा में प्रयत्नशील रहता है। चीन के पूर्व राष्ट्रपति माओ ने तो कहा था-''तिब्बत चीन की हथेली है और लद्दाख, आक्साईचिन, नेपाल, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश इसकी अंगुलियाँ हैं।'' चीन यदि लद्दाख में घुसकर उसे अपना बता रहा है तो बिना प्रयोजन के तो नहीं बता रहा है।

भारत ने पहला अपराध तब किया था, जब १९५० में चीन ने तिब्बत में प्रवेश करके उस पर बलात् अधिकार कर लिया था और भारत चुपचाप देखता रहा। 'विदेशों में पले-बढ़े लोग भारतीय राजनीति और देशहित साधने में कैसे अक्षम होते हैं?' उनके उदाहरण पं. नेहरू ही हो सकते हैं। देश के लाभ के स्थान पर अपने अन्तर्राष्ट्रीय व्यक्तित्व को सुधारने के चक्कर में चीन को संयुक्त राष्ट्र संघ की सदस्यता दिलाने की लड़ाई को अपनी महानता समझते थे। चीन द्वारा तिब्बत पर आक्रमण करने पर तिब्बत को चीन का भाग मानने जैसा पाप पं. नेहरू ने किया था। जिस समय चीन ने तिब्बत पर आक्रमण किया उस समय उसकी रक्षा और व्यवस्था का उत्तरदायित्व भारत का था। भारत का अन्तिम डाकघर तक तिब्बत में था। परन्तु तिब्बत को चीन का भाग बताकर जहाँ तिब्बत की स्वतन्त्रता और शान्ति का अपहरण होने दिया वहीं शत्रु को अपना पड़ौसी बनाकर सीमा पर खड़ा कर दिया। उस समय भारत सरकार ने १९४९ में जब चीन को मान्यता दी थी, तब यदि तिब्बत को स्वतन्त्र देश की मान्यता दी होती तो भारत-चीन सीमा विवाद समस्या ही उत्पन्न नहीं होती। यही विचार डॉ. अम्बेडकर ने प्रकट किये थे। यदि उस समय की प्रतिक्रियाओं को देखा जाए तो सबसे महत्त्वपूर्ण विचार डॉ. राममनोहर लोहिया के थे। उन्होंने उसी समय स्पष्ट कर दिया था कि चीन का तिब्बत पर आक्रमण नहीं यह आक्रमण भारत पर है और भारत सरकार को उस हमले का उत्तर देना चाहिए। उन्होंने चीन द्वारा ब्रह्मपुत्र के पानी को रोकने की बात सरकार को कही थी। परन्तु पं. नेहरू हिन्दी-चीनी भाई-भाई तथा पंचशील के नारों के नशे में थे, जो आज नेहरू जी के साथ उनकी समाधि में सो रहे हैं। उस समय के राजनीतिज्ञ लोगों का विचार नेहरू जी से विपरीत था। गृहमन्त्री पटेल ने कहा था तिब्बत में चीन का प्रवेश भारतीय सीमाओं के लिए सबसे बड़ा संकट है। जयप्रकाश नारायण ने सरकार से आग्रह किया था कि वह चीन को आक्रान्ता तथा तिब्बत को स्वतन्त्र देश घोषित करे। चीन, तिब्बत में घुसकर घोषणा कर रहा था, वह तिब्बत को मुक्त करा रहा है, परन्तु उस समय चीन से कोई पूछने वाला नहीं था कि स्वतन्त्र तिब्बत को वह किस से मुक्ति दिला रहा है, हाँ चीन ने तिब्बत को उसकी स्वतन्त्रता से मुक्त कर दिया है। चीन ने अपनी क्रूरता और कुटिलता से तिब्बत के भौगोलिक व जनसंख्या के स्वरूप को बदलने में कोई कसर नहीं छोड़ी। परन्तु आज भी तिब्बत के लोग अपने देश की स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष में अपना बलिदान दे रहे हैं। आज भारत को अपने पापों का प्रायश्चित करने का अवसर है, जब वह तिब्बत को स्वतन्त्र देश के रूप में मान्यता देकर अपनी सीमा से दूर करके देश की सीमाओं को सुरक्षित करने का लाभ उठा सकता है। चीन-पाकिस्तान से मिलकर भारतीय क्षेत्र को अपने अधिकार में लेता जा रहा है। हम शान्ति और अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा के नाम पर अपमान पर भी अपना दूसरा गाल थप्पड़ मारने के लिए आगे करते जा रहे हैं, और चीन है कि भारत के गाल पर तमाचे पर तमाचा मारता जा रहा

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

है।

तिब्बत और चीन को लेकर हम सदा चीन से दबते आ रहे हैं। २००३ में अटल बिहारी वाजपेयी ने भी अपनी यात्रा के समय तिब्बत को चीन का अभिन्न अंग मानने की भारत सरकार की नीतिगत भूल को दोहराया था। यदि भूल से तिब्बत-चीन अभिन्न अंग हो सकता है, तो भूल सुधारकर उसे भिन्न अंग, स्वतन्त्र देश बनाया जा सकता है। देशों की घटती-बढ़ती सीमाएँ ही देश के सामर्थ्य और निर्बलता की प्रतीक होती है। हम अपनी सीमाओं को चारों ओर से घटने दे रहे हैं, संसार में कौन मूर्ख होगा जो हमें शक्तिशाली और समर्थ समझेगा?

१९६२ के चीन आक्रमण के समय जब चीन ने अक्साइ चीन पर अधिकार कर लिया तब भारतीय संसद में प्रधानमन्त्री नेहरू द्वारा दिया गया वक्तव्य स्मरण करने योग्य है, जिससे देश के प्रति एक प्रधानमन्त्री की क्या दृष्टि है, इसका पता लगता है। उस समय नेहरू ने सदन में कहा था कि वह जमीन बेकार है, वहाँ घास का तिनका भी नहीं होता। तब महावीर त्यागी ने अपने सिर की टोपी उतारकर कहा मेरे सिर पर एक भी बाल नहीं है तो इसको चीन को दे दूँ। देश की सीमाओं का महत्त्व और मूल्य जिन लोगों को पता नहीं है, उनसे आप और क्या आशा कर सकते हैं। आश्चर्य की बात है समय-समय पर चीन द्वारा इस प्रकार की घटनाएँ घटित की जाती हैं तथा अनेक लोग सरकार को चेताते रहते हैं, तब भी सरकारों की दृष्टि क्यों नहीं बदलती? रक्षा मन्त्री जॉर्ज फर्नाण्डीज ने सदन में कहा था-''हमारे लिए सबसे घातक शत्रु चीन है।'' इस वक्तव्य को सरकार ने पसन्द नहीं किया था। होना तो यह चाहिए कि सेना को आदेश दिया जाए वह चीनी सैनिकों को अपनी सीमा में लौटाये यदि इस स्थान पर नहीं तो दूसरे स्थान पर चीनी सैना को अन्दर खदेड़ा जाए, तब तो वार्ता की मेज पर समझौते की बात हो सकती है। यदि हम अपनी चीनियों द्वारा दबाई गई भूमि पर समझौते की बात करना चाहेंगे तो वह पहले भी नहीं हुई, आगे भी नहीं हो सकती। परन्तु प्रधानमन्त्री स्वयं को समर्थ समझते हुए उन पर विश्वास करने के लिए देश की जनता को कह रहे हैं। संभवत: वे पण्डित नेहरू के उत्तराधिकारी होने को दोहराना चाहते हैं, जब पण्डित नेहरू को सूचना दी गई कि उत्तर पूर्व में बड़ी संख्या में चीनी सैनिक निगरानी करते घूम रहे हैं तब पण्डित नेहरू ने कहा था-''कोई चिन्ता की बात नहीं मैं सब ठीक कर दूँगा, आप मुझ पर विश्वास रखें'', और एक दिन समाचार मिला बामदिला पर चीनी सेना का अधिकार हो गया। और वहाँ पर भारतीय सेना पराजित होकर पीछे हट गई। और इस प्रकार पं. नेहरू ने जनता के विश्वास से धोखा कर देश की भूमि को विदेशियों के हाथ सौंप दिया। वैसी ही भाषा आज मनमोहन सिंह बोल रहे हैं-''हमारे पास योजना है। हम समस्या को व्यर्थ तनावपूर्ण स्थिति में नहीं डालना चाहते। यह एक स्थानीय स्तर की सामान्य समस्या है। हमें पूर्ण विश्वास है, हम इस समस्या का समाधान निकाल लेंगे।'' यह बात प्रधानमन्त्री ने संवाददाताओं के साथ बात करते हुए कही। यहाँ मूल प्रश्न है, क्या इस देश की जनता को यह जानने का अधिकार नहीं कि जो समाधान प्रधानमन्त्री लेकर जा रहे हैं, वह इस देश की जनता की दृष्टि में भी समाधान का स्थान रखता है या नेहरू की तरह इस देश की जनता के साथ एक बार फिर छल होने जा रहा है? विशेषकर जब-जब प्रधानमन्त्री ने विदेशियों से वार्ता की है। हर बार वे असफल हुए हैं, और हर बार इस देश ने कुछ न कुछ खोया है। विशेष रूप से पाकिस्तान के साथ वार्ता करते हुए वे भारत की मनवाने में नहीं समझाने में असमर्थ रहे हैं। क्या ऐसे प्रधानमन्त्री पर यह विश्वास किया जाना योग्य है, कि वह अकेला देश की समस्या का समाधान कर सकता है, सफलतापूर्वक उसका हल निकाल सकता है? प्रधानमन्त्री का यह कथन नितान्त अनुचित है कि-''यह समस्या एक स्थानीय समस्या है।'' चीनी सैनिक भारत की चौदह हजार सत्तावन किलोमीटर लम्बी सीमा पर जब-तब उल्लंघन करके भारतीय सीमा में घुसते रहते हैं।

सरकारी आंकड़ों की बात की जाए तो भारत सरकार ने गत तीन वर्षों में छ: सौ बार सीमा उल्लंघन करने की बात अपने पत्राचार में की है। विदेशी संवाद की सफलता संदिग्ध है, विशेष रूप से तब जबकि प्रधानमन्त्री कार्यालय, विदेश मन्त्रालय भी देख रहा हो। इसलिए प्रधानमन्त्री के लिए यह अच्छा होगा कि वे यह न कहें कि जनता मुझ पर विश्वास करे, अपितु प्रधानमन्त्री जनता को अपने विश्वास में ले। चीन द्वारा की गई कार्यवाही इस लिए भी आश्चर्यजनक है। यह १९६२ के युद्ध के पश्चात् दुष्टता से परिपूर्ण बड़ी कार्यवाही है। यह केवल सीमा उल्लंघन ही नहीं पुराने किये अपमान को दोहराना भी है। आप तो कह रहे हैं, पहले सैनिक आये पचास सैनिकों ने वहाँ अपना तम्बू गाड़ा। उनको सहायता सामग्री देने दो ट्रक भी उनके पास खड़े हैं। दो हैलिकॉप्टर से खाद्य सामग्री और सहायता भी पहुँचाई गई है। विशेष नस्ल के खूंखार कुत्ते भी वहाँ पर मंगाकर रखे गये हैं, यह सब कार्य बिना किसी निश्चित योजना या विचार के नहीं हो सकते। इसके ऊपर आप कुछ भी कहते रहें, चीनी की सरकार क्या कह रही है, उसको जानकर आप निर्णय कर सकते हैं। वे जो कुछ कर रहे हैं, वह सब सहज या आकस्मिक नहीं है। चीनी विदेश मन्त्रालय के प्रवक्ता ने भारतीय प्रतिक्रिया पर टिप्पणी करते हुए कहा है-''चीनी सेना ने कोई भी भड़काऊ कार्यवाही नहीं की है और ना ही सीमा का उल्लंघन किया है। आगे उसका कहना है कि हम शान्तिपूर्ण तरीके से कार्य में विश्वास करते हैं, हमारा कोई कार्य किसी भी सुरक्षा और शान्ति के लिए खतरा नहीं है। चीनी रक्षा मन्त्रालय का कहना है। हमारी सेना के वायुयानों ने कभी सीमा का अतिक्रमण

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

नहीं किया है। जितने भी समाचार सीमा रेखा के उल्लंघन के बताये जा रहे हैं, वे सब सच नहीं हैं। साथ ही चीनी प्रवक्ता का कहना है जो भी सीमा के अतिक्रमण की बात की जा रही है, वह संचार माध्यम के उतावलेपन का परिणाम। समाचार माध्यमों को संयम बरतना चाहिए, जिससे दोनों देशों के बीच सद्भावना पूर्ण वातावरण को क्षति न पहुँचे। चीनी विदेश मन्त्रालय ने कहा है, वे सारे आक्षेपों को झूठा मानते हैं। हम किसी भी समस्या का समाधान शान्तिपूर्ण तरीके से करने के लिए प्रयासरत हैं। हमारा कोई कार्य स्थायित्व व शान्ति के लिए खतरा नहीं है। प्रश्न उठता है यह सब किया जा रहा है, इसका उद्देश्य क्या है? एक ओर भारत के विदेश मन्त्री की चीन यात्रा प्रस्तावित है, दूसरी ओर चीन के प्रधानमन्त्री की भारत आने की योजना बन रही है। ऐसे समय में ऐसे कार्यों से भारत सरकार के मन में चीन यह भय बैठाना चाहता है। जिससे कोई नई मांग उसके साथ न उठाई जा सके भारत इतने में ही अपना भला समझ लेगा कि चीन ने नया कदम उठाया है और उस पर विचार करने का आश्वासन दिया है। श्री मनमोहन सिंह के प्रसन्न होने के लिए इतना तो पर्याप्त होगा।

हमें समझ लेना चाहिए कि चीन आगे बढ़ रहा है, परन्तु वह हम से युद्ध करेगा, ऐसा करना कठिन है, उसके लिए सम्भव नहीं है। और ऐसा करने का अवसर तो तब आएगा जब भारत अपने अन्तिम हथियार के रूप में युद्ध के लिए तैयार होगा। अभी तो चीन के अपनी सीमा में घुस आने पर भारत अभी चीन को धमकी देने की मन:स्थिति में ही नहीं आया। फिर लड़ाई करने की मानसिकता तो बहुत दूर है। अत: चीन को बिना लड़े भारत की भूमि दबाने का अवसर मिल रहा है वह उसे क्यों छोड़ेगा। भारत के पास युद्ध करने की क्षमता है, परन्तु युद्ध की मानसिकता का अभाव है। अत: युद्ध की संभावना नहीं है। राजनीति में कोई भी संभावना कभी समाप्त नहीं होती। हमारे पड़ोसी से सम्बन्ध अच्छे हैं, इसलिए हम उधर से निश्चिन्त हो जायें तो हमारा मरण निश्चित है, क्योंकि धोखा तो विश्वास में ही छिपा होता है। धोखा पास वाले से, परिचित से, पड़ोसी से ही होता है। पड़ोसी से मित्रता कम और शत्रुता की संभावना अधिक होती है। आप शक्तिशाली हैं, पड़ौसी आपसे मित्रता करेगा, नहीं तो कमजोरों का आदर आज तक किसने किया है? संस्कृत में एक शब्द है-'अरि' इसका मूल अर्थ था-'पड़ौसी' परन्तु पड़ोसी अधिकांश में शत्रु हो जाता है। अत: संस्कृत का अरि शब्द पड़ौसी अर्थ छोड़कर शत्रु अर्थ में प्रचलित हो गया। चीन जिस प्रकार से भारत की सीमा में बढ़ रहा है उसे चाणक्य ने पृथ्वी को जीतने का प्रथम उपाय बतलाया है। इसमें शत्रु की भूमि पर आगे बढ़े शत्रु की उदासीनता का लाभ उठाकर और आगे बढ़ जावें, इस प्रकार शत्रु पर विजय प्राप्त करें। भारत के चाणक्य का सूत्र चीन के कार्य में आ रहा है। यह दुर्भाग्य की बात है। इसका प्रतीकार जन-जागरण कर सरकार को उचित निर्णय के लिए बाध्य करना ही है। राज्य को जीतने के लिए चाणक्य ने ठीक ही कहा है-

एवं विजिगीषुरमित्रभूमिं लब्ध्वा मध्यमं लिप्सेत।
तद्सिद्धावुदासीनम्। एष प्रथमो मार्ग: पृथिवीं जेतुम्।।

-धर्मवीर

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

-संपादक

मनुष्यों को योग्य है कि उत्तम विद्वानों के प्रसङ्ग से उत्तम-उत्तम विद्याओं का संपादन कर अपनी इच्छाओं को पूर्ण करके, इन विद्वानों का सङ्ग और सेवा सदा करना चाहिये।-**महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद भावार्थ-४.५।**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण.....

साधक-भाव

-स्वामी विष्वङ्

प्रत्येक साधक अपनी साधना के क्षेत्र में स्वयं को उन्नत करना चाहता है। पुरुषार्थ करता है, जितने भी उपाय हो सकते हैं, उन्हें अपनाकर आगे बढ़ना चाहता है। परन्तु चाहकर भी उतनी उन्नति को प्राप्त नहीं कर पाता और स्वयं को देखता है, तो उसे पीड़ा होती है-दु:ख होता है। कभी-कभी हताश-निराश भी होता है। साधक के जीवन में विभिन्न प्रकार की बाधाएँ, कठिनाइयाँ, समस्याएँ या उन्नति को रोकने वाले अवरोधक कारण उपस्थित होते हैं। ऐसी स्थिति में साधना को उन्नत करने वाले यम और नियमों का पालन, उस रूप में नहीं कर पाता, जिस रूप में करने से साधना उत्कृष्ट बनती है। यद्यपि साधक इस बात को स्वीकार करता है कि यम-नियमों के पालन के बिना साधना उत्कृष्ट नहीं बन सकती, इसी कारण यम-नियमों पर ध्यान भी देता है। परन्तु साधक के मन पर 'साधक' होने का प्रभाव अत्यधिक पड़ता है। यही 'साधक-भाव' साधक को अन्यों से अलग करता है।

इसी साधक-भाव के कारण साधक स्वयं को अन्यों से अलग मानता है। साधना न करने वाले असाधकों की अपेक्षा साधना करने वाले स्वयं को साधक मान लें, इतने मात्र से कोई अनुचित बात नहीं है। परन्तु साधक 'साधक-भाव' को अधिक महत्व देता हुआ साधक पक्ष को इतना अधिक उभारता है कि प्रत्येक व्यवहार में अलग अपेक्षा रखने लगता है। जिस कारण साधक के रहन-सहन में, खान-पान में, आने-जाने में अपेक्षाएँ बढ़ती जाती हैं। जिससे अन्यों को कष्ट-पीड़ा-दु:ख हो रहा होता है। अनेक बार साधक यह आकलन नहीं कर पाता है कि मेरे कारण कितनों की हिंसा हो रही है। साधक को यह पता नहीं चलता कि साधना के चादर ओढ़कर कितनों को हिंसित कर रहा हूँ, कितनों के साथ सूक्ष्म असत्याचरण कर रहा हूँ, कितनों के साधनों को छीन रहा हूँ, कितनों के हक का परिग्रह कर रहा हूँ। साधक को यह पता नहीं चल पाता है कि मैं साधक-भाव को मन में लाकर कितना स्वार्थी बनता जा रहा हूँ।

साधक को साधना की अपेक्षाओं को पूर्ण करना तो चाहिए, परन्तु अपेक्षाओं को पूर्ण करते हुए यह भी ध्यान रखना होता है कि अन्यों की हिंसा आदि न हो। इसीलिए साधना करने वालों के लिए योग ने अपरिग्रह और तप का विधान किया है। कम से कम साधनों में रहने वाले साधक ही अन्यों को हिंसित नहीं करते हैं। तप को जीवन साथी बनाने पर ही अपेक्षाएँ समाप्त सी हो जाती हैं। साधना के क्षेत्र में साधक तब सफल हो पाता है, जब अपरिग्रही और तपस्वी होकर जहाँ-कहीं भी अपनी साधना को उन्नत करने में लगा रहता है। साधक 'साधक-भाव' को रखता हुआ भी अन्यों को यह भान नहीं होने देता है कि वह विशेष है और उसके लिए अमुक-अमुक अपेक्षाएँ पूर्ण होनी चाहिए। हाँ साधना के क्षेत्र में चलते हुए साधक को वर्षों बीत गये हों और बहुत सारी योग्यताएँ प्राप्त हो चुकी हों, जिनकी प्रसिद्धि लोक में हों, बिना मांग किये अनेकों अपेक्षाओं की पूर्ति अनायास हो रही हो, तो भी उच्च स्तर के साधक का यह प्रयास रहता है कि कम से कम साधनों का प्रयोग किया जाये। जिससे संग दोष और स्मय (=अहंकार) दोष न आ सके, क्योंकि संग एवं स्मय दोष से साधक का पतन हो जाता है।

साधक ऐसा क्या करे, जिससे उस के जीवन में अपेक्षाओं की गठरी न बने और हिंसा, असत्य आदि दोषों से पृथक् रह सके। इसके अनेक समाधान हो सकते हैं। परन्तु यहाँ पर एक समाधान यह है कि साधक आत्मा के स्वरूप को अच्छी प्रकार जान लें अर्थात् आत्मा के यथार्थ रूप को पहचान ले कि आत्मा क्या चाहता है? आत्मा का स्वरूप यह स्पष्ट करता है कि अप्राप्त सुख को प्राप्त करना और प्राप्त दु:ख को दूर करना। इस बात को पूरे संसार में कोई भी अस्वीकार नहीं कर सकता। चाहे वह साधना करने वाला साधक हो या साधना न करने वाला कोई भी मनुष्य हो, अन्तर इतना मात्र है कि एक तत्त्वज्ञान से युक्त होकर जीवन व्यतीत करता है और अन्य सांसारिक (राग-द्वेष युक्त) ज्ञान से युक्त हो कर जीवन व्यतीत करता है। परन्तु दोनों का लक्ष्य एक ही है अप्राप्त सुख को प्राप्त करना और प्राप्त दु:ख को दूर करना, फिर भी दोनों में अन्तर है। वह अन्तर है एक का ईश्वरीय सुख प्राप्त करना और दूसरे का लौकिक सुख को प्राप्त करना। परन्तु दोनों का लक्ष्य समान है, सुख को प्राप्त करना। ऐसी परिस्थिति में साधक को चाहिए कि जिस अपेक्षा को सम्मुख रखकर वह साधना के क्षेत्र में उन्नति करना चाहता है, उसी अपेक्षा को सम्मुख रखते हुए अन्य व्यक्ति भी अपनी उन्नति चाहता है। इसका अभिप्राय यह हुआ कि जैसे हम अपने लिए चाहते हैं, वैसे दूसरे भी अपने लिए चाहते हैं। दोनों ही समान हैं। कोई साधक यह विचार करे कि मैं तो कुछ अलग हूँ। परन्तु अन्य उसे वैसा अनुभव नहीं करते हों, तो उसे वैसी अपेक्षा न करते हुए पूर्व में कहे हुए भाव से चलते रहना चाहिए। जब वर्षों साधना करके विशेष योग्यताओं को प्राप्त कर लेवें, तब अन्य जन स्वत: ही बिना कहे ही बहुत सारी अपेक्षाओं की पूर्ति अनायास ही करते रहेंगे। इसलिए साधक को चाहिए कि आत्मा को जाने-पहचाने, जिससे आत्मा का स्वरूप साधक के समक्ष उपस्थित हो जायेगा और साधक आत्मा के स्वरूप के अनुसार ही अन्यों के साथ व्यवहार करता जायेगा। ऐसी स्थिति में साधक की अपेक्षाएँ, अपेक्षाएँ नहीं रहेंगी और साधना में विशेष उत्कर्ष को प्राप्त होता जायेगा। **-ऋषि उद्यान, अजमेर।**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

कुछ तड़प-कुछ झड़प

-राजेन्द्र जिज्ञासु

ऋषि की प्रेरणा से दक्षिण भारत का पहला आर्यसमाज-दक्षिण भारत में पहला आर्यसमाज कब और कहाँ स्थापित हुआ? आर्यसमाज के इतिहास पर लिखने वालों ने इस पर कभी कुछ नहीं लिखा। हैदराबाद स्टेट का पहला आर्यसमाज धारूर जिला बीड़ में स्थापित हुआ। यह तो बहुतों ने लिखा है। धारूर में आर्यसमाज की स्थापना कैसे हुई, इस विषय में भी कोई जानकारी नहीं मिलती।

कर्नाटक आर्य प्रतिनिधि सभा ने सात खण्डों में आर्यसमाज का इतिहास लिखने वाले विद्वानों से पत्र लिखकर पूछा था कि कर्नाटक में आर्यसमाज का प्रचार कब आरम्भ हुआ? उन्हें उत्तर मिला कि स्वामी नित्यानन्द जी ने कर्नाटक में १८९३ में पहले आर्यसमाज की स्थापना की।

कुछ वर्ष पूर्व जब हमें कर्नाटक आर्यसमाज का इतिहास लिखने का कार्य सौंपा गया, तो वहाँ की सभा ने एक बैठक बुलाकर हमसे पूछा आपकी खोज भी क्या यही बताती है कि महात्मानन्द नित्यानन्द जी ने सबसे पहले कर्नाटक में ऋषि सन्देश सुनाया। हमने सभा को बताया-हमने सप्रमाण यह सिद्ध किया है कि ऋषि के जीवन काल में कर्नाटक में आर्यसमाज की एक सुदृढ़ शाखा स्थापित हो गई थी। यह सुनकर सब आर्य बन्धु हर्षित व गर्वित हुए। हमने कहा कि हमने अपनी पुस्तक में तत्कालीन अधिकारियों के नाम तो दिये ही हैं साथ ही उस काल के 'भारत सुदशा प्रवर्त्तक' मासिक के कुछ सदस्यों के भी नाम दिये हैं। यह भी बताया कि कर्नाटक के एक विद्वान् ने पूना में ऋषि के कई प्रवचन सुने। वह दर्शनों का पण्डित व भाष्यकार हुआ है। भले ही वह विद्वान् आर्यसमाज से नहीं जुड़ा परन्तु महर्षि का बड़ा प्रशंसक था। उसने आर्यसमाज के कई मूलभूत सिद्धान्तों की खुलकर पुष्टि व प्रशंसा की। उस कन्नड़ दार्शनिक का नाम श्री पं. कृष्ण जी शास्त्री था।

यह जानकारी प्राप्त करके डॉ. राधाकृष्ण जी, श्री अनन्त आर्य तथा सत्यव्रत जी आदि गद्गद हो गये। हमारा वह इतिहास ग्रन्थ तो अभी तक नहीं छपा परन्तु यह जानकारी हमने अपनी कुछ पुस्तकों में दी है।

अब ऋषि जीवन पर कार्य करते हुए ऋषि जीवन के प्रथम भाग में तो सांकेतिक रूप में इन बातों की चर्चा की है। ग्रन्थ के दूसरे भाग में कुछ विस्तार के साथ इस विषय पर सप्रमाण नया प्रकाश डाला है। दक्षिण भारत का पहला आर्यसमाज मैंगलूर में स्थापित हुआ और इसकी सीधी प्रेरणा वहाँ के आर्यवीरों को महर्षि दयानन्द जी से प्राप्त हुई थी। उन लोगों ने किसी से ऋषि का नाम सुन-सुनाकर वहाँ ओ३म् पताका नहीं फहराई थी। कुछ आर्यवीर मैंगलूर से मुम्बई पहुँचे। यह घटना सन् १८७५ की महर्षि की तीसरी मुम्बई यात्रा के दिनों की है। आठ नवम्बर को मुम्बई के सागर तट पर प्रिंस ऑफ़ वेल्ज (Prince of Wales) भारत पहुंचा था। पाँच दिन के पश्चात् राजकुमार पूना, कोल्हापुर आदि नगरों की यात्रा पर निकल गया। तब मुम्बई महानगरी में ऋषि जी के व्याख्यानों की धूम मची हुई। मैंगलूर के प्रबुद्ध प्रतिष्ठित भूपति युवक रंगा पण्डित ने महर्षि को सुना। उनसे भेंट करके बातचीत की। उनके ग्रन्थ लिये। वेदभाष्य के भी सदस्य बने। उनके साथी युवकों ने भी ऋषि को सुना। ऐसा एक तत्कालीन पत्र में छपे एक वृत्तान्त से संकेत मिलता है। आरम्भ में ही इस समाज के सभासदों की संख्या साठ हो गई। बहुत कम नगरों में आर्यसमाज स्थापित होते ही सदस्य संख्या साठ तक पहुँच पाई।

ऋषि जीवन पर कार्य करते हुए इस नई खोज कर पाने पर लेखक को बहुत सन्तोष तथा आनन्द की प्राप्ति हो रही है। हम विदेशी, परकीय मतों के लेखकों, पादरियों व अंग्रेजी पत्र-पत्रिकाओं को आवश्यकता से अधिक महत्त्व नहीं देते। हम आर्य धर्म तथा आर्यसमाज के इतिहास व उपलब्धियों की खोज के लिए अपने साहित्य, अपने पत्रों तथा अपने विद्वानों को प्राथमिकता देते हैं। मैक्समूलर आदि परकीय लोग, गोरी चमड़ी वाले क्या लिखते हैं? क्या कहते हैं? ये सब जानकारी तो रखते हैं परन्तु हम हीन भावना से ग्रसित होकर मैक्समूलर की गर्दान नहीं करते।

इस उपरोक्त खोज को सिरे चढ़ाने में हमें चुपचाप ठोस काम करने वाले परोपकारी के सदस्य प्रिय राहुल आर्य अकोला ने भी ठोस सहयोग किया। ये कन्नड़ युवक ऋषि को १८७५ में मुम्बई मिले परन्तु कब? यह एक समस्या थी। ऋषि १८७५ ई. में दो बार मुम्बई पधारे। क्या पता ये युवक दूसरी यात्रा के समय महाराज के दर्शन कर पाये अथवा तीसरी यात्रा के समय। सौभाग्य से निश्चित जानकारी पाने के लिये हमें उसी समाचार में एक सूत्र मिल गया। उस वृत्तान्त में यह लिखा था कि जब प्रिंस आफ़ वेल्ज मुम्बई पहुँचा इन कन्नड़ युवकों ने तब ऋषि जी को सुना और पण्डित रंगा ने महाराज से वार्तालाप किया। राजकुमार १८७५ में भारत आया यह तो पता था परन्तु वह १८७५ में किन तिथियों को आया। यह कार्य हमने प्रिय राहुल को सौंपा। राहुल जी ने बड़े उत्साह तथा श्रद्धा से यह कार्य कर दिया। राहुल के विद्वान् आर्य पिता को भी आज इस बात का गौरव है कि परोपकारिणी सभा से जुड़कर मेरा बेटा ऋषि मिशन के लिये सेवारत रहता है।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

गुरु ग्रन्थ साहिब और ओ३म्–श्री खुशवन्तसिंह ने गायत्री मन्त्र के पश्चात् ओ३म् पर चढ़ाई कर दी। दो बार तो डाक की गड़बड़ से हमारा उत्तर न पहुँच पाया। फिर तीसरी बार भेजा। खुशवन्त सिंह स्वभाव दोष के कारण सब–कुछ जानते हुए हिन्दुओं की भावनाओं को आहत करता रहता है। स्वयं को बार–बार नास्तिक बताता है परन्तु गुरुवाणी के नाम पर उसने ओ३म् की महिमा के प्रमाण तड़प–झड़प में भेजे। और भी अनेक प्रमाण आवश्यकता पड़ी तो देंगे।

सिखी का आदि और अन्त ओ३म् ही है। एक दिन मन में आया सिखों की पोथी 'सुखमनि साहिब' का कुछ पाठ करें। पोथी खोली तो '**१ओं सतिगुरु प्रसादि**' से पोथी का आरम्भ करते हुए हमें रह–रहकर खुशवन्त सिंह जी का दुर्भावनापूर्ण लेख याद आ गया।

हम कठपुतली?–ग्वालियर से '**अमृतम्**' नाम से एक पत्रिका छपती है। उसमें मार्च मास के अंक में भक्ति में डूबकर लिखा गया है–

तन में बैठा शिव ही बोले, दिल की धड़कन में शिव डोले।
हम कठपुतली शिव ही नचाता, नयनों को पर नज़र न आता।
माटी के रंगदार खिलौने, साँवल सुन्दर और सलोने।
शिव ही जोड़े, शिव ही तोड़े, शिव तो किसी को खूला न छोड़े।

इस लम्बी रचना को पढ़कर हम सोचने लगे कि ये हिन्दू सन्त बाबा हिन्दुओं को क्या सिखा रहे हैं? यह जो घुट्टी पिला रहे हैं, यह देश जाति के विनाश का महामन्त्र है। आगे लिखा है–**जो जन दूध करेंगे अर्पण, उजले हों उनके मन दर्पण।** शिव की महिमा में लिखा है–**भंग धतूरे के मतवाले।** गीता की दुहाई देने वाला हिन्दू जीव का अनादि सत्ता भी मानता है। कर्म करने में स्वतन्त्र भी मानता है। ईश्वर को कर्मफल दाता, भोग देने वाला मानता है। यहाँ इन दोहों में सबकुछ करने कराने वाला शिव को बताया है। जीव तो मात्र मिट्टी का एक खिलौना है।

इससे सिद्ध हुआ कि बलात्कार, व्यभिचार, पाप, भ्रष्टाचार, अनाचार और काला धन के लिये किसी को पापी, दोषी नहीं माना जा सकता। खिलौने को कभी किसी जज ने न तो कभी जेल भेजा है और न ही फांसी पर लटकाया है। सब कुछ भला बुरा शिव ही करता है।

भगवान् भोग देता है। वह भोक्ता नहीं है। शिवजी दूध पीने के लिये आपको कष्ट क्यों देते हैं? कहीं भी किसी गऊ, भैंस के स्तनों से पी लें। वह शिव सबके भीतर व्यापक है तो गऊ, बकरी में क्यों नहीं? **भंग धतूरे के मतवाले**–शिव का स्तुति गान करके देश की नई पीढ़ी को नशेड़ी बनाने का यह षड्यन्त्र निन्दनीय है। एक स्कॉलर जी आर्यसमाजियों को यह सीख दे रहे हैं कि पुराणों का पौराणिकों का खण्डन न किया करो। यह सस्ता प्रवचन देने वाले कभी भी किसी बुराई को दूर न कर पाये। जातिवाद में सड़ते रहे और यह तोता रटन लगाते रहे कि हम जाति–पांति नहीं मानते। इनसे पूछे भंग, धतूरे के उपदेश को सुनकर क्या चुप्पी साधे रहें?

वेद ज्ञान का आविर्भाव–दिल्ली से एक बहुत भोले–भाले धर्मनिष्ठ युवक ने मुझे चलभाष पर कहा कि मैं ईश्वर, वेद व धर्म में श्रद्धा रखता हूँ परन्तु मेरी समझ में नहीं आता कि ईश्वर ने आदि सृष्टि में ऋषियों को चारों वेदों का ज्ञान कैसे दिया? सामवेद के प्रथम मन्त्र में ईश्वर से प्रार्थना की गई है। यह प्रार्थना करने वाला आत्मा व परमात्मा कौन है? यह भी विनम्रता से कहा कि मुझे धर्मद्वेषी मत समझना।

उस युवक के प्रश्नों का स्वागत करते हुए उसे शङ्का करने के लिये धन्यवाद दिया और कहा कि अच्छा होगा यदि आप मिलने की कृपा करें। आपके प्रश्न अच्छे हैं। आमने–सामने बैठकर सुनेंगे तो आपको आनन्द होगा। कुछ समाधान परोपकारी में कर देंगे। उस युवक ने आना था परन्तु आये नहीं। सब ज्ञान पिपासु जान लें कि इस प्रश्न का उत्तर श्री स्वामी सत्यप्रकाश बहुत सुन्दर दिया करते थे। सर्वज्ञ और सर्वव्यापक प्रभु जैसे आज ज्ञान देता है आदि सृष्टि के ऋषियों को भी वैसे ही दिया था।

थोड़ी सी खाण्ड कहीं रख दो। थोड़े समय में एक कीड़ी आती है फिर उसके पीछे सैकड़ों कीड़ियाँ पंक्ति बना कर आ जाती हैं। आप एक ओर नमक का ढेर लगा दें। एक भी कीड़ी पास नहीं फटकती। अनपढ़ कीड़ियों को खाण्ड व नमक के भेद का ज्ञान किसने करवाया। सुपठित देवियाँ भूल से खीर में खाण्ड की बजाए नमक डाल दिया करती हैं। प्रत्येक पशु, पक्षी, कीट, पतंगे को जन्म के साथ प्रभु जीवनोपयोगी ज्ञान देता है। कारण ये प्राणी एक–दूसरे को कुछ सिखा नहीं सकते।

परमात्मा सबके हृदय में व्यापक है। उसे वाणी की, लेखनी की, कागज़ की आवश्यकता नहीं। वह प्रभु हृदय में विराजमान है। वहीं ज्ञान का प्रकाश करता व प्रेरणा देता है। आज तक उसका एक भी नियम न बदला है, न घिसा है और मिटा है। उसने सृष्टि के आदि में जो वेद ज्ञान दिया वह आज भी मानव कल्याण में सक्षम है, जैसे सृष्टि के आदि में जो सूर्य था, वही आज भी हमारी सेवा कर रहा है। जल, वायु और अग्नि से सम्बन्धित सृष्टि नियम वही हैं। वैसे ही वेद मानव–कल्याण के लिये पूर्ण (दोष रहित) ज्ञान है।

यह बौद्धिक आड़म्बर छोड़िये–आर्यसमाज के विद्वान् सन् १९४७ तक धर्म–रक्षा के लिये परकीय मतों की सब प्रकार की जानकारी तो रखते थे परन्तु उनका मुख्य विषय और उद्देश्य वैदिक धर्म और उसका प्रचार था। कभी सामान्य जानकारी देने के लिये श्री पं. महेशप्रसाद जी मौलवी फाज़िल ने ऋषि दयानन्द से टकराने वाले, सम्पर्क में आये मौलवियों व पादरियों पर कुछ–कुछ लिखा। 'सार्वदेशिक' में ऐसे लेख हम लोग पढ़ा

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

करते थे। अब धर्मप्रचार की वह आग तो है नहीं, किसी से टक्कर लेने का, मैदान में डटने का संघर्ष करने का न साहस है और न हिम्मत है परन्तु पादरियों व मौलवियों के चित्र खोज-खोजकर उन पर लिखा जा रहा है और ऋषि जीवनी में भी ऐसी सामग्री घुसेड़ी जा रही है। यह सब बौद्धिक आडम्बर है। इससे ऋषि मिशन को क्या लाभ?

ठाकुर मुकन्दसिंह, ठाकुर भूपालसिंह, ठाकुर मुन्नासिंह के जीवन पर कभी किसी ने लेख दिया? उनके फोटो खोजने में किसी ने रुचि ली? हमने परोपकारी में स्वराज्य संग्राम में फांसी दण्ड सुनाये जाने वाले एकमेव संन्यासी आर्य विद्वान् स्वामी अनुभवानन्द जी के चित्र का प्रश्न उठाया। हम भी भूल गए कि यह चित्र स्व. ला. गोविन्दराम द्वारा प्रकाशित चित्रावली में है। अभी गत वर्ष मुम्बई में यह चित्रावली किसी ने हमें दिखाई। अब एक आर्य ने परोपकारी में प्रकाशनार्थ यह चित्र उपलब्ध करवा दिया है परन्तु पादरी स्काट और फादर नैहम्या गोरे (पं. नीलकंठ शास्त्री) के चित्रों की आर्यसमाज में बाढ़ आने लगी है। नीलकण्ठ शास्त्री ही था जिसने महाराजा रणजीत सिंह के पुत्र दिलीप सिंह को ईसाई बनाया था। सिख तो उसका सामना न कर पाये। ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाज ने उसकी बोलती बन्द की। यह तथ्य क्या हमारे लोगों ने देशवासियों विशेष रूप से सिखों के सामने रखा?

एक अति उत्साही खोजी ने नैहम्या गोरे का चित्र खोजकर इसे बहुत बड़ी उपलब्धि मानकर गौरव से हमें सूचना दी। उसे ऐसे लगा मानो कि वह नगीना का शास्त्रार्थ जीतकर आया है। हमने उसे बताया, अरे भाई कुशलदेव जी ने हर्मी से लेकर अपने ग्रन्थ में इसे दिया है। हम तो यही चाहते थे कि उनके ग्रन्थ में ऋषि भक्तों व ऋषि मिशन पर सर्वस्व वाकने वालों के चित्र हों, परन्तु वह नहीं माने। उन्होंने रमाबाई, उसके मित्र प्रेमी व पुत्री तक के चित्र दे दिये। आर्यसमाजियों ने इस बौद्धिक आड़म्बर व अन्धे जोश में रमाबाई को माई भगवती, माता सूरज कौर व पं. लेखराम से बड़ा मान लिया। यह आत्महत्या नहीं तो क्या है?

एक ने रमाबाई के माँ-बाप जन्म स्थान की जानकारी की डींग हमारे सामाने मारनी आरम्भ कर दी। हम सुन-सुनकर ऊब गये तो कहा, ठीक है भाई! श्रुतिप्रिय आर्य जी के साथ हमें भी कभी ऋषि के मिशन की सेवा के लिये उस नगर में जाने का अवसर मिला था। न जाने ऐसे लोग हमें संकीर्ण व कट्टरपंथी क्या-क्या कहते होंगे। इनको क्या पता जिस पादरी स्काट का गुणगान करते-करते ये लोग उसे महात्मा नारायण स्वामी, मेहता जैमिनी तथा महात्मा नित्यानन्द से भी बड़ा ऋषि भक्त बताने, बनाने में लगे हैं, उसने बड़ी चतुराई से आर्यसमाज के लिये एक समस्या खड़ी की थी। दूरदर्शी लग्नशील आर्यों ने गोरे पादरियों की उस चाल को भांपकर विफल बना दिया।

एक दर्द भरी कहानी-हम तो नई-नई हदीसें और नये-नये इतिहास को सुन=सुनकर चकित हैं। अभी किसी ने कहीं से सूचना पाकर फोन कर दिया कि परोपकारिणी सभा के एक ग्रन्थ में छपा है कि श्री ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, कोलकाता विश्वविद्यालय के सीनेट हाल की सभा में सम्मिलित तो नहीं थे, परन्तु ऋषि के विरुद्ध दिये गये फ़त्वे पर हस्ताक्षर अवश्य किये। सूचना देने वाले ने किसी नये खोजी के आधार पर सभा के ग्रन्थ में छपे तथ्य को एकदम झुठला दिया।

वैसे तो भैंस के आगे वीणा बजाने जैसी बात थी, परन्तु हमने उस कृपालु को बताया इस बौद्धिक व्यायाम पर बलिहारी! परन्तु परोपकारिणी सभा में तत्कालीन एक पत्र की फाईल में जाकर पढ़ले कि सभा के ग्रन्थ में जो छपा है, इतिहास को वही मान्य है। पत्रिका में उस सभा के होते ही सब वृत्तान्त छप गया था। इससे अधिक उस महापुरुष को क्या कहा जा सकता था।

दस, बीस, पचास स्रोत देखे बिना किसी भी ऐतिहासिक घटना पर अपना निर्णय दे देने से अपनी ही हानि होती है। इतिहास का उपहास उड़ाने जैसी बात होती है।

महात्मा विशनदास जी लताला वाले-लताला में उदासियों का एक बहुत बड़ा डेरा था। इस डेरा ने संस्कृत के कई नामी विद्वान् दिये। श्रीयुत महात्मा बिशनदास (विष्णुदास) डेरा के महन्त एक जाने-माने विद्वान् और पूजनीय साधु थे। विधर्मियों का एक ग्रन्थ पढ़कर यह हिल गये। पं. लेखराम जी के एक ग्रन्थ में उसका युक्ति व प्रमाणों से परिपूर्ण उत्तर पढ़कर विधर्मी होने से बच गये। इन्हीं महात्मा जी की कृपा से आर्यसमाज का महाबलिदानी, संन्यासी, विद्वान्, आचार्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी आर्यसमाज को मिले।

महात्मा जी जालंधर की वैदिक पाठशाला में भी पढ़े। श्री महात्मा मुंशीराम, पं. लेखराम जी दोनों विभूतियों के संग रहे। आगे चलकर स्वामी सर्वानन्द जी भी इनके शिष्य रहे। महाशय कृष्ण, दीवान बद्रीदास, जस्टिस अछरुराम, स्वामी वेदानन्द जी, आचार्य रामदेव जी सब इनको नमन करते थे।

इन महात्मा जी पर गत पचास वर्षों में किसी आधुनिक स्कालर ने एक पैरा भी खोज करके नहीं लिखा। रोमाँ रोलाँ आदि का यशोगान करना आपको भाता है, यह युग का फैशन है, परन्तु जाति में जीवन संचार करने के लिये, ऋषि मिशन की रक्षा के लिये पुण्यात्माओं, समर्पित विभूतियों, वीरों की तपस्या व कुर्बानियों का स्मरण करना, करवाना आवश्यक है।

धर्मेन्द्र जी जिज्ञासु तथा विनीत सेवक उदासियों के अखाड़े में गये। हमें महात्मा विशनदास जी का चित्र वहाँ नहीं मिला। हमारी खोज तब तक चलती रहेगी, जब तक हम सफल नहीं हो जाते।

नई शैली, नई नीति-निर्बल रोगी बालक को सर्दी में स्वैटर, जर्सी, कोट सबकुछ पहनाने से वह बलवान स्वस्थ नहीं

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

हो सकता। शरीर के भीतर बल पैदा करने से व्यक्ति बलवान् बनता है। युवकों एकाग्रता से योग्यता बढ़ाकर सेवा निरन्तर करके नाम कमाना चाहिये। आचार्य, गवेषक, रिसर्च स्कॉलर, राष्ट्रीय विद्वान् आदि कल्पित विशेषण लगाने से कोई आचार्य उदयवीर और मेहता जैमिनि नहीं बन सकता। यह ध्यान रहे।

-वेद सदन, अबोहर।

वैदिक विद्वान् आश्रय केन्द्र प्रारम्भ

आर्यसमाज, अलीगढ़ (उ.प्र.)-नवसम्वत्सर एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस के उपलक्ष में आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द मार्ग (अचल मार्ग) में आयोजित समारोह में दिनांक ११ अप्रैल को उपस्थित भारी जन समूह के मध्य संस्था मन्त्री राजेन्द्र पथिक द्वारा निराश्रित वेद-विद्वानों, प्रचारकों एवं भजनोपदेशकों, जो वयोवृद्ध हों, उनके आवास एवं भोजन की स्थायी व्यवस्था ''आर्यसमाज, अलीगढ़'' द्वारा की गई है। सम्बन्धित वयोवृद्ध विद्वान् भारत के किसी भी क्षेत्र के निवासी हों, सभी आमन्त्रित हैं। **-राजेन्द्र पथिक, मन्त्री, आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग, अलीगढ़, चलभाष-९४१२६७१५५४**

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

नये संस्करण बिक्री हेतु उपलब्ध

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

पुस्तक का नाम	मूल्य
१. दयानन्द ग्रन्थमाला-३ भागों का १ सैट	५५०.००
२. ऋग्वेद भाष्य भाग-५	२५०.००
३. यजुर्वेद भाष्य भाग-२	३५०.००
४. यजुर्वेद भाष्य भाग-३	२५०.००

उपरोक्त पुस्तकें नई छपकर बिक्री हेतु आ गई हैं, जो पाठकगण पुस्तकें मंगाना चाहें, तो कृपया वैदिक पुस्तकालय, केसरगंज, अजमेर से सम्पर्क करें। **-व्यवस्थापक, दूरभाष: ०१४५-२४६०१२०**

मनुष्यों को उचित है कि जैसे विद्वान् लोग ईश्वर, प्राण और बिजुली के गुणों को जान उपासना वा कार्य्यसिद्धि करते हैं, वैसे ही उनको जानकर उपासना और अपने प्रयोजनों को सदा सिद्ध करते रहें।-**महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद भावार्थ-४.३२।**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

॥ ओ३म्॥

योग-साधना शिविर

(दि. १६ से २३ जून २०१३। १६ जून को शाम ४ बजे तक पहुँचना है।)

आपके मन के किसी कोने में साधना करने की इच्छा बीज रूप में अंकुरित हो रही हो, अपने सर्वश्रेष्ठ जीवन को वेद एवं ऋषियों के आदर्शानुकूल ढालना चाहते हों, विधेयात्मक एवं सृजनात्मक जीवन चाहते हों, अपने मन को पवित्र बनाने की इच्छा रखते हों, वैदिक साधना-पद्धति को जानना समझना चाहते हों, वैदिक सिद्धांतों को समझना चाहते हों या अपने को वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में समर्पित करने की अभिलाषा रखते हों तो यह शिविर आपको आपके चिंतन के अनुरूप उचित दिशानिर्देश एवं उत्तम अवसर प्रदान करेगा।

शिविरार्थियों को पूर्ण लाभ मिल सके एतदर्थ अनुशासन में चलना नितांत आवश्यक होगा। शिविर के दिनों में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह का पालन एवं मौन के निर्धारित समय में मौन रहना अनिवार्य होगा। शिविर के पूरे काल में साधक को पत्र दूरभाष आदि किसी भी प्रकार से बाह्य संपर्क निषेध है। ऋषि उद्यान के अंदर ही निवास करना होगा। समाचार-पत्र पढ़ने, आकाशवाणी सुनने, दूरदर्शन देखने की अनुमति नहीं है। धूम्रपान, तम्बाकू या अन्य किसी भी प्रकार के मादक द्रव्य का सेवन निषिद्ध रहेगा।

जो साधक इन नियमों तथा शिविर की दिनचर्या को स्वीकार करें वे मंत्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क ५००-१००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था उपलब्धता व पूर्व सूचना के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बरतन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएं। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएं अन्यथा यहां भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुंचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएं साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जाता है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबंधी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अंतिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, शुभकामनाओं के साथ।

मंत्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४

Web Site :- www.paropkarinisabha.com : मार्ग : **E.mail address:- psabhaa@gmail.com**

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

वैदिक-ध्यान-प्रशिक्षक-प्रशिक्षण शिविर

शिविरार्थी-अनुभव

ऋषि उद्यान में परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित 'वैदिक-ध्यान प्रशिक्षक-प्रशिक्षण शिविर' सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। ११ से १७ अप्रैल, २०१३ तक ७ दिन चलने वाले इस शिविर में देश के विभिन्न प्रान्तों के ५० प्रतिभागियों को वैदिक ध्यान पद्धति का प्रशिक्षण दिया गया। परोपकारिणी सभा द्वारा पूर्व आयोजित 'आर्यसमाज की ध्यान पद्धति' विषयक तीन विद्वत् गोष्ठियों में १५ मिनट की ध्यान पद्धति का जो प्रारूप निर्धारित किया गया था, उसका ही प्रशिक्षण इस शिविर में दिया गया है। प्रशिक्षण के अन्तर्गत भूमिका (ध्यान से पूर्व श्रोताओं को मानसिक सज्जा के लिये आवश्यक निर्देश), ध्यान-पद्धति के प्रत्येक बिन्दु (कुल ९ बिन्दु हैं) पर विस्तृत चर्चा, आसनों का (जो ध्यान के लिए शारीरिक स्थिति बनाने में सहयोगी हैं, उनका) अभ्यास, ध्यान के लाभ, ध्यान का शरीर व मस्तिष्क पर प्रभाव, प्रशिक्षक की क्या योग्यता होनी चाहिये, प्रशिक्षक को किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिये, आत्मा-परमात्मा का वैदिक स्वरूप, त्रैतवाद.....आदि सैद्धान्तिक चर्चा, शंका-समाधान (वैदिक ध्यान-पद्धति सम्बन्धित), प्रशिक्षकों को प्रेरणा, वैदिक-ध्यान का प्रायोगिक अभ्यास....इत्यादि विभिन्न विषयों का समावेश किया गया था।

सभी प्रशिक्षकों की लिखित व प्रायोगिक परीक्षा भी ली गई। जिन्होंने ध्यान की प्रायोगिक प्रस्तुति (परीक्षा) में ८० से ज्यादा अंक प्राप्त किये, उनको उच्च-प्रथम श्रेणी तथा जिन्होंने ६० से ८० तक अंक प्राप्त किये, उनको प्रथम-श्रेणी का प्रमाण-पत्र दिया गया। तदनुसार १० प्रतिभागियों ने उच्च-प्रथम श्रेणी तथा २६ प्रतिभागियों ने प्रथम श्रेणी प्राप्त की।

इस शिविर में स्वा. अमृतानन्द जी, प्रो. धर्मवीर जी, आ. ज्ञानेश्वर जी, श्री तपेन्द्र जी, आ. सत्यजित् जी, आ. आशीष जी, आ. सत्यव्रत जी, आ. शीतल जी, डॉ. उदावत जी ने अध्यापक के रूप में अपनी सेवायें प्रदान की। स्वामी सत्यानन्द जी व डॉ. वीरेन्द्र के साथ-साथ कुछ अध्यापकों ने परीक्षक के रूप में भी अपनी सेवायें प्रदान की।

परोपकारिणी सभा द्वारा प्रमाणित कई वैदिक-ध्यान-प्रशिक्षक समाज में अपनी सेवा देने के लिए उत्सुक हैं। जो कोई भी अपने क्षेत्र में इस वैदिक-ध्यान-पद्धति का प्रशिक्षण दिलवाना चाहते हैं, वे परोपकारिणी सभा से सम्पर्क कर सकते हैं। सभा इन्हीं प्रशिक्षकों के द्वारा सम्बन्धित क्षेत्र में वैदिक-ध्यान प्रशिक्षण की सेवा उपलब्ध करवाने का यत्न करेगी।-**आचार्या शीतल, ऋषि उद्यान, अजमेर।**

शिविर में भाग लेने वाले शिविरार्थियों के अनुभव इस प्रकार हैं-

१. वैयक्तिक जीवन की उन्नति के लिए बड़ी उपयोगी प्रमाणित हुई। **२.** ध्यान की विधि और तकनीक वैज्ञानिक होते हुए भी सरल और आकर्षक है। **३.** आम जनता के लिए सीखने के लिए कोई कठिनाई नहीं होगी। **४.** आचार्यों के प्रयास अत्यन्त प्रशंसनीय और प्रेरणादायक हैं। **५.** कक्षा की सज्जा, माइक्रोफोन अच्छा रहा। **६.** परीक्षा पद्धति उत्साह जनक रही। **७.** प्रमाण-पत्र, फोटो चित्र सी.डी., फोल्डर, नोट के लिए खाता (नोट-बुक), कलम शिविरार्थियों के लिए आकर्षण रहा। **८.** रहना, खाना, स्नानागार आदि अच्छा है। **९.** व्यस्क लोगों को हटा देना क्या उचित न होगा? -**वीरेन्द्रकर, संख्या-२, लालबहादुर कॉलोनी, भुवनेश्वर, ओडिशा-७५१००६**

२. प्रशिक्षण शिविर के कार्यक्रम की रूपरेखा, परोपकारिणी सभा की आवास व्यवस्था, भोजन व्यवस्था उत्कृष्ट श्रेणी की रही। शृंखलाबद्ध पन्द्रह मिनट की ध्यान पद्धति की प्रायोगिक प्रस्तुतियों से ध्यान लगाने में प्रगति हुई। विद्वानों के प्रवचनों को सुनकर कतिपय सिद्धान्तों की स्पष्टता हुई। वैदिक ध्यान पद्धति बहुत ही स्पष्ट है, ऐसा अनुभव ध्यान लगाने के दौरान हुआ। शिविर से अत्यन्त आनन्द की अनुभूति हुई। इस ध्यान पद्धति को अपने आसपास के परिवेश में प्रचारित करने का प्रयास करूँगा। अपनी योग्यता को परिपक्व करने के पश्चात् मैं इसे प्रचारित करने हेतु आपके निर्देशानुसार उपलब्ध रहूँगा।

-सेवक राम आर्य, लखनऊ (उ.प्र.)

३. ईश्वर की कृपा से व आचार्य जी की अनुमति से मुझे ध्यान प्रशिक्षण शिविर में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ। यहाँ आकर मुझे ध्यान करने में सहायक सभी बिन्दुओं की विस्तृत जानकारी प्राप्त हुई। सभी आचार्यों के अथाह प्रयासों से हमें यह ध्यान पद्धति को सीखने का मौका मिला। इनके हम ऋणी रहेंगे। **आगामी योजना**-मैं स्वयं अपनी योग्यता बढ़ाते हुए अपने परिवार, आस-पड़ौस एवं मित्र वर्ग में इस ध्यान-पद्धति का प्रचार-प्रसार करूँगी। -**अंजु शर्मा, अहमदाबाद, गुजरात।**

४. पूज्यनीय आचार्य सत्यजित् जी, सादर नमस्ते, चरण स्पर्श। पूरे शिविर में आपका प्यार, स्नेह और अनुपम मार्गदर्शन मिलता रहा, इसे पाकर हम धन्य हो गए। शिविर की दिनचर्या से लेकर भोजन, कक्षाएँ और ध्यान सिखाने के तरीके आदि

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

सभी अद्वितीय और अनुपम रहे। मैं कोशिश करूँगा कि इस प्रकार के आयोजन में आता रहूँ और आगे भी आपके मार्गदर्शन में नया-नया ज्ञान प्राप्त करता रहूँ।

इससे आगे मेरे पास शब्द ही नहीं है कि मैं इस कार्यक्रम के बारे में कुछ लिखूँ, इसलिए इसे यहीं विराम देता हूँ और कामना करता हूँ कि ईश्वर हम सभी लोगों को अपने उद्देश्य में सफल बनाएँ। **-कैलाश धाकड़, खाचरौद, जिला-उज्जैन, म.प्र.-४५६२२४, चलभाष-०९८२६०९२०२५**

५. ध्यान में विशेष जानकारी प्राप्त हुई, योगाभ्यास में सहायक जानकारी प्राप्त हुई। आगे पारिवारिक स्तर पर ध्यान सिखाने का प्रयत्न करूँगी। अपनी योग्यता को आगे बढ़ाऊँगी। **-सुमन शर्मा, गाँधीधाम, कच्छ।**

६. वैदिक ध्यान शिविर मेरे जीवन की अमूल्य घटना है, यहाँ मुझे मालूम हुआ कि नये साधकों को प्रशिक्षण के लिए विषय वस्तु का सैद्धान्तिक ज्ञान होना जरूरी है। शब्दों का उच्चारण कैसे करें? शब्दों को वाक्यों में कैसे प्रयोग करें? अच्छे प्रशिक्षक में क्या योग्यता होनी चाहिये? व्यवहार काल में कैसे बैठा जाता है? कैसे-बोला जाता है? कैसे ध्यान लगाया जाता है? हम पहले ईश्वर न्यायकारी है, ये सामान्य रूप से लेते थे। अब पता लगा कि अधर्म (पाप) करते हुए ईश्वर याद न भी रहे पर उसके दण्ड को जरूर याद रखें।

भौतिक सुख के लिए हम अधिक से अधिक धन प्राप्ति के लिए विभिन्न ज्ञान प्राप्ति में लगे रहते हैं। इसी प्रकार ईश्वर सुख के लिए अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करना होगा, तप करना होगा। तभी ईश्वर के सुख (आनन्द) को प्राप्त कर सकेंगे। इसके महत्त्व के लिए हमें विवेक से जानना होगा किसका महत्त्व ज्यादा है। **-डॉ. अशोक फंदपुरी, सहारनपुर।**

७. परोपकारिणी सभा में ऋषि-उद्यान में नवसंवत्सर २०७० के अवसर पर वैदिक ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण का आयोजन कर वैदिक धर्म में नये प्राण फूँक दिये हैं। विभिन्न मत-पंथों में बढ़ती भीड़ का मुख्य कारण एक मात्र ध्यान ही है। आर्यसमाज में प्रचलित सन्ध्या अपनी मातृभाषा में न होने के कारण कभी सिर नहीं चढ़ सकी। अधिकतर आर्यजन गायत्री मन्त्र अथवा ओ३म् जप से ही सन्तोष कर लेते हैं। ध्यान के कारण ही आर्यजन दूसरे मत पन्थों विपश्यना, प्रेक्षा आदि में जाकर अपनी आध्यात्मिक प्यास मिटाने का प्रयास करते रहे हैं। अब चूंकि ऋषि परम्परा का ध्यान उपलब्ध है। अत: न केवल आर्यजन इसे अपनायेंगे अपितु अन्य मत-पन्थों के श्रद्धालू भी इधर आयेंगे। **-ब्रह्मपाल, ग्राम-देधनोर, पोस्ट-मच्छरहेड़ी, जिला-सहारनपुर-२४७४५१**

८. आदरणीय आचार्य जी सादर नमस्ते। मेरा शिविर का अनुभव बहुत अच्छा रहा। इसकी प्रशंसा के लिए तथा यहाँ की व्यवस्था और आपकी आत्मीयता का वर्णन कैसे करूँ, कुछ समझ नहीं पा रहा हूँ, ध्यान सिखाने व हर बात को सैद्धान्तिक प्रायोगिक व तार्किक ढंग से प्रस्तुत करने की आपकी एवं सभी विद्वानों की शैली अद्भुत है। साधारण व्यक्ति से लेकर विद्वान् व्यक्ति को संतुष्ट करने की यहाँ के सभी विद्वानों की क्षमता का मैं कायल हूँ। आचार्य आशीष जी, आचार्या शीतल जी व आपकी निरीक्षण क्षमता (त्रुटियों को आँकने की दृष्टि) अत्यन्त सूक्ष्म है। यहाँ की व्यवस्था अति उत्तम रही और वैसे मैं यहाँ की कमियाँ निकालने नहीं आया था, वरन् अपनी कमियों को निकालने आया था। परीक्षा का मुझे कोई भय नहीं था। **आगे की योजना**-मैं अपने क्षेत्र में तो अपने स्तर पर इस पद्धति का प्रचार-प्रसार करूँगा ही, यदि आपका आदेश हुआ तो कहीं भी समय दे सकता हूँ। अप्रैल से जून तक मैं पूर्णत: फ्री रहता हूँ, घर से दूर रहने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है और ना ही मुझे पैसे कमाने की इच्छा है। क्योंकि मैंने शादी नहीं की है। मुझ पर पारिवारिक दायित्व नहीं है, एक छोटा भाई उसका परिवार व माता जी हैं। हम सभी साथ में प्रेम से रहते हैं। मैं घर पर कोचिंग पढ़ाता हूँ। अत: सभा मेरा जब चाहें जहाँ चाहें उपयोग कर सकती है। **सुझाव**-मेरा सुझाव यह है कि आपने जिनको प्रशिक्षण दिया उनकी वार्षिक रिपोर्ट लेनी चाहिए, जिससे ज्ञात हो कि इस कार्य को किसने, कितना प्रचारित-प्रसारित किया। दूसरा सुझाव यह है कि जिनको भी अगले शिविर में बुलावें उनकी योग्यता, आयु व उनकी भावी योजनाओं के बारे में पहले से जानकारी करलें, जिससे उन्हीं लोगों को मौका दिया जाए जो इस क्षेत्र में सक्रिय योगदान दे सकें। तीसरा सुझाव यह है कि मुझे लगता है कि भोजन आदि पर ज्यादा खर्च किया गया है। थोड़ी न्यूनता करके कुछ अधिक बचत की जा सकती थी।

अन्त में आपने मुझे बुलाया, सीखने का अवसर दिया इसके लिए मैं आपका, सभा का व परमात्मा का धन्यवाद करता हूँ व कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। पुन: धन्यवाद।

-नन्दराम सगीतरा, २१ सगीतरा गली, खाचरौद, जिला-उज्जैन, म.प्र.-४५६२२४

९. आचार्य सत्यजित् जी, आपको मेरा नमन। मैं चाहती हूँ कि इस ध्यान पद्धति प्रशिक्षण के लिए हमारे आर्य समाजों तक सूचित पत्र या सूचना भेज दें, तो हमारे लिए समाज में जाकर लोगों को इसके प्रति जागरुक करना सहज हो जाएगा। वरना लोग इसे सामान्य समझकर इस कार्य के लिए मुझे व इस ध्यान विधि दोनों को ही गौण समझेंगे। वैसे मैं मौखिक रूप से समाज में १५ मिनट ध्यान लगाने की बात करूँगी। परन्तु कभी ऐसा ना हो कि समाज वाले मुझे या इस ध्यान पद्धति को महत्त्वहीन समझकर ये सब करने के लिए मुझे मौका ही ना दें। हाँ आपकी सूचना से हम सबको ये लाभ हो सकता है। कृपया मेरी बात पर गौर कीजिए। **-सुमित्रा आर्या, आर्यसमाज सैक्टर-१४, सोनीपत, हरियाणा।**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

१०. परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान, अजमेर में नव संवत्सर चैत्र शुक्ल (१-७), २०७० में आयोजित निशुल्क वैदिक ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर-१ में भाग लेकर अनुभव हुआ कि वेदानुयायियों के लिए समय ने एक क्रान्तिकारी दस्तक दी है। यह एक गम्भीर प्रशिक्षण था, जो गम्भीर व्यक्तित्व के धनी पूज्य स्वामी अमृतानन्द जी, आचार्य ज्ञानेश्वर जी, आचार्य सत्यजित् जी, आचार्य आशीष जी, आचार्य सत्यव्रत जी, आचार्या शीतल जी आदि द्वारा छः दिन तक शिविरार्थियों की कक्षाएँ लेकर चलाया गया। इन महापुरुषों का एक ही लक्ष्य के लिए एक ही वेदि पर दर्शन मेरे लिए दुर्लभ अवसर था। मेरे विचार से आर्यसमाज के छठे नियम को दृष्टिगत करते हुए शारीरिक रूप से सक्षम एवं आत्मिक रूप से जागृति प्रत्येक वानप्रस्थी एवं संन्यासी को यह प्रशिक्षक सामाजिक उन्नति के लिए दिया जाना चाहिए। मेरा यह भी मानना है कि प्रत्येक 'वैदिक ध्यान प्रशिक्षक' सर्वप्रथम इस पवित्र कार्य को स्वयं अपने परिवार से प्रारम्भ करे, तो इससे अभ्यास में परिपक्वता आने के साथ-साथ गली-मुहल्ले में भी प्रकाश पहुँच अधिक बड़ा क्षेत्र ग्रहण कर लेगा। **-श्यामसिंह आर्य, ग्राम व डा.-उमाही कलाँ, जनपद-सहारनपुर, चलभाष-०९६३९८८५४३२**

११. नमस्ते जी, ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर में भाग लेने से मुझे अपने जीवन से सम्बन्धित, ध्यान से सम्बन्धित बहुत से अनुभव, प्रेरणा, जागरुकता प्राप्त हुई। इन सबके लिए ईश्वर तथा आप सब आचार्य महानुभावों का, ब्रह्मचारीगण, सेवकों तथा परोपकारिणी सभा का हृदय से धन्यवाद। बार-बार नमस्कार करता हूँ। **अनुभव-१.** मुझे अपने जीवन में ध्यान की गम्भीरता का अनुभव हुआ। यदि मैं अपने जीवन में, दिनचर्या में, ध्यान को जोड़ दूँ, तो मेरा प्रत्येक कार्य अच्छा, ठीक-ठीक तथा योग्यता बढ़ाने वाला होगा। **२.** यदि मैं अपनी दृष्टि दूसरों की बुराईयों पर अधिक न डालकर स्वयं के दुर्गुणों, बुराईयों को देखूँ, तो जीवन में शीघ्र ही सफलता प्राप्त हो सकती है। **३.** प्रत्याहार तथा ध्यान आदि गम्भीर विषयों का सरलता से समझ में आना। **४.** वैदिक ध्यान पद्धति तथा अन्य विपश्यना आदि ध्यान पद्धतियों में अन्तर समझकर वैदिक ध्यान पद्धति में ही लाभ अर्थात् जीवन की सफलता नजर आना। **५.** मन में आनन्द, उत्साह तथा समाज, राष्ट्र के लिए कार्य करने की भावना का बढ़ना। **६.** समाज, राष्ट्र से ऐसे धार्मिक सज्जन पुरुष जो शान्त, निर्मल, चरित्रवान हैं उनको ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर में भाग लेने के लिए प्रेरणा, उत्साह बढ़ाकर प्रशिक्षक बनने के लिए प्रेरित करना। **७.** परिवार को सुधारने के लिए, परिवार के बड़े लोगों माता-पिता, पति-पत्नी को ध्यान सीखने के लिए जागरुक करना, ध्यान के अधिक से अधिक लाभ बताकर। क्योंकि यदि परिवार के बड़े लोग सुधरेंगे, तो बच्चों पर उसका अधिक प्रभाव पड़ेगा। **८.** विद्यालयों में अध्यापकों तथा सीनियर विद्यार्थियों को अधिक प्रेरित करना ताकि जूनियर विद्यार्थी सीनियरों को देख-देखकर अपने जीवन को सुधारें, स्कूल में ध्यान परम्परा चालू करवाना। **९.** प्राइवेट आदि स्कूलों में ध्यान की परम्परा को बढ़ाने के लिए वहाँ के संस्थापक को जागरुक करना। **१०.** मैं परमपिता परमात्मा तथा परोपकारिणी सभा से भी हाथ जोड़कर चरण स्पर्श कर प्रार्थना करता हूँ कि भविष्य में भी ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर चलते रहें। धन्यवाद।-**ब्रह्मचारी ओमदेवः, दयानन्द मठ, आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा, रोहतक, दूरभाष-७३५७९४३४४१**

१२. आदरणीय विद्वत्जन मातृशक्ति/धर्मप्रेमी सज्जनों एवं ब्रह्मचारीगण। परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित इस प्रशिक्षण शिविर में आकर मैं स्वयं को धन्य मान रहा हूँ। यहाँ मेरा दूसरी बार आगमन हुआ है। पहली बार आने के बाद से ही यहाँ के प्रति मन में एक खिंचाव लग गया था। जो ईश्वर कृपा से पूरा हुआ। यह वैदिक-ध्यान पद्धति समाज के हर वर्ग और सम्प्रदाय को आकर्षित और प्रभावित करेगी। काफी प्रयत्नों से तैयार की गयी यह ध्यान पद्धति समाज को एक नई दिशा और ऊर्जा प्रदान करेगी। अपने समाज में, आसपास के विद्यालयों में और औद्योगिक क्षेत्र व कार्यालयों में इस ध्यान पद्धति का प्रचार-प्रसार करूँगा।

आप सभी विद्वज्जनों ने काफी पुरुषार्थ व परिश्रम से हमें प्रशिक्षित किया। मैं इस त्यागमय पुरुषार्थ को नमन करता हूँ। ठहरने व भोजनादि संबंधित व्यवस्थाएँ भी काफी सराहनीय हैं। इसके लिए पूरे परोपकारी परिवार के प्रति हम आभारी हैं। ईश्वर से प्रार्थना है कि यह परोपकारी परिवार दिन-प्रतिदिन पुष्पित और पल्लवित होता रहे, जिसका लाभ समाज और राष्ट्र को मिलता रहे। **-गणेश प्रसाद सिंह, १२-ए, श्रीराम कॉलोनी, गूजरखेड़ा, पो-महू, जि-इन्दौर, म.प्र.-४५३४४१, चलभाष-०९९९३६६१०१८**

१३. ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर में प्रशिक्षण लिया जो कि बहुत प्रभावशाली तथा अच्छा रहा। वैदिक ध्यान पद्धति बहुत ही अच्छी ध्यान पद्धति है। अब इसके बाद मैं इसे अपने सामर्थ्य अनुसार दूसरों को भी सिखाऊँगा। मुझे व्यक्तिगत बहुत अच्छा अनुभव हुआ जो कि शब्दों में बताना मुश्किल है। शिविर में आचार्यों, जो कि बहुत विद्वान हैं, उन्होंने बहुत अच्छा व्यवस्थित एवं सरल भाषा में समझाकर प्रशिक्षण दिया। मैं सभी आचार्यों एवं अन्य विद्वानों का जिन्होंने अनमोल समय देकर हमें प्रशिक्षण दिया उनका हमेशा कृतज्ञ रहूँगा। मैं चाहूँगा कि ईश्वर की कृपा से ऐसे ही वैदिक शिक्षा तथा विद्वानों का आशीर्वाद मिलता रहे। ईश्वर का बहुत-बहुत धन्यवाद एवं कृतज्ञोस्मि। शिविर की रहने व भोजन की व्यवस्था बहुत ही अच्छी रही। सभी कर्मचारी एवं

शेष पृष्ठ २७ पर.....

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

वेदों की ओर-एक कदम और

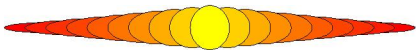

-आचार्य दार्शनेय लोकेश

श्री मोहन कृति आर्ष तिथि पत्रक के प्रकाशन से अब तक आप सभी पाठक अवश्य ही अवगत हो चुके होंगे। पत्रक का संवत् २०७० का अंक प्रकाशित हो चुका है। अपेक्षा है कि विद्वज्जन, पुरोहित वर्ग एवं अधिसंख्यक बुद्धिजीवी इस पत्रक की (वैदिक पंचांग) एक प्रति मँगवाकर इसका अवलोकन अवश्य करेंगे। वेद एवं वैदिक संस्कृति के अनुरागी जनों पर इतना तो विश्वास किया ही जा सकता है कि वे इस क्रान्तिकारी प्रयास के महत्त्व को समझते हुए अपनी उपयोगी सम्मति से अवश्य अवगत करायेंगे।

इस लघु लेख के माध्यम से हम एक प्रेरक प्रश्न करना चाहते हैं कि क्या आपने कलैण्डर रिफार्म कमेटी की रिपोर्ट पढ़ी है? यदि नहीं तो मेरी मानिये, सब कुछ छोड़कर सबसे पहिले इस रिपोर्ट की प्रति प्राप्त कीजिये और इसका अध्ययन कीजिये और समझिये कि वैदिक पंचांग के सन्दर्भ का शास्त्रीय और यथार्थ सत्य क्या है?

इस शास्त्रीय सत्य को समझने के लिये प्रस्तुत है निम्नलिखित अतिमहत्त्वपूर्ण बिन्दु-

-प्रकृतितः उत्तरायण या मकर संक्रान्ति अथवा दक्षिणायन या कर्क संक्रान्ति 'परमक्रान्ति' जनित एक ही दिन के विषय भेद से दो भिन्न नाम हैं। ठीक ऐसे ही 'शून्य क्रान्ति' जनित वसन्त सम्पात या वैशाखी तथा शरद सम्पात या कार्तिक संक्रान्ति भी अलग-अलग नहीं अपितु एक ही दिन के दो अलग-अलग नाम हैं। ये चारों दिन ही आधार हैं किसी भी वैदिक, वास्तविक और सिद्धान्त सम्मत पंचांग या शुद्धता से कहा जाये तो एक आर्ष तिथि पत्रक के।

-कोई भी दो नक्षत्र आपस में समान नहीं है और ना ही एक भी नक्षत्र १३ अंश २० कला का ही है। खेद तो इस बात का है कि यह सत्य बड़े-बड़े ज्योतिर्विदों के संज्ञान तक में नहीं है। सारे ही लोगों के द्वारा असत्य का गतानुगतिक परम्परा के रूप में पालन होता चला आ रहा है।

-स्पष्ट करना जरूरी है कि चित्रा नक्षत्र पूरे एक अंश का भी नहीं है, जबकि अभिजित नक्षत्र ६ अंश से भी अधिक का और एक पृथक् और स्वतन्त्र नक्षत्र है। देखें, पुष्य नक्षत्र ३ अंश ३६ कला का तो आश्लेषा नक्षत्र १७ अंश ३० कला के लगभग का है तथा ऐसे में नक्षत्रों को समान चार चरणों से देना और नवांश आदि विभाजनों में अभिव्यक्त करना तथा **अवहड़क चक्र** (जिसके आधार पर तथाकथित राशि नाम और जातक के गण नाडी आदि निर्धारित किये जाते हैं) ये सब महज एक प्रपंच के सिवाय अधिक कुछ भी नहीं रह जाते। इस आधार पर देखा जाये तो द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर जैसे मुहुर्त योगों का भी कोई गणितीय महत्त्व नहीं है।

-विंशोत्तरी आदि दशाओं (१२० या १०८ आदि वर्षों) का भी कोई गणितीय आधार नहीं है। अगर है, और भारत भर के किसी भी ज्योतिर्विद को उसकी जानकारी भी है तो, हम उनका सादर आह्वान करते हैं कि कृपया हमें भी सोपपत्तिक रूप से यह गणना अवगत करायें।

-इसके साथ ही आपको हमें आगाह करना है कि सूर्य-चन्द्रादि की ६ या १० वर्षों की दशा अवधि निहित करना भी नितान्त कल्पना प्रसूत है। वैज्ञानिक विचारों से सर्वथा अपरिचित तथ्यों पर देखते हुये भी तथाकथित ज्योतिर्विद, ज्योतिष नाम की लपेट में फलित ज्योतिष को विज्ञान करते हैं। ज्ञातव्य है कि गणितीय आधारों से हटकर केवल कल्पना प्रसूत स्वीकृतियों पर ज्योतिष कभी भी विज्ञान की संज्ञा या हैसियत प्राप्त नहीं कर सकता।

-सत्ताइस योगों तथा चौदह करणों की गगन में कोई स्थिति या अभिज्ञा नहीं है। अस्तु इनको तिथि पत्रक (तथाकथित पञ्चांग) में शामिल करने का भी कोई औचित्य नहीं है।

-सायन नाम से जानी गई स्थितियाँ ही वास्तव में ग्रहों की दृक्तुल्य स्थितियाँ हैं। अज्ञानता और असत्य की हद तो यह है कि इन स्थितियों में से 'अयनांश' नामक 'विषाणु' भाग को घटाकर विकृत स्थिति को लेकर पञ्चांग का आधार लिया जाता है।

-परिणाम यह है कि आज सारे ही पञ्चांग ऋतु असम्बद्ध, गलत, भ्रामक और अवैज्ञानिक हैं तथा भोली-भाली धर्मपरायण जनता को अशुद्ध तिथियों में ही निर्धारित व्रत-पर्व-त्योहारों को मनाने हेतु विवश किये हुए हैं।

-गणित ही नहीं प्रत्यक्ष और सूर्य सिद्धान्त (देखें ३/४६-४८) के प्रमाण से पृथ्वीवासियों के लिये स्थानीय क्षितिज पर उदित हो रहा लग्न कभी भी निरयन नहीं हो सकता। क्रान्ति बिन्दु होने से और उसी पथ पर अवस्थित होने से सूर्य, राहू-केतु की निरयन कल्पना ही निरर्थक है..... फिर चन्द्र, मंगलादि भी.....?

-वेद में सौर और चान्द्र दोनों ही प्रकार से मधु माधवादि नाम मास क्रम हेतु दिये हुए हैं। ये मास छः ऋतुओं में तथा ऋतुएँ दो अयनों में विस्तृत की गई हैं। छः ऋतुएँ, दो अयन व दो सम्पात बिन्दुओं से नियमित की गई हैं। सम्पात बिन्दु वसन्त अथवा शरद् ऋतु के मध्य बिन्दु, दक्षिणायन ग्रीष्म ऋतु की पूर्ति तथा वर्षा ऋतु के आरम्भ का एवं उत्तरायण हेमन्त ऋतु

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

की पूर्ति व शिशिर ऋतु का आरम्भ करता है। आवश्यक तौर पर ये बिन्दु सक्रान्तियों के बिन्दु भी हैं। इन तथ्यों को स्पष्ट करने वाला पञ्चांग ही वैदिक पञ्चांग है। अस्तु आज जब ''वेदों की ओर लौट चलें'' का नारा कुछ सन्त-सत्पुरुषों की कृपा से गति पा रहा है तो ऐसे में हमारा सांस्कृतिक दायित्व है कि हम मधु, माधव, शुक्र, शुचि, नभ, नभस्य, ईष, ऊर्ज, सहः, सहस्य, तपः, एवं तपस्य, इन बारह वैदिक महीनों को रखते हुए पञ्चांग को वैदिक वैशिष्ट्य प्रदान करें।

-कुछ लोग ये भ्रम पाले हुए हैं कि चन्द्रमा की भी ऋतुएँ होती हैं। वास्तव में ऋतुएँ तो केवल सूर्य से ही सम्भव है और यही वैदिक एवं शास्त्रीय प्रमाण भी है ''**आदित्यस्त्वेवसर्वर्तवः।**'' चन्द्रमा ऋतु बना नहीं सकता क्योंकि वह दिन और रात्रि का कारक नहीं है। चन्द्रमा नहीं होगा तो भी ऋतु चक्र काम करेगा, दिन-रात्रि, मास, अयन व वर्ष भी यथावत् होते रहेंगे। चन्द्रमा के न होने पर केवल चान्द्र तिथियाँ, शुक्ल एवं कृष्ण पक्ष, राहू-केतु तथा ग्रहणादि नहीं होंगे। अस्तु चन्द्रमा से ऋतुओं की कल्पना निराधार है इसीलिये संक्रान्तियों से जोड़कर सौर मास एवं उन सौर मासों को जोड़कर ही शुक्लादि क्रम से चान्द्रमासों को रखना और तदनुसार ही अधिमास आदि को संयोजित करना ही वैदिक पञ्चांग की अनिवार्यता है।

-कुछ लोग यह भ्रम भी पाले हुए हैं कि हमारे त्यौहार चान्द्र तिथियों पर आश्रित हैं और सौर तिथियों पर कोई १० त्यौहार भी नहीं गिना सकता। यह बात इसलिये भी हास्यास्पद है कि चन्द्रमा पर आधारित तिथि आदि सारे गणितीय तथ्य तो सौर पर आधारित हैं। शास्त्र वचन है, कि ''**दिविसोमा अधिश्रितः**'' (अथर्व वेद १४/०१/०१)। अस्तु यह कहना कि व्रत पर्वादि चान्द्र तिथियों के आधार पर ही नियत हैं और उनमें सौर मासों का कोई अर्थ नहीं है, एक गलत कथन है और ठीक ऐसा ही है जैसा कि यह कहना कि सूर्य परिभ्रमणशील है पृथ्वी नहीं। **सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च** अर्थात् सूर्य ही जगत की आत्मा है। सूर्य के अतिरिक्त सभी कुछ शरीर है।

-महासचिव, अखिल भारतीय पञ्चांग सुधार समिति, सी-२७६, गामा-१, ग्रेटर नोएडा, गौतम बुद्ध नगर (उ.प्र.), दूरभाष-०१२०-४२७१४१०

सत्यार्थप्रकाश सम्बन्धी सुझाव विषयक विज्ञप्ति

परोपकारिणी सभा द्वारा सन् १९९२ में संशोधित सत्यार्थप्रकाश के रूप में जब ३७वां संस्करण प्रकाशित हुआ तो उससे पूर्व 'परोपकारी' पत्रिका के सन् १९८७ के अक्टूबर-नवम्बर अंक में एक सूचना प्रकाशित करके उसके लिए सभी आर्यजनों से सुझाव मांगे गये थे, किन्तु तब किसी भी व्यक्ति का कोई सुझाव प्राप्त नहीं हुआ था। उसके उपरान्त ही परोपकारिणी सभा ने औचित्य के आधार पर उस संस्करण का प्रकाशन करने का निर्णय लिया था।

परोपकारिणी सभा आगामी संस्करण के प्रकाशन से पूर्व विद्वानों से व स्वाध्यायी आर्यजनों से सत्यार्थप्रकाश के सम्पादन के विषय में पुनः लिखित सुझाव आमन्त्रित करती है। **सुझाव तर्क, प्रमाण और तथ्यों पर आधारित तथा संक्षिप्त होने चाहिएं।** परोपकारिणी सभा आवश्यकता होने पर विशेषज्ञ व्यक्तियों को संवाद हेतु भी सादर आमन्त्रित करेगी। उनकी दक्षिणा आदि का समस्त व्यय सभा वहन करेगी।

सभी आर्यजनों से अनुरोध है कि वे अपने सुझाव परोपकारिणी सभा को यथाशीघ्र प्रेषित करें।

डॉ. वेदपाल (संयोजक)
चलभाष-०९८३७३७७९३८

सूचना

परोपकारी पत्रिका अपने लेख, कविताओं, प्रतिक्रियाओं, पाठकों के विचार, विज्ञप्ति के लिए आप लेखक-महानुभावों से अनुग्रहित होती रही है। आप सभी लेखक-महानुभावों से निवेदन है कि अपने लेख, प्रतिक्रिया, विचार, सुझाव, सूचना इत्यादि कुछ भी सामग्री, जो प्रकाशनार्थ भेजी जा रही है उसे मुद्रित कराकर, उसका प्रूफ-संशोधन कर ही भेजने की कृपा करें। जो महानुभाव अपनी प्रतिक्रिया पोस्टकार्ड में भेजना चाहते हैं, वे स्पष्ट, सुपाठ्य लिपि में लिखकर अथवा लिखवाकर ही भेजें। **-सम्पादक**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

मीमांसा दर्शन-एक भाषाबोधक शास्त्र

-वेदनिष्ठः

ऋषि उद्यान में पूज्य आचार्य श्री सत्यजित् जी के चरणों में बैठकर, लगभग सवा दो वर्ष से हम लोग मीमांसा दर्शन का अध्ययन कर रहे थे। उसकी कुछ बातें प्रस्तुत हैं। अन्य दर्शनों की अपेक्षा मीमांसा दर्शन का पठन-पाठन आर्यसमाज में नहीं जैसा है। जिसके अनेक कारण हो सकते हैं, उनमें से दो कारण मुख्य लगते हैं। **पहला**-जहाँ दर्शनों की कुल सूत्र-संख्या २११६ हैं, वहाँ अकेले मीमांसा दर्शन की सूत्र-संख्या २७२१ है अर्थात् यह षड् दर्शन में सबसे बड़ा है और इसके पठन-पाठन में सर्वाधिक समय लगता है। **दूसरा**-यह माना जाता है कि यह ग्रन्थ तो कर्मकाण्ड से भरा है। कहते हैं जिसको कर्मकाण्ड का ज्ञान लेना हो तो उसे इसको पढ़ना चाहिए। मीमांसा विषयक यह सामान्य जनश्रुति है। कई बार वस्तु के स्वरूप के 'होने और मानने' में अन्तर होता है। मीमांसा दर्शन को पढ़ते हुए यह बोध होता है कि यह एक वाक्य शास्त्र अथवा वाक्यार्थ बोध का शास्त्र है। वाक्य के ठीक अर्थ तक पहुँचाने में यह ग्रन्थ हमारी सहायता करता है। हो सकता है मीमांसा भाष्यकार शबर स्वामी का समय कर्मकाण्ड का होने से उन्होंने सूत्रार्थ को समझाने के लिए कर्मकाण्ड के उदाहरण प्रस्तुत किये। जिस से उस समय के लोगों को समझने-समझाने में सरलता रही हो। वर्तमान में उस कर्मकाण्ड का प्रचलन अत्यल्प होने से समझने में थोड़ा कठिन सा प्रतीत होता है, विशेषकर हम आर्यसमाजियों को। महर्षि दयानन्द जी ने मीमांसा का 'व्यासभाष्य' पढ़ने को लिखा है। किन्तु लगता है 'व्यासभाष्य' महर्षि के समय भी उपलब्ध न था, जिस कारण महर्षि भी शबरमुनि कृत भाष्य को रखते थे। जो इस समय 'परोपकारिणी सभा' में सुरक्षित है। मीमांसा दर्शन को कर्मकाण्ड से युक्त समझकर न पढ़ना बुद्धिमत्ता नहीं होगी, वाक्यार्थ बोध हेतु यह अवश्यमेव पठनीय है। जैसे व्याकरण ग्रन्थ में एक उदाहरण आता है-'ग्रामं गच्छन् वृक्षमूलानि उपसर्पति।' अर्थात्-गाँव को जाता हुआ वृक्ष की जड़ों को छूता है। यहाँ उद्देश्य गाँव को जाना है, परन्तु जाते समय वृक्ष के मूल को छूता जा रहा है। मुख्य कर्म है, गाँव को जाना, गौण कर्म है वृक्ष मूल को छूना। वैसे यहाँ मीमांसा शास्त्र में प्रतीत होता है पहुँचाना चाहते हैं वाक्यार्थ बोध तक, किन्तु उदाहरण कर्मकाण्ड के हैं।

वाक्यार्थ बोध के लिए वाक्य में मुख्यतया विधि और अनुवाद देखे जाते हैं। विधि-नई बात को बताना, अनुवाद-पुनः कथन। वाक्य में विधि की प्रधानता और अनुवाद की गौणता रहती है। विधि को जैसा पढ़ा गया है वैसा ही ग्रहण करना होता है, किन्तु अनुवाद में यह नियम नहीं लगता कि उसका भी ज्यूँ का त्यूँ ग्रहण होवे। विधि-अनुवाद को लेते हुए कर्मकाण्ड के उदाहरण से वाक्यार्थ बोध हेतु एक उदाहरण प्रस्तुत है-'ग्रहं सम्मार्ष्टि' ग्रहों को साफ करना है। [सोमयाग आदि में सोमरस रखने हेतु जो पात्र हाते हैं उन्हें 'ग्रह' कहा जाता है।] यहाँ 'ग्रहम्' कर्म का अनुवाद, और 'सम्मार्ष्टि' क्रिया की विधि है। ग्रह का अनुवाद होने से इसके एकवचन होते हुए भी इससे अनेक ग्रह लिये जाते हैं। तो अर्थ होगा। 'अनेक ग्रहों को साफ करता है।' जो प्रक्रिया के अनुसार ठीक ही है। सोमरस अनेक ग्रहों में भरते समय अनेकों में रस चिपट जाता है, जिसको बाद में साफ किया जाता है। यदि यहाँ 'ग्रहं' की विधि माने तो-'ग्रहं' में कर्मत्व और एकवचन होने से एक ही ग्रह लिया जा सकता है। जिससे अर्थ करना होगा-'एक ही ग्रह को साफ करता है'। जिससे प्रक्रिया में अनर्थ होगा। इस प्रकार वाक्य में विधि और अनुवाद की महत्ता को समझा जा सकता है। जो मीमांसा दर्शन सम्यग्तया स्पष्ट करता है।

इस विधि-अनुवाद को हम अपने उदाहरण से समझने का प्रयास करते हैं। महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के तृतीय नियम किया है-''वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।'' यहाँ हमें सामान्यतया-'वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है' और 'सब सत्यविद्याओं का पुस्तक वेद है' इन दो वाक्यों में अन्तर नहीं लगता है। हम दोनों को समान कहेंगे। जो कि ठीक नहीं है। महर्षि नियम बनाते हुए यह बता रहे हैं कि यहाँ 'वेद' का अनुवाद और 'सब सत्यविद्याओं' की विधि है। अर्थात् वेद में सब सत्यविद्या ही है, अन्य कुछ अर्थात् असत्यविद्या नहीं। इस वाक्य में-'वेद में क्या है' इस प्रश्न का उत्तर दिया जा रहा है। यदि हम इसको-'सब सत्यविद्याओं का पुस्तक वेद है' ऐसा पढें तो यह वाक्य 'सब सत्यविद्या कहाँ है?' इस प्रश्न का उत्तर होगा। यहाँ सब सत्यविद्या का अनुवाद और वेद की विधि होगी। वाक्यार्थ में अनुवाद का ज्यूँ का त्यूँ ग्रहण नहीं होता, विधि का होता है। यहाँ इस वाक्य का वाक्यार्थ बोध होगा-सब सत्यविद्या के साथ-साथ अन्य भी अर्थात् सत्यविद्या से भिन्न असत्यविद्या भी वेद में है। जो ठीक नहीं है। अगले वाक्य में पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना की विधि है। अर्थात् वेद को छूना, पूजना, आरतियाँ उतारना आदि धर्म नहीं है, उसका पठन-पाठन और श्रवण-श्रावण धर्म है, उसी की विधि महर्षि कर रहे हैं।

इसी प्रकार एक अन्य उदाहरण है, आर्यसमाज का छठा नियम-''संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।'' इस नियम की व्याख्या करते हुए प्रायः कहा जाता है कि

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

'व्यक्ति सर्वप्रथम अपनी शारीरिक उन्नति करे, उसके बाद आत्मिक तद्नन्तर सामाजिक कार्य।' ऐसा प्रत्येक व्यक्ति को करना चाहिए। इसमें कोई दोष भी नहीं है, किन्तु यह अर्थ इस नियम से सिद्ध नहीं हो रहा। इस नियम में-इस समाज (अर्थात् आर्यसमाज) का संसार के प्रति क्या कर्त्तव्यकर्म है, इस प्रश्न का उत्तर दिया जा रहा है। यहाँ संसार, इस समाज आदि का अनुवाद और उपकार (अर्थात् शारीरिक-आत्मिक और सामाजिक उन्नति) की विधि है। अर्थात् इस आर्यसमाज को संसार में ऐसा कार्य करना चाहिए जिससे संसार की शारीरिक उन्नति हो, आत्मिक उन्नति हो और सामाजिक उन्नति हो। यह एक व्यक्ति का कर्त्तव्यकर्म न होकर सम्पूर्ण समाज का कार्य है। इस प्रकार मीमांसा ग्रन्थ से हम वाक्य के ठीक अर्थ तक पहुँच सकते हैं।

मीमांसा शास्त्र में ऐसे अनेक सिद्धान्त हमें दिखाई देते हैं। जो आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द के अनुकूल और पौराणिकों के विपरीत पड़ते हैं जैसे-काल्पनिक शरीरधारी देवता का न होना, नारी और शूद्र को यज्ञाधिकार, ३३ देवता आदि। आर्यसमाज ४ वेद को मानता है किन्तु कोई कहे की वेद ३ हैं तो उसका ठीक उत्तर क्या हो सकता है? इसका उत्तर मीमांसा दर्शन में है, जो आर्यसमाज के सिद्धान्त के विपरीत नहीं है। लोकोपयोगी अनेक न्याय हैं-जैसे स्थूणानिम्बनन न्याय, मयूरनृत्यन्याय, छत्री न्याय आदि। कुछ सिद्धान्त और कुछ हास्य प्रहेलिका भी देखे जाते हैं जैसे-

(क) एवमयं पुरुषो वेदः.....न एवमयमर्थः।
यह पुरुष इस प्रकार जानता है, किन्तु ऐसा है नहीं।
(ख) अर्थिनो हि अभियुक्ता भवन्ति।
चाहने वाले प्रयत्नशील होते हैं।
(ग) गौर्न पदा स्प्रष्टव्या।
गाय को पाँव से नहीं मारना चाहिए।
(घ) कार्षापणे दीयमाने पादोऽपि दत्तो भवति।
एक रुपये दे दिये तो पच्चीस पैसे तो दे ही दिये।
(ङ) न हि काकिन्यां नष्टायां तदन्वेषणं कार्षापणेन क्रियते। एक कौड़ी खो जाये तो उसकी खोज एक रुपये से नहीं की जाती।
(च) न च भिक्षुका भिक्षुकादाकाङ्क्षन्ति।
एक भिखारी दूसरे भिखारी से दान की अपेक्षा नहीं करता।
(छ) यस्य नास्ति पुत्रो न तस्य पुत्रस्य क्रीडनकानि क्रियन्ते। जिसका पुत्र नहीं, उसको खिलौना क्या खरीदना?
(ज) यो हि पाषाणान् भक्षयति, ईषत्करास्तस्य मुद्गशष्कुल्यः। जो पत्थर खा जाये उसके लिए मूँग की पूरी क्या?

अन्त में परमपिता परमात्मा का कोटिशः धन्यवाद कि आपकी कृपा से मैं श्रद्धेय आचार्य सत्यजित् जी के सम्पर्क में आया व आचार्य जी की प्रेरणा पाकर इस दर्शन का अध्ययन कर पाया। पुनः आचार्य जी का कोटिशः धन्यवाद जिनकी कृपा से, जिनके रोचक अध्यापन से मैं इस बृहद-दर्शन को अपनी स्मृति पटल पर दृढ़ अंकित करा सका। अध्ययन के दौरान सभी (भोजन, आवास आदि) आवश्यकताओं की सहजता से पूर्ति करने वाली महर्षि स्वामी दयानन्द की उत्तराधिकारिणी 'परोपकारिणी सभा' भी धन्यवाद की पात्र है। ओम् शम्

-ऋषि उद्यान, अजमेर।

किशोर एवं किशोरियों के संस्कार निर्माण का सुनहरा अवसर

२८ मई से ०४ जून २०१३ (छात्रों के लिए), ०६ से १३ जून २०१३ (छात्राओं के लिए)

स्थान-ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर।

आपको सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि परोपकारिणी सभा एवं आर्यवीर-दल, अजमेर सम्भाग द्वारा जूड़ो-कराटे, आसन-प्राणायाम, संस्कार निर्माण, लाठी, भाला, तलवार, छुरिका, दण्ड-बैठक, सूर्य-नमस्कार, यौगिक क्रियाएँ एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें उच्च कोटि के विद्वानों द्वारा नैतिक, चारित्रिक व बौद्धिक प्रशिक्षण भी दिया जायेगा। शिविर शुल्क-४०० रु. प्रति व्यक्ति। कृपया अपनी प्रविष्टियाँ २७ मई तक (छात्र) तथा ०५ जून तक (छात्राओं) की अतिशीघ्र भेजने की कृपा करें।

नोट : छात्राओं को आत्मरक्षा का विशेष प्रशिक्षण दिया जायेगा।

अपील एवं निवेदन - इस विशाल शिविर के प्रबन्ध, भोजन, आवास, मानदेय, प्रचार आदि पर काफी खर्चा होता है, जिसकी पूर्ति आप और हम सबको मिलकर करनी है। अतः आप सभी दान प्रेमी सज्जनों, संस्थाओं व आर्यसमाज से निवेदन है कि अपनी सहायता राशि नकद, चैक, ड्राफ्ट अथवा धनादेश आदि द्वारा मंत्री परोपकारिणी सभा, अजमेर के पते पर भेजें।

सम्पर्क :- ९४१४४३६०३१, ८७६४३८२९८०, ०१४५-२४३१३३१,०१४५-२४६०१६४ (सभा)
यतीन्द्र शास्त्री, व्यायामाचार्य, अजमेर संभाग- संचालक, आर्यवीर-दल, राज.।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रात: एवं सायं दैनिक यज्ञ– प्रवचन, वेद–पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नि:शुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का नि:शुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा नि:शुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ नि:शुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में नि:शुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी–छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

अतिथि यज्ञ के होता
(१६ से ३० अप्रैल २०१३ तक)

१. श्रेयस्कर चौधरी व ओरेना चौधरी इन्दौर, २. श्रेयासी चौधरी, इन्दौर, ३. सुविज्ञा चौधरी, इन्दौर, ४. एस.के. चौधरी व सुषमा चौधरी, इन्दौर, ५. शिवकुमार चौधरी, इन्दौर, ६. श्रुति चौधरी, इन्दौर, ७. वीना त्यागी, नई दिल्ली, ८. अनव अग्रवाल, इन्दौर, ९. रवि अग्रवाल, इन्दौर, १०. ऋषा अग्रवाल, इन्दौर, ११. अनन्या अग्रवाल, इन्दौर, १२. सुषमा चौधरी, इन्दौर, १३. प्रेरणा चौधरी, इन्दौर, १४. जैनिथ एन्टरप्राईजेज, नई दिल्ली, १५. मृदुला सक्सैना, कोटा, १६. राहुल रंजन, बंगाल, १७. डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी व प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु, पानीपत, १८. मुरलीधर भाहद, अजमेर, १९. स्वामी देवेन्द्रानन्द, ऋषि उद्यान, अजमेर, २०. प्रेमशंकर शुक्ला, लखनऊ, २१. गणेश प्रसाद सिंह, महु, इन्दौर, २२. रामगोपाल गर्ग, अजमेर, २३. निशान्त शर्मा, जोधपुर, २४. कौशल्या माता, अजमेर, २५. देवमुनि, अजमेर, २६. शिवदास व शोभा बाहेती, अजमेर, २७. रिसालसिंह आर्य, झज्झर, हरियाणा, २८. रामफूल यादव, झज्झर, हरियाणा, २९. सुमित्रा आर्य, झज्झर, हरियाणा, ३०. शिवकुमार मदान, नई दिल्ली, ३१. मदनलाल गुप्ता, ३२. रामस्वरूप आर्य, अलवर, ३३. रजनीश कपूर, पीतमपुरा, दिल्ली, ३४. स्वास्तिकम चैरिटेबल ट्रस्ट, महाराष्ट्र, ३५. सुशील कुमार गुप्ता, बुलन्दशहर, उ.प्र., ३६. शत्रुञ्जय रावत, हैदराबाद, ३७. एम.एम. खतुरिया, नई दिल्ली, ३८. इन्दु राठी, मेरठ, ३९. सुधाकर राठी, मेरठ, ४०. डॉ. भरत आर्य, मेरठ।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला जो परमार्थ हेतु संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगत अतिथियों को नि:शुल्क वितरित किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौओं को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता
(१६ से ३० अप्रैल २०१३ तक)

१. रामपाल, अम्बाला सिटी, हरियाणा, २. कारू भाई, अजमेर, ३. ह्यूमन वेल्फेयर फाउन्डेशन, गुड़गाँव, ४. अंजली बंसल, नई दिल्ली, ५. अश्विनी कुमार-एस.पी., अजमेर, ६. ओममुनि, ब्यावर, ७. शुभेन्दु, बंगाल, ८. भगवान सहाय, अजमेर, ९. पवनकुमार, अजमेर, १०. प्रेमलता शर्मा, अजमेर, ११. दिनेश जोशी, अजमेर, १२. प्रेमवती माता, अजमेर, १३. गणपत सिंह, अजमेर, १४. संजय चौधरी, हरियाणा, १५. अशोक कुमार शर्मा, अजमेर, १६. नरेश खन्ना आर्य, दिल्ली, १७. अमृत वैश्य, लखनऊ, १८. राजकुमारी चूण्डावत, अजमेर, १९. सरला नवाल, गुलाबपुरा, अजमेर, २०. मोहल्ला समिति, पिपली बास, पीपाड़ शहर, द्वारा हरिशंकर भूतड़ा, २१. कोमल शर्मा, अजमेर, २२. बालेश्वर मुनि, अजमेर, २३. तुलसी बाई, अजमेर, २४. उर्मिला उपाध्याय, अजमेर, २५. सुधा मेहरा, अजमेर, २६. ओमप्रकाश गुगलानी, पंचकूला, हरियाणा, २७. सुशीला आर्य, मेरठ, २८. इन्दु राठी, मेरठ, २९. सुधाकर राठी, मेरठ, ३०. डॉ. भरत आर्य, मेरठ।

-परोपकारिणी सभा, अजमेर।

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक खाता संख्या - 091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक खाता संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

नैष्ठिक अग्निव्रत की महर्षि दयानन्द से विरुद्ध मान्यताएं-१

-सत्यजित्

अनेक आर्य बन्धुओं को इस बात का दु:ख है कि आर्य विद्वान् लेख द्वारा आपस में खण्डन करते हैं। उनसे निवेदन है कि जब अपने को महर्षि का भक्त व आर्यसमाजी कहने वाला भी महर्षि के विपरीत मान्यताओं को महर्षि के अनुकूल रूप में प्रस्तुत करे, परस्पर चर्चा को अस्वीकार कर दे, तो लेख द्वारा ही यह शास्त्रीय चर्चा की जा सकती है। आर्य जनों को भी इसे अवगत कराना आवश्यक है। अन्य मत वाले तो महर्षि व आर्यसमाज के विपरीत प्रचार कर ही रहे हैं, उनका भी उत्तर आर्यसमाज द्वारा किया ही जाता रहा है।

किन्तु जब कोई अपना, अपनी व्यक्तिगत मान्यता को महर्षि के अनुकूल सिद्ध करने के लिए अन्य अपनों की आलोचना का सहारा ले रहा हो, तो यह गम्भीर चिंतनीय विषय बन जाता है। इसकी समालोचना आवश्यक है। हमें वेद, महर्षि व प्रमाणों के अनुरूप बात को ही स्वीकार करना है। इनके विपरीत बात कोई भी कहे, वह आर्यजनों को क्यों स्वीकार करनी चाहिए?

परोपकारी मार्च (प्रथम, द्वितीय) २०१३ में इनके लेख व दो मन्त्रों के भाष्य की कुछ विवेचना-समीक्षा प्रस्तुत की गई थी। इसके उत्तर में उनका A4 कागज पर टंकित किया गया २९ पृष्ठ का लेख मिला है। इनकी एक ६४ पृष्ठ की नई पुस्तक भी मिली है, इसमें भी यह लेख है। परोपकारी के इस लेख में उनके लेख व पुस्तक की कुछ समीक्षा की जा रही है। परोपकारी के पिछले लेख में कुछ बातें स्पष्ट लिखी गयी थीं, पर इन्होंने अपने नये लेख में कुछ को उपेक्षित कर दिया और कुछ को भिन्न रूप में प्रस्तुत कर दिया।

(१) पिछले लेख का यह तात्पर्य नहीं था कि अन्य भाष्यकारों से कोई त्रुटि नहीं हो सकती व इनका भाष्य पूरा गलत है। देखिए पहले क्या लिखा था-''सर्वप्रथम यह स्पष्ट हो कि यहाँ नै. अग्निव्रत जी के आक्षेपों व उनके भाष्य के औचित्य-अनौचित्य, संगत-असंगत पर लिखा जा रहा है, न कि यह सिद्ध करने के लिए कि इन भाष्यकारों द्वारा किया गया भाष्य ऋषि-कोटि का है, पूर्ण ठीक है, त्रुटि रहित है।''.....''आगे की पीढ़ी उसकी समालोचना कर सकती है व उनका भाष्य पूर्व के भाष्यों से अच्छा भी हो सकता है, इस रूप में नै. अग्निव्रत जी का प्रयास स्वागत योग्य है।'' ''अग्निव्रत जी नैष्ठिक की मेहनत-लगन प्रशंसनीय है।''

(२) इनसे पूछा था कि प्रस्तुत दो मन्त्रों के जिन दो भाष्यों की इन्होंने आलोचना की है, उसमें वेद, महर्षि या आर्यसमाज के सिद्धान्त विरुद्ध असत्य बात क्या है? इसका कोई उत्तर नहीं दिया। हाँ, अश्लीलता का आरोप पुन: दोहरा दिया। ये भाष्य अश्लील हैं, इसकी पुष्टि में अनेक गृहस्थियों व विद्वानों के नाम दे दिए। अश्लीलता की कसौटी भी ऋषि आदि आप्त पुरुष ही हो सकते हैं, न कि जनसामान्य। जनसामान्य में तो दोनों तरह के लोग मिल रहे हैं, कुछ इन्हें अश्लील मानते हैं, कुछ अश्लील नहीं मानते। वैसे इन दो मन्त्रों के दो आलोच्य भाष्यों में जो लिखा है, उसे इन्होंने परोक्ष रूप से सत्य मान लिया है, पर उसे कहना अनावश्यक माना। ये लिखते हैं- **''आप कहते हैं, यह वर्णन सत्य है, परन्तु क्या सभी सत्य कहने आवश्यक हैं?''**

इन दो भाष्यों को एक ओर ये किसी शिक्षा-उपदेश से रहित व्यर्थ मान रहे थे, और बवंडर खड़ा किया, दूसरी ओर इनकी नई आई पुस्तक के पृष्ठ ३५ पर लिखा है-''हाँ, यह अवश्य है कि महीधर की भांति प्रमत्त यौन क्रीड़ा इन भाष्यों में नहीं है, बल्कि संयम का ही उपदेश है परन्तु अति साधारण व अश्लील शब्दों में।'' इस वाक्य में इनका आक्रोश-उबाल-विरोध पर्याप्त कम हुआ है। सम्भवत: क्षोभ के कुछ कम होने व मन के कुछ शान्त होने पर कुछ धरातल पर उतरे हैं, यथार्थता को कुछ स्वीकार कर पाये हैं। अच्छा होता इतना भी बोध कुछ पहले आ जाता।

इस तरह के भाष्य को इन्होंने व इनके प्रमाण भूत गृहस्थों ने निम्न वृत्ति वाले गंवार का लेख कहा, लिखा कि यह तो जानवर भी जानते हैं, इसे वाममार्गियों के लिए बताया। किन्तु ये व्यक्ति अश्लीलता के निर्णय में प्रामाणिक नहीं माने जा सकते। मध्यकालीन मानसिकता से ग्रस्त व अनेक मानसिक ग्रन्थियों से युक्त संकुचित मनोवृत्ति वाले व्यक्ति आधुनिक विज्ञान-शिक्षा पढ़कर भी ऐसे स्थलों को अश्लील मान सकते हैं। यदि इन व्यक्तियों को प्रमाण माना जाये, तो महर्षि दयानन्द को भी निम्न मनोवृत्ति वाला मानने का पाप करना पड़ेगा। महर्षि के ग्रन्थों में भी कुछ ऐसे स्थल हैं। हमारी कसौटी, हमारे प्रमाण तो ऋषि होने चाहिएँ। यूं तो महर्षि के नियोग प्रकरण को भी भद्दा-अश्लील, लज्जित करने वाला, भारतीय संस्कृति के विपरीत ऐसा मानने वालों की संख्या कम नहीं है। क्या जनसामान्य को प्रमाण मानकर महर्षि को गंवार, वाममार्गी, निम्न मनोवृत्ति वाला सिद्ध करने वाले उचित माने जा सकते हैं? क्या किसी को मात्र लोक प्रचलित मान्यताओं के आधार पर विद्वानों व ऋषि के भाष्यों पर आक्षेप करने लग जाना चाहिए? क्या इन्हें प्रमाण-अप्रमाण का भेद भी ज्ञात नहीं?

आइये इन तथाकथित अश्लील भाष्यों से मिलते-जुलते महर्षि के भाष्यों को देखें। यदि महर्षि इन्हें अश्लील मानते तो ऐसा भाष्य नहीं करते, ईश्वर इन्हें अश्लील मानता तो ऐसे शब्दों

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

का प्रयोग वेद-मन्त्रों में नहीं होता। जनसामान्य इन्हें अश्लील माने, तो वह इस विषय में प्रामाणिक नहीं माना जा सकता। वेद जब सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, तो उसमें गृहस्थ सम्बन्धी उपदेश-निर्देश भी होंगे ही।

१. संस्कार विधि गृहाश्रम प्रकरण-अथर्व. १४.२.३८-तां पूषञ्छिवतमाम्.....का अर्थ-''हे (पूषन्) वृद्धिकारक पुरुष! (यस्याम्) जिसमें (मनुष्याः) मनुष्य लोग (बीजम्) वीर्य को (वपन्ति) बोते हैं, (या) जो (नः) हमारी (उशती) कामना करती हुई (ऊरू) ऊरू को सुन्दरता से (विश्रयाति) विशेषकर आश्रय करती है, (यस्याम्) जिसमें (उशन्तः) सन्तानों की कामना करते हुए हम (शेपः) उपस्थेन्द्रिय का (प्रहरेम) प्रहरण करते हैं, (ताम्) उस (शिवतमाम्) अतिशय कल्याण करने हारी अपनी स्त्री को सन्तानोत्पत्ति के लिये (एरयस्व) प्रेम से प्रेरणा कर।

२. संस्कारविधि गृहाश्रम प्रकरण, अथर्व. १४.२.३७-'सं पितरावृत्विये.....' के भाष्य में महर्षि लिखते हैं-''(माता) जननी (च) और (पिता) जनक दोनों (रेतसः) वीर्य को मिलाकर गर्भाधान करने हारे (भवाथः) हूजिए।.....''

३. संस्कारविधि गृहाश्रमप्रकरण, अथर्व. १४.२.६४-'इहेमाविन्द्र.....' के अर्थ में महर्षि लिखते हैं-''(दम्पती) जाया और पति (चक्रवाकेव) चकवा-चकवी के समान एक-दूसरे से प्रेमबद्ध रहें.....''।

४. सत्यार्थप्रकाश तृतीय समुल्लास, ऋग्वेद १०.७१.४-'उत त्वः पश्यन्न.....' के अर्थ में महर्षि लिखते हैं-''जैसे सुन्दर वस्त्र, आभूषण धारण करती अपने पति की कामना करती हुई स्त्री अपना शरीर और स्वरूप का प्रकाश पति के सामने करती है.....''

५. सत्यार्थप्रकाश चतुर्थसमुल्लास, ऋग्वेद १.१७९.१-'पूर्वीरहं शरदः.....' का अर्थ करते हुए महर्षि लिखते हैं-''.....(वृषणः) वीर्य सींचने में समर्थ पूर्ण युवावस्थायुक्त पुरुष (पत्नीः) युवावस्थास्थ हृदयों को प्रिय स्त्रियों को (जगम्युः) प्राप्त होकर पूर्ण शतवर्ष वा उससे अधिक आयु को आनन्द से भोगते और पुत्र-पौत्रादि से संयुक्त रहते रहें.....''

६. ऋग्वेद १.१६७.७-''.....(वृषमनाः) जिसका वीर्य सींचने में मन वह (ईम्) सब ओर से (सचा) सम्बन्ध के साथ (स्थिरा, चित्) स्थिर ही (सुभागाः) सुन्दर सेवन करने (जनीः) अपत्यों को उत्पन्न करने वाली स्त्रियों को (वहते) प्राप्त होता उसको भी मैं (प्र, विवक्मि) अच्छे प्रकार विशेषता से कहता हूँ।''

७. ऋग्वेद ३.५७.३-''(याः) जो (नमस्यन्तीः) सत्कार करती हुई (जामयः) २४ वर्ष की अवस्था को प्राप्त युवती ब्रह्मचारिणी (वृष्णे) वीर्यसेचन में समर्थ चालीस वर्ष की आयु को प्राप्त ब्रह्मचारी के लिए (शक्तिम्) सामर्थ्य की (इच्छन्ति) इच्छा करती और (अस्मिन्) इस संसार में (गर्भम्) गर्भ के धारण को जानती हैं, वे पतियों की (वावशानाः) कामना करती हुईं.....''।

८. यजुर्वेद १९.८८-''.....(वास्तिः) वास करने का हेतु पुरुष (शेपः) उपस्थेन्द्रिय को (हरसा) बल से (तरस्वी) करने हारा होता है वह (चप्यम्) शान्ति करने के (न) समान (सत्) वर्तमान में सन्तानोत्पत्ति का हेतु होवे उस सब को यथावत् करे।''

९. यजुर्वेद २५.७-''.....(शेपेन) लिङ्ग और (रेतसा) वीर्य से (प्रजाम्) सन्तान को.....निरन्तर लेओ॥''

(३) इनके लेख में 'अत्र प्रमाणानि' शीर्षक लिखकर बहुत से प्रमाण गोपथ ब्राह्मण आदि के संदर्भ सहित दिये गये थे। इन सबको देने के बाद एक सूचना लिखी गई थी-''**यहाँ सभी प्रमाण महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के वेद भाष्य से ही लिए गये हैं।**'' इस सूचना वाक्य से स्पष्ट है कि लेखक पाठकों के मन में यह भाव बैठाना चाह रहा है कि ये सभी प्रमाण महर्षि के भाष्य से ही लिए गये हैं। इससे यह ज्ञात होता है कि भले ही ये प्रमाण अन्य ग्रन्थों के हैं, पर इन्हें महर्षि ने अपने भाष्य में भी दिया हुआ है, अर्थात् इन प्रमाणों की पुष्टि महर्षि ने की है। जब महर्षि के भाष्य में इन्हें देखा गया तो इनमें से अनेक वहाँ नहीं मिले। इस प्रकार इनका मिथ्याकथन उजागर हुआ। अब इन्होंने अपने नये लेख में शीघ्रता का कारण बताते हुए त्रुटि को स्वीकार कर लिया है, और '**प्रायः**' शब्द जोड़ने की बात कही है। सत्य को मानना ही पड़ता है। यह तो चलो ठीक हुआ, किन्तु मनोवृत्ति अभी भी छूटी नहीं है। नये लेख (पृष्ठ १६) में अपने सूचना वाक्य को उद्धृत करते हुए अपने दोष को कम बताने हेतु '**ही**' शब्द को हटा दिया। प्रथम लेख में '**ही**' शब्द था, इससे स्पष्ट है कि तब शीघ्रतावश '**प्रायः**' शब्द नहीं छूटा था। वहाँ सप्रयोजन सब प्रमाणों को महर्षि के वेदभाष्य से लिया गया कहा था। पता है कि पढ़ने वाले महर्षि के भाष्य को तो देखेंगे नहीं, चला लो जितनी चल सके। अब जब बात खुल गई तो शीघ्रता का बहाना देकर बच निकले। वैसे नये लेख में भी 'ही' शब्द शीघ्रता में ही छूटा होगा। इसे भी प्रूफ की त्रुटि मानकर आसानी से बचा जा सकता है व समीक्षक पर मात्र प्रूफरीडर होने का आक्षेप किया जा सकता है।

अब जब इन्होंने भूल को स्वीकार कर लिया है कि सब प्रमाण महर्षि के भाष्य में नहीं है, तो इससे सम्बन्धित परोपकारी में उठाये गये अनेक प्रश्न व उनके उत्तर में लिखे गये इनके विस्तृत विवरण भी उपेक्षणीय हैं।

(४) इन्होंने आक्षेप किया है कि क्यों महर्षि की रट लगा रखी है, शतपथादि अन्य ग्रन्थ भी तो प्रमाण हैं। यहाँ स्पष्ट रहे कि परोपकारी के लेख में कहीं भी शतपथादि अन्य आर्ष ग्रन्थों की प्रामाणिकता का निषेध नहीं किया गया था। सब आर्ष ग्रन्थ

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

प्रमाण हैं। महर्षि का प्रमाण तो इसलिए पूछा जा रहा था क्योंकि इन्होंने सूचना में सब प्रमाणों के महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य से ही लिए गये होने की उद्घोषणा की थी।

इस बड़ी भूल के अतिरिक्त चार अन्य छोटी त्रुटियाँ भी उन्होंने स्वीकार कर ली हैं, वर्तनी संशोधन की त्रुटि मानकर। हाँ, अन्य त्रुटियों को अभी स्वीकार नहीं कर पाये हैं, ठीक है, जितना भी स्वीकारा उतना हितकर होगा।

(५) इन्होंने नये लेख में प्रश्न किया है कि परोपकारी में मात्र दो मन्त्रों की ही समीक्षा क्यों लिखी गई, क्या मांसाहार, पशुबलि आदि उपर्युक्त सारे पापों से सहमत हैं? यहाँ स्पष्ट रहे कि परोपकारिणी सभा महर्षि दयानन्द के मन्तव्य के अनुकूल मांसाहार, पशुबलि, जादू-टोना, वेदों में मानवीय इतिहास मानने आदि को अस्वीकार करती है। परोपकारी द्वारा इनका समर्थन नहीं किया जाता है। इस विषय में इनके व परोपकारी के मध्य मतभिन्नता नहीं है, तो फिर इसकी समीक्षा की बात ही नहीं रह जाती है। समीक्षा तो उस की ही की गई जिसमें मतभिन्नता है। ऐसे में परोपकारी व परोपकारिणी पर इन दोषों के समर्थन का आरोप लगाना अशोभनीय है।

संस्कृत साहित्य में जिस यौन अपसंस्कृति का इन्होंने उल्लेख किया, उसका समर्थन आर्यसमाज नहीं करता है, आर्यसमाज के गुरुकुलों में ऐसे संस्कृत साहित्य को पढ़ाने से बचा जाता है। इनका पठन-पाठन तो प्राय: अन्यत्र ही होता है। यदि इन्हें इसे सुधारने में अपनी शक्ति-समय लगाना था, तो उन्हें लिखते, उनसे सम्पर्क करते।

(६) इन्होंने सार्वदेशिक द्वारा प्रकाशित शतपथ ब्राह्मण के पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय के भाष्य में लिखी पशुबलि का उल्लेख किया था। महर्षि दयानन्द ने पशुबलि का खण्डन किया है, पशुबलि गलत है, अत: आर्यसमाज व परोपकारिणी सभा इसका समर्थन नहीं करते हैं, इसका खण्डन ही करते हैं, पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय ने भी शतपथ भाष्य में इसका समर्थन नहीं किया है। स्पष्ट रहे कि पं. गंगाप्रसाद जी ने उपलब्ध शतपथ ब्राह्मण का मात्र अनुवाद किया है, यह शतपथ ब्राह्मण की व्याख्या या विवेचना नहीं है। विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्द से प्रकाशित पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय के शतपथ ब्राह्मण संस्करण २०१० की भूमिका में इसके सम्पादक स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती के ये अंश पठनीय हैं-''श्री उपाध्याय जी ने शतपथ ग्रन्थ का अनुवाद मात्र किया है, न कि उसका भाष्य।'' ''शतपथ ब्राह्मण और उसके अनुवाद के सम्बन्ध में कतिपय भ्रान्तियाँ हैं। बहुत से स्थल ब्राह्मण ग्रन्थ में ऐसे हैं, जिनमें पशुबलि की गन्ध मिलती है, अथवा जिनमें मांस खाने का भ्रम होता है।..... बहुत से स्थल प्रक्षिप्त भी हो सकते हैं।''

''प्रस्तुत शतपथ ब्राह्मण प्राचीन ग्रन्थ का अनुवाद मात्र है। पाठकों से आग्रह है कि किस बात को सिद्धान्त के अनुकूल मानें और किसको प्रतिकूल, इसका स्वयं निर्णय करें। हिन्दी अनुवादक का कर्त्तव्य केवल इतना है कि मूलग्रन्थ का सच्चा-सच्चा अनुवाद प्रस्तुत कर दे। अनुवादक अपना अनुवाद अपनी आस्था के आधार पर नहीं करता। निस्सन्देह वेद, दयानन्द और आर्यसमाज में एवं आर्ष साहित्य में निष्ठा रखने वाला व्यक्ति न तो पशु-बलि को मानता है, न मांस-भोजन को और न किसी अनैतिकता को। श्री उपाध्याय जी के इस अनुवाद को इसी भावना से देखना चाहिए।''

स्वयं गंगाप्रसाद जी ने भी अपनी एक लेखमाला 'महाभारत और उसके पश्चात्' के छठे अध्याय 'यज्ञ और पशु-हिंसा' में पशुबलि को यज्ञ में विकार माना है। देखें-गंगा ज्ञानसागर, भाग दूसरा, पृष्ठ ४३५। पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय की पुस्तक-'हम क्या खायें-घास या माँस?' में मांसाहार का निषेध व शाकाहार का समर्थन किया है। इसी पुस्तक की सत्रहवीं वार्ता 'यज्ञ में पशुवध' पर है, इसमें पशुवध को गलत बताया गया है। अत: इन पर पशुबलि आदि का आक्षेप निराधार है। ऐसे आक्षेप अल्पज्ञता से किये जाते हैं या जानबूझ कर प्रयोजन विशेष की पूर्ति के लिये किये जाते हैं।

(७) इन्होंने श्री अभिषेक आर्य द्वारा कोई पत्र पंजीकृत डाक से भिजवाया था, जिसमें दो शंकाओं का समाधान किया गया था। परोपकारी के लेख में इनका उल्लेख न होने पर इन्होंने उसे गुप्त रखने व मिथ्याचार की बात लिखी है। किन्तु मेरे को ऐसा कोई पत्र मिला ही नहीं था तो उसके बारे में क्या तो लिखना, क्या गुप्त रखना?

(८) इन्होंने पूछा है कि परोपकारी में मात्र वैद्यनाथ जी व ब्रह्ममुनि जी के भाष्य ही क्यों छापे, मेरे क्यों नहीं? इसका कारण है, इनके जो लेख छप चुके थे उनमें इनके भाष्य आ ही चुके थे। वे जिन पत्रिकाओं में छपे थे, उनका नाम आदि परोपकारी में दे ही दिया गया था। इन्होंने वैद्यनाथ जी व ब्रह्ममुनि जी के भाष्यों को नहीं छपवाया था। जिनकी आलोचना की जा रही थी, उन्हें उन्होंने छोड़ दिया था। अत: आलोचना का उत्तर देते समय इन भाष्यों को परोपकारी के लेख में देना आवश्यक था।

(९) पुस्तक के पृष्ठ ३४ पर वे लिखते हैं-''अभी हाल में सार्वदेशिक सभा (आचार्य बलदेव जी के प्रधानत्व वाली) के उपप्रधान मा. श्री सुरेश जी अग्रवाल तथा आदरणीय श्री पूनमचन्द जी नागर, अहमदाबाद ने दूरभाष पर सूचना दी है कि सार्वदेशिक सभा मेरे विचारों से सहमत है तथा भविष्य में ऐसा प्रकाशन नहीं होगा।'' यह लिखकर उन्होंने सार्वदेशिक को अपने समर्थन में प्रस्तुत किया है। यदि ऐसा है तो उनसे निवेदन है कि वे सार्वदेशिक के उस प्रस्ताव को दिनाङ्क व संख्या सहित प्रस्तुत करें, अन्यथा यह भी मिथ्या कथन की श्रेणी में आयेगा।

क्रमश: .....

ऋषि उद्यान, अजमेर।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आज के युग में घिरते मूल्य

–गीता धनवानी

कहाँ मिटती चली जा रही,
मानवता इस संसार से।
रुक गए क्यों हर कदम,
जो प्यार की दरकार थे॥

मूल्य घटते जा रहे,
और सोच गहरी है नहीं।
अब तो ऐसे में क्या,
गर्दिशों से कोई भी बच पाएगा॥

आम आदमी तो अब,
थके हुए झुक जाएँगे।
इस जुल्मों सितम से,
कोई नहीं बच पाएँगे॥

कल तक जो नारी देश का सम्मान थी,
माँ कहलाती थी, कभी वो प्यार का वरदान थी।
जगत् जननी बनकर वो नन्हें फूलों की पहचान थी,
घर की लक्ष्मी, रोशनी व दुनिया का आधार थी॥

आज उसके जन्म पर,
मातम का ये गम मनाना कैसा है।
जैसे जिन्दगी मिलने से पहले,
मौत के साये घेरने लगे।
अब इन तन्हा तड़पती सिसकियों को,
न्याय कौन दिलवाएगा॥

निकल चले हो किस डगर पर,
ऐ राहगीरों सोच लो।
इस दर्द और आह का दरिया,
पार कौन कर पाएगा॥

कल जिन को देखकर,
इज्जत से हम झुक जाते थे।
आज ऐसे आदर्श देखने को,
क्या फिर कभी मिल पाएँगे॥

ये सवाल उठे जब दिल में,
दबी सी सनसनाहट में एक आवाज आती है।
ढूंढता रहता है, खुद खुदा,
जिसने ये आलम प्यार से बनाए थे।

चलभाष–९४१४३४७५८०, ९८८७३०१०५१

ई–मेल द्वारा परोपकारी नि:शुल्क

परोपकारी के पाठकों को प्रसन्नता होगी कि अब परोपकारी ई–मेल द्वारा भी भेजी जा रही है। परोपकारिणी सभा की वेब–साइट पर तो परोपकारी पहले से ही नि:शुल्क उपलब्ध है। विश्व में कहीं भी कोई भी इसे वेब–साइट पर पढ़ सकता है। इसके साथ ही अब यह सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है कि परोपकारी आपके पास ई–मेल द्वारा पहुँच जाये। इससे यह पत्रिका शीघ्र व अधिक सुन्दर रूप में आप तक पहुँच सकेगी। आप जहां भी रहें, कभी भी पढ़ना चाहें, यह आपके पास रहेगी। डाक की अव्यवस्था से छुटकारा मिल सकेगा। यह आपको नियमित मिलती रहेगी। इससे रासायनिक रंगों व कागज का उपयोग भी कम होगा, खर्च भी घटेगा। अत: पाठकों से अनुरोध है कि **कृपया अपना ई–मेल पता सभा को ई–मेल से भिजवा देवें।** आप जिन इष्ट–मित्रों, परिजनों व संस्थाओं को परोपकारी भिजवाना चाहते हैं, उनके ई–मेल पते भी भिजवा देवें, उन्हें भी यह नि:शुल्क भेज दी जायेगी। ई–मेल–psabhaa@gmail.com

–व्यवस्थापक

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

ओडिशा यात्रा-उमड़ते अनुभव

-आचार्य सत्येन्द्र

यात्रा के साथ मानव का सम्बन्ध चिरन्तन है, जिस आत्मा को भी प्रभु ने मानव जीवन प्राप्त करने का सुअवसर प्रदान किया है, भौतिक दृष्टि से वह जीवन भिन्न-भिन्न प्रकार के स्थानों की यात्रा से प्रभावित, अनुभावित, अनुप्रमाणित होता रहा है। उस प्रभाव से जीवन को जीने की प्रक्रिया में नये आयाम प्राप्त होते हैं, यद्यपि यात्रा के पथिक बनने का पशु-पक्षी आदि योनियों को भी अवसर प्राप्त होता ही है, तथापि वे उन खट्टे-मीठे अनुभवों को करते तो हैं, पर उन अनुभवों को अपने समाज में बाँटने का, व्यक्त करने का सामर्थ्य उनको प्राप्त नहीं है।

मनुष्य ही एक ऐसा विवेकशील प्राणी है, जो केवल यात्रा में ही नहीं अपितु जीवनचर्या में घटने वाली वे घटनाएँ जो हमारे विवेक को प्रभावित कर अनुभव का रूप धारण कर लेती हैं, उन अनुभवों को विवेकपूर्वक बांटने का, व्यक्त करने का भाव सफलतापूर्वक कर सकता है। और उसे वे अनुभव आध्यात्मिक प्रसाद की तरह सद्भाव से वितरित करने ही चाहिए। हो सकता है शब्दों को पिरोती यह शब्द माला किसी के गले का हार बनकर उसकी सोच में आध्यात्मिक क्रान्ति उत्पन्न कर दे, इसी दृष्टि से ओड़िशा यात्रा का यह संक्षिप्त विवरण अनुभवों को बांटने का प्रयास मात्र है।

अट्ठारह मार्च की रात्रि मेरे लिए अद्वितीय थी क्योंकि वही रात्रि मेरी यात्रा के प्रारम्भ की थी। यह रात्रि प्रारम्भिक रात्रि के रूप में मानों हम यात्रियों का स्वागत कर रही थी। इस यात्रा में मैं अकेला ही यात्री न था, बल्कि वानप्रस्थी श्री देवमुनि जी, मुमुक्षु मुनि जी, ब्र. वामदेवी जी, सेवक भीम जी आदि भी थे। इस प्रकार यह व्यक्तिगत यात्रा न होकर सामूहिक यात्रा का रूप धारण कर चुकी थी, ट्रेन में स्थान न मिलने का मन में कोई भय न था, वह भय आरक्षित टिकट के द्वारा दूर कर लिया गया था। रात्रि सानन्द व्यतीत हुई, १९ मार्च की सुबह हम मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में थे। परन्तु वहाँ ठहरना न था। क्योंकि उद्देश्य छिंदवाड़ा गुरुकुल में ठहरने का था। कुछ घण्टों की प्रतीक्षा के बाद छिंदवाड़ा जाने वाली ट्रेन में सवार होकर छिंदवाड़ा पहुँचे। यहाँ से हमको गुरुकुल पहुँचना था। जैसे ही छिंदवाड़ा ट्रेन से उतरे ब्र. सत्यप्रिय पहले ही स्टेशन पर लेने आए हुए थे। सत्यप्रिय जी के साथ हम सभी ऑटो के द्वारा गुरुकुल पहुँचे। मैं सत्यप्रिय जी के साथ मोटरसाइकिल पर था। गुरुकुल का वातावरण सात्त्विक था साथ ही प्राकृतिक सौंदर्य का उपहार भी गुरुकुल के लिए कम न पड़ता था। हम सभी के साथ गुरुकुल के बच्चों का व आचार्य जी का व्यवहार बहुत ही शालीन तथा आत्मीयतापूर्ण रहा। श्री आचार्य जी बड़े ही उदार और सरल स्वभाव के हैं, और बच्चों में भी आचार्य जी के प्रति श्रद्धा व आदर का भाव स्पष्ट रूप से झलकता था। मैंने अनेक गुरुकुलों में संध्या कृत्य देखा है, किन्तु जैसी संध्या की पद्धति यहाँ देखी, अन्यत्र गुरुकुलों में वैसी संध्या पद्धति के दर्शन न हुए। यहाँ की संध्या पद्धति मन्त्रों के अर्थ व भाव लिए हुए थी तथा जिस विशिष्टता से बच्चे उसे करते वह अपने आप में अनूठी और रोचक पद्धति थी, जो निश्चित ही मन के कलुषित भावों को बदलने में सहायक सिद्ध हो सकती है। अगली रात्रि को छिंदवाड़ा आर्यसमाज में सत्संग समाप्त कर उसी रात को हम नागपुर के लिए रवाना हो गए। २२ की दोपहर नागपुर से पुरी के लिए रवाना हुए, २३ तारीख को लगभग एक बजे पुरी पहुँचकर आर्यसमाज पुरी में ठहरे जो निर्माणाधीन है, उसमें एक माताजी के दर्शन हुए जिनसे हमें बहुत स्नेह मिला। मैंने सचमुच उन माताजी में अतिथियों के प्रति सम्मान, स्नेह तथा वात्सल्य भाव के दर्शन किये वे पहले सरकारी सेवा में थीं। आयु के नियम के हिसाब से सेवा निवृत्त हुईं सरकारी सेवा से मिलने वाली सेवानिवृत्त-पेंशन से अनेक बच्चों को पढ़ाया व अभी भी अनेक विद्यार्थी, माताजी के सहयोग से शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। माताजी 'गुरु माँ' के नाम से प्रसिद्ध हैं, बच्चे व अन्य लोग प्यार से उन्हें 'गुरु माँ' से ही सम्बोधित करते हैं। उस मां को श्रद्धा से मेरा नमन। तत्पश्चात् पुरी के दर्शनीय स्थानों के दर्शन कर पुरी रावतपड़ा पहुँचे, वहाँ से ब्रह्मपुर के लिए प्रस्थान, ब्रह्मपुर में ब्र. वामदेव जी के सम्बंधियों के घर आतिथ्य, पुनः एक-दो दिन इसी प्रकार सम्बन्धित व्यक्तियों के यहाँ ठहरकर आगे बढ़ते गए। आर्यसमाज जरड़ागढ़ पहुँचे वहाँ के लोगों का सौजन्य स्नेहपूर्ण व्यवहार से मन की प्रसन्नता बढ़ती गई। वे हमें एक ऐसे आदिवासी गाँव ले गए जो हमारे लिए आश्चर्य का विषय बना हुआ था, वह पूरा का पूरा गाँव आर्यसमाजी था, यद्यपि गाँव छोटा था, फिर भी हमारे लिए यह एक आश्चर्यजनक घटना थी, सम्पूर्ण गाँव को आर्यसमाजी बनाने के पीछे गुरुकुल हरिपुर के आचार्य जी के तप-त्याग और पुरुषार्थ था, निश्चय ही वे स्तुत्य हैं। इसी प्रकार से भिन्न-भिन्न स्थानों की यात्रा करते हुए ब्र. वामदेव जी के गाँव कृष्णचन्द्रपुर पहुँचे। परिवार के लोग अत्यन्त प्रसन्न थे। आगे इसी तरह यात्रा चलती रही। इस ओड़िशा यात्रा में एक बात ने मुझे विशेष प्रभावित किया, वह थी यहाँ के लोगों की धार्मिकता, सरलता, एक निर्दोष भाव। अधिकाधिक घरों में जाने ठहरने, भोजन आदि करने का अवसर प्राप्त हुआ। वहाँ उपर्युक्त भाव प्रचुरता से देखे गए, उदाहरणार्थ किसी के घर में

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

प्रवेश से पहले द्वार पर कोई स्त्री या पुरुष का बाल्टी और लोटा हाथ में लेकर खड़ा दिखना अतिथि के पैरों को श्रद्धा से धोना, अपने वस्त्र से साफ करना तथा चरण-स्पर्श करना आम बात थी। भोजन में केले का पत्ता या पत्तल का प्रयोग किया जाता था, शरीर की भाषा से, संकेतों से, एक दूसरे की भाव-भंगिमा देखकर बहुत सी व्यवहार की बातें समझ में आ जाती थी। प्राय: प्रत्येक गाँव में शाम को भोजन से निवृत्त होकर ५-६ पुरुष हाथ में मृदङ्ग, मंजीरा आदि लेकर हरे राम-हरे कृष्णा गाते हुए एक-दो चक्कर लगाते थे। एक बात और विशेष सुनी, वह यह कि तीन-चार सौ गावों पर एक पुलिस-थाना रहता है यहाँ के लोग इतने धार्मिक हैं कि गाँव में झगड़े होते ही कम हैं और यदि होते हैं तो गाँव का झगड़ा, गाँव में ही सुलझा लेते हैं। पुलिस के आने की जरुरत नहीं पड़ती। इस उपर्युक्त विवरण को विस्तार के भय के कारण यहीं विराम लगाता हूँ। अन्त में यही कहूँगा कि कुल मिलाकर प्रभु की कृपा से यह यात्रा सुखप्रद, शिक्षाप्रद व अनेक अनुभवों को समेटती हुई अजमेर आकर निर्विघ्न पूर्ण हुई, जो चिरस्मरणीय रहेगी।

-ऋषि उद्यान, अजमेर।

वैदिक ध्यान प्रशिक्षक....., पृष्ठ-१५ का शेष.....

ब्रह्मचारियों का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद। ईश्वर से प्रार्थना है कि इसी तरह की वैदिक शिक्षा, संस्कृति एवं वैदिक ध्यान पद्धति का अधिक से अधिक विस्तार हो।

मेरा समय यदि आप कहीं सहयोग एवं वैदिक ध्यान प्रशिक्षण या अन्य हेतु प्रयोग करें। इसमें मैं अपने आपको धन्य महसूस करूँगा। जब-जब मेरे पास समय होगा मैं जरूर इस पूण्य कार्य के प्रचार-प्रसार के लिए देना चाहूँगा। इस वैदिक ध्यान पद्धति को अपने आस-पास व कार्यक्षेत्र में अधिक से अधिक प्रचारित व प्रसारित करूँगा। आपकी कृपा हमेशा बनी रहे। ओ३म् शान्ति: शान्ति: शान्ति:।-**धर्मेन्द्र धाकड़, ८९, इमली बाजार, इन्दौर (म.प्र.) मो-९६०७२४५८८७**

१४. यहाँ योगध्यान शिविर होगा, यह जानकर मैं यहाँ आया। यह ध्यान शिविर ठीक है। मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। आवास आदि की व्यवस्था उत्तम है। भोजन मुझे पूरा अनुकूल नहीं लगा, फिर मैंने अपने अनुकूल भोजन लिया। यहाँ रहने वाले आचार्य, ब्रह्मचारी, आश्रमवासी सभी अत्यधिक प्रशंसा के योग्य हैं। ऐसा मैंने अनुभव किया। इससे मुझे अधिक संतोष हुआ। सब जगह साफ-सफाई दिखी, बहुत अच्छा लगा। भोजन वितरण व्यवस्था में भोजन अधिक बाँटा गया, लेने वालों ने अधिक लिया, ऐसा मुझे सन्देह है, जिससे भोजन का दुरुपयोग हुआ। भोजन में मितव्ययता का ध्यान रखें। यह मेरा निवेदन है। **-के.पी. दामोदरन उण्णि, करुनेटनमना, शान्तिनगर, पेरिन्तर मण्णां, जिला-मलपुरम, केरलम्।**

१५. मैं इस ध्यान योग के पाठ्यक्रम से बहुत प्रभावित हुआ। समस्त भारतवर्ष में परोपकारिणी सभा द्वारा निर्धारित वैदिक ध्यान का पाठ्यक्रम कुछ प्रचारकों द्वारा किया गया है, जो बहुत ही प्रसंशनीय है। संक्षेप में मैं अपने अनुभव एवं सुझाव निम्न रूप से प्रेषित करता हूँ। **१.** आगन्तुकों का स्वागत तथा उनकी निवास व्यवस्था अति उत्तम थी। **२.** कक्षाएँ बहुत रुचिकर तथा पूर्ण रूप से ज्ञानवर्द्धक थी, निर्धारित समय भी अत्यन्त अनुकूल था। **३.** गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का आचरण तथा व्यवहार बहुत शिष्ट सुन्दर था। उन्हें निर्देश देने की आवश्यकता है। **निम्नलिखित सुझाव भी दिये जा रहे हैं-१.** यदि सम्भव हो तो अंग्रेजी भाषा में भी पाठ्यक्रम तैयार किया जावे, जिससे अहिन्दी भाषी भी लाभान्वित हो सकें। **२.** यह अच्छा रहेगा कि इस अवधि के अन्तर्गत कुछ प्रश्नोत्तर के लिए भी समय दिया जाए। **३.** परोपकारिणी सभा से मेरा निवेदन है कि समस्त राष्ट्रों के लिए इस योग ध्यान प्रणाली को निर्देशित किया जाए। यदि सम्भव हो सके, तो समय-समय पर उन्हें अपनी कार्यप्रणाली से अवगत कराया जावे तथा रिफ्रेशर कोर्स के रूप में नई-नई योग की विधियों से अवगत कराया जाए। **४.** मेरा परोपकारिणी सभा से निवेदन है कि इसे दक्षिण भारतीय राज्यों पर विशेष ध्यान देना चाहिए, जिसके अन्तर्गत केरल, तामिलनाडू एवं उत्तरी पूर्वी राज्य, जहाँ पर आर्यसमाज कमजोर है अथवा गतिविधि नहीं है, वहाँ विशेष रूप से यह कार्यक्रम करते रहना चाहिए। वहाँ पर सामूहिक रूप से हिन्दुओं का (वैदिक धर्मियों का) धर्म परिवर्तन होता है। **५.** स्थानीय (क्षेत्रीय) भाषाओं में वैदिक ध्यान पद्धति का पाठ्यक्रम निर्मित होना चाहिए। **६.** मैं यह अनुभव करता हूँ कि यह वैदिक ध्यान पद्धति हेतु एक सशक्त प्लेटफॉर्म (मंच) बने, जिसमें सभी तरह के व्यक्ति चाहे वे वनवासी हो अथवा वैदिक धर्मी, जुड़ सकें।

परोपकारिणी सभा की सफलता की कामना करता हूँ।

-के.एम.राजन, रीजन नं. ७, कुन्नथमना वेलीनेझी, पलक्कड़, केरल-६७९५०४, चलभाष ९५६२५२९०९५

जैसे सूर्य्य और विद्वान् सब पदार्थों को धारण करने हारे सहनयुक्त और प्राप्त होकर सुखों को प्राप्त कराते हैं, वैसे ही शिल्पविद्या के जानने वाले विद्वान् से यानों में युक्ति से सेवन किये हुए अग्नि और जल सवारियों को चलाके सर्वत्र सुखपूर्वक गमन कराते हैं।-**महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद भावार्थ-४.३३।**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

वैदिक-विद्वत्परिषद्-कार्यक्रम

११ से १४ जुलाई २०१३ आर्यसमाज सैक्टर ९, पंचकूला।

गुरुवासरः-(११.०७.२०१३)

०९.००-११.३०- प्रथमः सत्रः। तत्र सर्वेषामागतानां विदुषां वैदिकविद्वत्परिषदश्च परिचयः। व्याकरणादिवेदांगेषु चर्चा। तत्र चर्चनीयाः विषयाः-**१.** ६३ वर्णानां स्वरूपं परस्परभेद आधारश्च। **२.** किं धातुपाठेऽर्थनिर्देशः पाणिनीयमेव?

०२.००-०४.३०- द्वितीयः सत्रः। व्याकरणादिवेदांगेषु ब्राह्मणग्रन्थेषु च चर्चा शंकासमाधानञ्च। तत्र चर्चनीयाः विषयाः- **१.** किं श्रौते (ब्राह्मणग्रन्थेषु विहिते) कर्मणि मांसादिपदार्थानाम् आहुतेर्विधानमस्ति क्वचित्? अन्ये च विषयाः शंकाश्चामन्त्रयन्ते।

०७.३०-०९.३०- तृतीयः सत्रः। व्याकरणादिवेदांगेषु ब्राह्मणग्रन्थेषु च विषयप्रस्तुतिः, शंकासमाधानञ्च। **१.** समर्थः पदविधिरिति सूत्रे कतरत् सामर्थ्यं गृह्यते? व्यपेक्षा वा सामर्थ्यमेकार्थीभावो वा सामर्थ्यं। अन्ये च विषया आमन्त्रयन्ते।

शुक्रवासरः-(१२.०७.२०१३)

०९.००-११.३०- चतुर्थः सत्रः। दर्शनेषु चर्चा। **१.** न्यायवैशेषिकयोर्दृष्ट्या आत्मा विभुः स्विद्भवति३ अणुः स्विद्भवति३। **२.** जीवन्मुक्तावस्था पूर्वा स्विद्भवति३ ईश्वरसाक्षात्कारः पूर्वः स्विद्भवति३।

०२.००-०४.३०- पंचमः सत्रः। दर्शनेषु चर्चा शंकासमाधानञ्च। विषयाः शंकाश्चामन्त्रयन्ते।

०७.३०-०९.३०- षष्ठः सत्रः। दर्शनेषु विषयप्रस्तुतिः शंकासमाधानञ्च। विषया आमन्त्रयन्ते।

शनिवासरः-(१३.०७.२०१३)

०९.००-११.३०- सप्तमः सत्रः। धर्मशास्त्रे चर्चा। तत्र विषयाः-**१.** किं कर्मफलं कर्तुः पुत्राय नप्त्रे वा कदाचित् प्रासुं शक्यते? **२.** यत् सुखं दुःखञ्च जीवात्मना प्राप्यते तत्सर्वं किं कर्मफलमेव?

०२.००-०४.३०- अष्टमः सत्रः। धर्मशास्त्रे चर्चा शंका-समाधानञ्च। विषयाः शंकाश्चामन्त्रयन्ते।

०७.३०-०९.३०- नवमः सत्रः। धर्मशास्त्रे विषयप्रस्तुतिः, शंकासमाधानञ्च। विषया आमन्त्रयन्ते।

रविवासरः-(१४.०७.२०१३)

१०.३०-१२.३०- दशमः सत्रः। अवशिष्टविषयेषु चर्चा। विषया आमन्त्रयन्ते।

०७.३०-०९.३०- एकादशः सत्रः। भावियोजना, स्वविचाराः, धन्यवादज्ञापनञ्च। समाप्तश्च द्वितीयो विद्वत्समावेशः।

अत्र केचन विषया ध्यातव्याः-०१. संवादः संस्कृतभाषामाध्यमेनैव भवति। **०२.** आमन्त्रितविद्वद्भ्योऽन्येषां जिज्ञासूनां समावेशे पूर्वानुमत्या प्रवेशो भवितुमर्हति। **०३.** आवास-भोजनव्यवस्था आर्यसमाज-पंचकूला से-९ (चंडीगढ़)-द्वारा क्रियते। यात्राव्ययं तु समान्यरूपेण विद्वांसः स्वपक्षादेव करिष्यन्ति। कश्चिद्यात्राव्ययमपेक्षते चेत्परिषदा सा व्यवस्था कर्तुं शक्यते। **०४.** ये जनाः बसयानेन आगच्छन्ति, ते अंबाला-चंडीगढ़-नगरयोर्मध्ये स्थितात् जिरकपुर-नगरात् पंचकूला-सेक्टर-९, १० कृते यानं गृहीत्वा से-९ आगच्छेयुः। मार्केट निकषा आर्यसमाजः। ये जना रेलयानेन आयान्ति, ते चंडीगढ़-रेलवे-स्टेशनतः आटोयानेन से-९ आर्यसमाजम् आगच्छेयुरिति। **०५.** आवास-भोजनव्यवस्था बुधवासर-सायंकाल-प्रभृति सोमवासर-प्रातःकाल-पर्यन्तं भविष्यति। **०६.** प्रत्येकस्मिन् सत्रे तत्र निर्दिष्टेषु विषयेषु पूर्वविषयस्य विचारणस्य समाप्तावेवाग्रिमविषयस्य विचारणमारप्स्यते। **०७.** निर्णयाभावेऽपि गतिरोधादिकारणाननुभूय संयोजकः संचालको वा तद्विषयकविचारणं समासुं शक्नोति। **०८.** आवश्यकानि पुस्तकानि सहैवानेष्यन्ति चेत्सौविध्यं भविष्यति। गमनागमनसूचनां यथाशीघ्रम् ईमेल द्वारा vaidikvidvatparishad@gmail.com संकेत वा SMS द्वारा वा दूरभाषामाध्यमेन वा (संपर्क संख्या ९४६८१५५२१९ आचार्य-रवीन्द्रः, ९४१६४८८२६२ आचार्य-वेदव्रतः) सूचयेत्। **१०.** 'चर्चा' शब्देन सिद्धान्तमतभेदेषु पक्षप्रतिपक्षाभ्यां वादो गृह्यते। 'विषयप्रस्तुति' शब्देन कस्यापि दुर्गमविषयस्य सरलीकृत्य प्रस्तुतिः। तदर्थं प्रायः १५ कलाः समयो दीयते। तत्पश्चात् प्रायः तावान् एव समयः शंका-समाधानार्थं दीयते। **११.** उपरोक्तरीत्या चर्चार्थं विषयप्रस्तुत्यर्थं च विषया आमन्त्रयन्ते। विषयप्रेषणार्थं अन्तिमा तिथिः ३०.०५.२०१३ भविष्यति। विषयान् ईमेल द्वारा वा पत्र द्वारा वा प्रेषयेयुः। पत्रसंकेतः-आचार्य-वेदव्रतः श्रुतिविज्ञान-आचार्यकुलम्, ग्राम-छपरा, पो-जन्धेडी, शाहबाद मारकंडा, जिला-कुरुक्षेत्र, हरियाणा-१३६१३५ **१२.** स्वीकृतविषयेषु चर्चार्थं सप्रमाणं स्वपक्षः विषयप्रस्तुत्यर्थं च स्वविषयस्य सारसंक्षेपः प्रेषणीयो भविष्यति। तदर्थं अन्तिमा तिथिः २०.०६.२०१३ भविष्यति।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

सांस्कृतिक पतन

-राजेन्द्र प्रसाद आर्य

२ फरवरी १८३५ को लार्ड मेकाले ने ब्रिटिश संसद में एक वक्तव्य दिया था जो इस प्रकार है-

''मैंने पूरे भारतवर्ष में चारों ओर भ्रमण किया है और अपने भ्रमण काल के दौरान हमने एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं देखा जो भिखारी अथवा चोर हो, इस देश में इतनी सम्पदा है यहाँ के लोगों का चरित्र इतना ऊँचा है और लोगों में इतनी योग्यता है कि मैं नहीं समझता कि इन्हें गुलाम बनाया जा सकता जब तक कि इस देश की रीढ़ की हड्डी को तोड़ नहीं दिया जाए, जो इस देश की आध्यात्मिक व पैतृक सम्पत्ति है, और इसलिए मैं प्रस्ताव रखता हूँ कि उसकी प्राचीन शिक्षा प्रणाली तथा उसकी संस्कृति को बदल दें ताकि वह यह सोचने लगे कि जो कुछ विदेशी व आंग्ल है वह उनसे अधिक महान है। इस प्रकार वे अपना स्वाभिमान और अपनी स्वाभाविक संस्कृति को खो देंगे और सचमुच हमारी इच्छानुसार हमारे गुलाम बन जायेंगे।''

अपने इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु एक अंग्रेज अफसर राबर्ट क्लाइव ने १७६० ई. में कोलकाता में गायों की हत्या हेतु एक कत्लखाना खुलवाया, जबकि मुगलकाल में भी इस देश में गोहत्या नहीं होती थी, और इस एक कत्लखाना से बढ़कर अंग्रेजों के शासनकाल में कुल ३०० कत्लखाने खुल गये और आज जब हमारी अपनी सरकार है तो इस समय इस देश में हजारों की संख्या में रजिस्टर्ड कत्लखाने हैं, शायद ३६०००। और भारत गोमांस निर्यात करने वाला प्रमुख देश बनकर ढेरों सारी विदेशी मुद्राएँ अर्जित कर रहा है। एक आकलन के मुताबिक इस देश में प्रतिवर्ष लगभग १ करोड़ गायों की हत्या की जा रही है, और लगभग इतनी ही गायें बंग्लादेश को भेजी जा रही है। वही दूसरी ओर स्थिति यह है कि दूध के अभाव में बच्चे कुपोषण के शिकार हो रहे हैं। इस देश में प्रत्येक १ मिनट में ५ वर्ष तक के ३ बच्चे की मौत कुपोषण के कारण हो जाती है, अर्थात् प्रत्येक १ घण्टे में १८० और प्रतिदिन लगभग ४३२० बच्चे।

दूसरा काम राबर्ट क्लाइव ने हमारे नैतिक पतन के उद्देश्य से कोलकाता में ही एक विदेशी शराब की दुकान खुलवाई, इसके पहले अंग्रेज लोग ही सिर्फ अपने ही वास्ते विदेश से इसे मँगवाते थे। इस समय इस देश में लगभग ३-४ लाख तक विदेशी शराब की दुकाने हैं, जिससे करोड़ों लोग शराब खरीदकर अपना जीवन और जवानी दोनों ही बर्बाद कर रहे हैं। इस शराब की वजह से लाखों घर बर्बाद हो चुके हैं, और लाखों लोग बिमारियों से ग्रस्त होकर असमय ही मृत्यु को प्राप्त कर चुके हैं।

एक रिपोर्ट के मुताबिक इस देश में प्रतिवर्ष लगभग १ लाख ४० हजार लोग सड़क दुर्घटनाओं में मारे जाते हैं, जिसका मुख्य कारण होता है शराब।

अभी-अभी होली में सिर्फ उत्तर बिहार में ५८ व्यक्ति सड़क दुर्घटनाओं में मारे गये हैं वहीं ५०० लोग गम्भीर रूप से घायल हुए जिसका कारण भी रहा है शराब, पता नहीं पूरे देश की स्थिति क्या रही होगी?

अंग्रेजों ने हमारे नैतिक पतन के ही उद्देश्य से एक और काम करके अपनी सारी हदें ही पार कर दी है और वह है कोलकाता में ही एक वेश्यालय की स्थापना और इस वेश्यालय में करीब २०० महिलाओं को जबरन इस पेशे में उतारा गया। आज इसका स्वरूप इतना विशाल हो गया है कि इस देश में इस समय करीब २० लाख से भी अधिक वेश्यायें हैं और कॉलगर्ल्स की संख्या तो अलग है सोचा जा सकता है कि राबर्ट क्लाइव को कितनी सफलता मिली है अपनी मंसूबों में। आज इस देश में ५५ लाख से भी अधिक लोग एड्स से ग्रस्त होकर जीवन और मृत्यु से संघर्ष कर रहे हैं।

आज वास्तव में हमारी सनातन वैदिक संस्कृति को नष्ट कर अंग्रेजों ने हमारी रीढ़ की हड्डी ही तोड़ डाली है, तभी तो हमें अपना कुछ भी अच्छा नहीं लगता और विदेशी चीजें हमें श्रेष्ठकर लगती है, जिस वजह से तेजी से हम उसे अपना रहे हैं। विदेशी पहनावे और खान-पान की ही सिर्फ बात नहीं है, हमें विदेशी भाषा, विदेशी शराब, विदेशी सभ्यता, विदेशी कारें, विदेशी कुत्ते और यदि हम यह कहें तो शायद गलत नहीं होगा कि अगर विदेशी मेम हर किसी को उपलब्ध हो सके तो देशी बहुओं को कोई पूछेगा भी नहीं। विदेशी सभ्यता के आकर्षण ने हमें प्रायः सभी क्षेत्रों में प्रभावित किया है। जरा इसे देखें-

१. खान-पान और पहनावा-विदेशी सभ्यता ने सर्वप्रथम हमारे खान-पान और पहनावें पर डाका डाला है हम अपने पारम्परिक पहनावे को छोड़कर विदेशी पहनावे सूट-बूट पहनने में गौरवान्वित होते हैं। लड़कियों पर तो इसका प्रभाव इस प्रकार आ रहा है कि नारी गरिमा पर प्रश्नचिह्न ही लग रहा है। उत्तेजक, भड़काऊ तंग और फूहड़ पहनावे में ये बालाएँ खुलेआम नग्नता और अश्लीलता का प्रदर्शन कर रही हैं। पिछले कुछ वर्षों में यौन अपराधों में जो बेतहाशा वृद्धि हुई है उसका एक कारण अश्लीलता भी है इसे देखकर लगता है कि इनके अभिभावकों की भी इसमें मौन स्वीकृति है, अथवा वे मजबूर हैं।

खान-पान में भी हमें अपना पारम्परिक सात्त्विक आहार रास नहीं आता है और माँस, मछली, अंडा, मुर्गी और शराब को हम तेजी से अपना रहे हैं। इस अभक्ष्य आहार और शराब के सेवन की वजह से ही हमारी रोग निरोधक क्षमता तेजी से घट

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

रही है, जिस वजह से हम रोगग्रस्त होकर मृत्यु को प्राप्त हो रहे हैं। आज ६०-६५ में ही लोग जाने की तैयारी करने लगते हैं और ७०-७५ वर्ष में चले भी जाते हैं जबकि ईश्वर ने हमें १०० वर्ष जीने के लिए अधिकृत किया है। वर्तमान जीवन-शैली में अन्तिम कुछ वर्ष हम घर में अथवा अस्पताल में मृत्यु शैय्या पर गुजारते हैं।

२. भाषा पर कुठाराघात-आज अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करने में हम अपनी शान समझते हैं, अगर अंग्रेजी हमें ठीक से नहीं आती तो अंग्रेजी शब्दों का हम अधिक से अधिक प्रयोग कर अपने को अधिक आधुनिक समझते-समझाते हैं। यह अंग्रेजी शिक्षा का ही प्रभाव है कि बच्चे भी जिन्दा बाप को डेड और माँ को मम्मी से सम्बोधित करते हैं। अंकल और आंटी में ही बच्चे सारे रिश्ते-नाते को समेट देते हैं। इससे ज्यादा अपनी राष्ट्रभाषा का अपमान और क्या हो सकता है कि हमारे संसद में भी अंग्रेजी का बोलबाला है और हमारे प्रधानमन्त्री भी लोगों को अंग्रेजी में सम्बोधित करते हैं। यह सब मेकाले की शिक्षा प्रणाली का ही परिणाम है।

३. सामाजिक सद्भाव और शान्ति पर प्रभाव-जब हमारी संस्कृति ही नष्ट हो गई है, तो हमारे शुभ-संस्कार कहाँ से बचेंगे। आज पूरे देश में हत्या, लूट, बलात्कार, किडनैपिंग, रेप और गैंगरेप का जो बाजार गर्म है उसके पीछे का मूल कारण है अपनी संस्कृति से बहुत दूर चले जाना है। आज दिल्ली में हुए रेप इसका ज्वलन्त उदाहरण है। रेप और गैंगरेप का हमारी संस्कृति में कोई स्थान नहीं रहा था।

४. लव का नशा और रिश्ते में कड़वाहट-विपरीत लिंग के प्रति स्वाभाविक आकर्षण होता है पर आज लव का नशा युवाओं में इतना परवान चढ़ गया है कि इसके प्रभाव में तथा विदेशी सभ्यता से प्रेरित होकर युवावर्ग विवाहपूर्व अल्पव्यस्क अवस्था में ही एक दूसरे के आगोश में जाकर अपनी संस्कृति की मर्यादाओं को ही चिढ़ा रहे हैं, मानो हमारे पूर्वज शायद लव करना जानते ही नहीं थे। यह लव के नशा का ही प्रभाव है कि आज लाखों लड़कियाँ कुँवारी माँ बनकर अपनी नाजायज सन्तानों की भ्रूणहत्या का पाप भी कर रही हैं। बहुत जल्द ही जब लव का नशा समाप्त हो जाता है, तो स्थिति डाइवोर्स तक पहुँच जाती है। इन असफल शादियों की वजह से कितनी ही लड़कियों को आत्महत्या कर लेनी पड़ती है, कितनी ही लड़कियाँ परित्यक्त जीवन जी कर अपने भाग्य पर आँसू बहा रही हैं। हमारी संस्कृति में विवाह जीवन भर के लिये होता है न कि आज इसे छोड़ा, उसे पकड़ा, उसे छोड़ा और फिर तीसरे को पकड़ा। इसे जीवन भर प्रयोग करते रहते हैं।

आज विदेशी संस्कृति के रंग में रंगकर हम अपने को इतने आधुनिक और नये समझने लगते हैं कि हमारे माँ-बाप ही पुराने लगने लगते हैं।

५. कर्मकाण्डों पर दुष्प्रभाव-विदेशी संस्कृति के प्रभाव से हमारे पूजा-पाठ और कर्मकाण्ड भी नहीं बचे हैं हमारी संस्कृति में अग्नि का बहुत ही महत्त्व है, हम प्रतिदिन की शुरुआत और सभी संस्कार अग्निहोत्र-यज्ञ से करते थे, पर आज दो संस्कार ही अग्नि के प्रयोग से होते हैं। पहला विवाह के समय अग्नि के फेरे लेना, दूसरा अन्त्येष्टि में अग्नि में भस्म होकर पंचतत्त्व में विलीन होना, शेष सभी संस्कारों एवं पूजा-पाठ के समय में हम अगरबत्ती और मोमबत्ती का ही प्रयोग करते हैं, जिसका न तो कोई धार्मिक महत्त्व है और न ही वैज्ञानिक महत्त्व। जन्मदिन मनाने के समय भी अग्निहोत्र-यज्ञ से नहीं बल्कि मोमबत्ती के द्वारा करते हैं, और वो भी मोमबत्ती जलाकर नहीं बल्कि जलते हुए मोमबत्तियों को बुझाकर।

उपरोक्त सभी प्रयास हमारे सांस्कृतिक पतन के हैं। अत: हम अपने संस्कृति को समझे और इसे ही अपनावें।

-आर्यसमाज, मुजफ्फरपुर, चलभाष-९८३५२०६६८८

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१. २८ मई से ४ जून-**आर्यवीर दल शिविर**, सम्पर्क : ९४१४४३६०३१

२. ६ से १३ जून-**आर्य वीरांगना शिविर**, सम्पर्क : ९४१४४३६०३१

३. १६ से २३ जून-**योग-शिविर**, सम्पर्क : ०१४५-२४६०१६४

४. विद्वद् गोष्ठी-'**आर्यसमाज की यज्ञपद्धति**' तृतीय, (मात्र आमन्त्रित विशेषज्ञों के लिए), २७ से ३० जून २०१३, आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, नर्मदापुरम् होशंगाबाद, मध्यप्रदेश।

५. २० से २७ अक्टूबर-**योग-शिविर**, सम्पर्क : ०१४५-२४६०१६४

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित

आध्यात्मिक गोष्ठी-आर्यसमाज की ध्यान पद्धति-३

(महर्षि दयानन्द, वेद व आर्ष ग्रन्थों के अनुसार)

१३-१५ मार्च २०१३, ऋषि उद्यान, अजमेर **-सत्यजित्**

परोपकारिणी सभा द्वारा 'आर्य समाज की ध्यान पद्धति' इस विषय को लेकर यह तीसरी गोष्ठी सम्पन्न हुई। पूर्व की दो गोष्ठियों में १५ मिनट की ध्यान-पद्धति का प्रारूप निर्धारित हो चुका था व ३० मिनट की ध्यान-पद्धति के प्रारूप पर भी पर्याप्त चर्चा हो चुकी थी। इस तृतीय गोष्ठी में इससे आगे के निम्नलिखित विषय रहे।

१. १५ मिनट की ध्यान-पद्धति के निर्धारित प्रारूप की प्रायोगिक प्रस्तुतियाँ हुईं व उनमें से प्रायोगिक स्वरूप का निर्धारण किया गया।

२. ३० मिनट की ध्यान-पद्धति का प्रारूप निर्धारित किया गया। इसके अनुरूप ३० मिनट के ध्यान की प्रायोगिक प्रस्तुतियाँ दी गईं व उनमें से प्रायोगिक स्वरूप का निर्धारण किया गया।

३. १५ मिनट का ध्यान करवाने से पूर्व यथावसर १०-१५ मिनट में ध्यान के लाभ व इस वैदिक-ध्यान पद्धति से परिचित करवाने हेतु भूमिका रूप में क्या-क्या बताया जाये, इस पर विचार रखे गये व भूमिका का प्रारूप निश्चित किया गया। इसकी प्रायोगिक प्रस्तुतियाँ भी दी गईं।

४. ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर (११-१७ अप्रैल २०१३) में क्या-क्या व कैसे प्रशिक्षण दिया जाए, प्रशिक्षकों की परीक्षा (ध्यान की प्रायोगिक प्रस्तुति), प्रमाण-पत्र आदि के विषय में विचार-विमर्श के बाद निर्धारण किया गया।

५. अगली आध्यात्मिक गोष्ठी का विषय व समय निर्धारित किया गया। अगली आध्यात्मिक गोष्ठी ११ से १५ मार्च २०१४ को ऋषि उद्यान, अजमेर में होगी व विषय है 'वैदिक-संध्या'। इसमें १ घड़ी (२४ मिनट) व १ घण्टे को आधार बनाकर वैदिक-संध्या के सैद्धान्तिक व प्रायोगिक स्वरूप पर परिचर्चा व प्रायोगिक प्रस्तुति के बाद निर्धारित करने का प्रयास किया जायेगा।

इस गोष्ठी व ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर के प्रायोगिक अनुभव के बाद वैदिक ध्यान-पद्धति का जो स्वरूप निर्धारित हुआ है, वह इस प्रकार है-

वैदिक-ध्यान (१५ मिनट का संक्षिप्त प्रारूप)

१. स्थिर आसन (शरीर की शिथिलता, मन की शान्ति)	-१ मि.	(क) ३ मि.
२. ओ३म् व गायत्री मन्त्र	-१ मि.	
३. संकल्प-(आत्मचिन्तन)	-१ मि.	
४. दीर्घ-श्वसन	-१ मि.	(ख) ४ मि.
५. बाह्य-प्राणायाम (ओंकार सहित)	-३ मि.	
६. प्रत्याहार (इन्द्रिय निग्रह)	-१ मि.	(ग) ७ मि.
७. धारणा	-१ मि.	
८. ध्यान=ओ३म्+अर्थ चिन्तन (उच्च स्वर - सर्वव्यापक, मन्द स्वर - सर्वरक्षक, मौन - निर्विकार)	-५ मि.	(घ) १ मि.
९. समर्पण-धन्यवाद-कृतज्ञता	-१ मि.	

वैदिक-ध्यान (१५ मिनट का विस्तृत प्रारूप)

१. **स्थिर आसन (शरीर की शिथिलता, मन की शान्ति)**- स्थिरता एवं सुखपूर्वक बैठना। सुखासन, स्वस्तिकासन, सिद्धासन, पद्मासन या अन्य किसी ऐसे आसन में बैठना जिसमें स्थिरता भी रह सके व वह सुख-पूर्वक (कष्ट रहित) भी हो। आसन लगा कर संपूर्ण शरीर को शिथिल करना है, तनाव-खिंचाव रहित करना है, मुख पर प्रसन्नता और मन में शान्ति का भाव लाना है। इससे आसन अधिक स्थिर व अधिक सुखपूर्वक हो सकेगा। -**१ मिनट**

२. **ओ३म् व गायत्री मन्त्र**- ओ३म् के दीर्घ उच्चारण के बाद धीमी गति से गायत्री-मन्त्र का उच्चारण। इसे इच्छानुसार मध्यम स्वर में, मन्द स्वर में या मानसिक रूप से (जिससे भी अच्छी अनुभूति व एकाग्रता होती हो) कर सकते हैं। -**१ मिनट**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

३. संकल्प– हे परमात्मन्! मैं विविध दु:खों की निवृत्ति और आनन्द की प्राप्ति के लिए अपने पूर्ण सामर्थ्य से आपका ध्यान करने के लिए आपकी शरण में आया हूँ। मुझे इस कार्य में सफलता मिले, ऐसी कृपा कीजिए। –**१ मिनट**

४. दीर्घ-श्वसन– नासिका से लम्बा गहरा लयबद्ध श्वास सहजता से लेना व छोड़ना। –**१ मिनट**

५. बाह्य-प्राणायाम (ओंकार सहित)– पूरा श्वास भरना, मूलेन्द्रिय को संकुचित कर उसे ऊपर की ओर खींचकर, श्वास को बलपूर्वक एक बार में ही पूरा बाहर फेंकना (किन्तु झटका न लगे), और उसे बाहर ही रोक देना। नाभि के नीचे के भाग को पीछे थोड़ा ऊपर की ओर आकर्षित करना और पेट को सिकोड़ कर पीठ की ओर दबाए रखना। साथ ही मन में ओम् का जप करते रहना। यथाशक्ति श्वास को बाहर ही रोके रखना। फिर पेट व मूलेन्द्रिय को ढीला छोड़ते हुए धीरे से (बिना झटके के) श्वास को अन्दर भरना। एक-दो सामान्य श्वास लेकर पुन: बल पूर्वक उसे बाहर फेंक कर पूर्ववत् बाहर ही रोके रखना। इस प्रकार तीन प्राणायाम करना। तत्पश्चात् कुछ समय तक शान्त बैठना। –**३ मिनट**

६. प्रत्याहार (इन्द्रियों को विषयों से हटाना)– शरीर को शिथिल रखते हुए, मन को निराकार सर्वव्यापक परमेश्वर के स्मरण में लगाना। यदि इन्द्रियों का शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध आदि कोई विषय मन में आ ही जाता है, तो उसे चिंतन का विषय न बनाकर मन को परमेश्वर में ही लगाये रखना। मन से ईश्वर-चिंतन करते रहने पर इन्द्रियों की विषयों में प्रवृत्त होने की वृत्ति शान्त हो जायेगी।–**१ मिनट**

७. धारणा– नाभि, हृदय, कण्ठ, जिह्वाग्र, भ्रूमध्य, मूर्धा आदि शरीर के किसी एक स्थान पर अन्दर ही अन्दर मन को एकाग्र करना। मन को यहीं टिकाये रखना। –**१ मिनट**

८. ध्यान=ओ३म् (प्रणव जप)+अर्थ चिन्तन (सर्वव्यापक, सर्वरक्षक, निर्विकार)– नासिका से धीमा लम्बा और गहरा लयबद्ध श्वास लेकर इसी तरह छोड़ते हुए 'ओ३म्' का ऊंचे-स्वर से मधुर उच्चारण, साथ में ईश्वर के **सर्वव्यापक** अर्थ की भावना। दूसरी बार मन्द-स्वर से मधुर उपांशु उच्चारण, साथ में ईश्वर के **सर्वरक्षक** अर्थ की भावना। तीसरी बार 'ओ३म्' का श्रद्धापूर्वक मानसिक-जप करना, साथ में ईश्वर के **निर्विकार** अर्थ की भावना। परमेश्वर को सर्वव्यापक, सर्वरक्षक, निर्विकार रूप में विचारना-स्वीकारना। एक समय में इनमें से किसी एक अर्थ का विचार रखना।

इसी विचार को अधिक गम्भीरता व प्रेम-भक्ति से करते हुए आत्मा को निराकार, सर्वव्यापक, सच्चिदानन्द स्वरूप परमात्मा में निमग्न अनुभव करना। निर्विकार परमात्मा की सन्निधि में स्वयं को निर्विकार करते जाना, निर्विकार रहने की प्रार्थना करना। अपने में शुद्ध, पवित्र, शान्त-स्थिति को अनुभव करना।–**५ मिनट**

९. समर्पण-धन्यवाद-कृतज्ञता– 'हे परमेश्वर दयानिधे! आपकी कृपा से जप, उपासना रूप कर्मों को करते हुए हम धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को शीघ्र प्राप्त होवें'। इसके बाद कुछ क्षण अन्तर्मुखी रहते हुए **गहन व पूर्ण मौन**। अन्त में ईश्वर को धन्यवाद करके एक बार '**ओ३म्**' व तीन बार '**शान्ति**' का लम्बा धीमा मधुर उच्चारण। –**१ मिनट**

वैदिक-ध्यान (३० मिनट का संक्षिप्त प्रारूप)

१. स्थिर आसन (शरीर की शिथिलता, मन की शान्ति)	–०२ मि.	(क) ०४ मि.
२. ओ३म् व गायत्री मन्त्र	–०१ मि.	
३. संकल्प-(आत्मचिन्तन)	–०१ मि.	
४. दीर्घ-श्वसन	–०२ मि.	(ख) ०५ मि.
५. बाह्य-प्राणायाम (ओंकार सहित)	–०३ मि.	
६. प्रत्याहार (इन्द्रिय निग्रह)	–०३ मि.	(ग) १७ मि.
७. धारणा	–०२ मि.	
८. ध्यान=ओ३म्+अर्थ चिन्तन		
प्रणव जप (क) उच्च स्वर से ३ बार -सर्वव्यापक	–०२ मि.	
(ख) मन्द स्वर से (उपांशु) ३ बार-सर्वज्ञ	–०२ मि.	
(ग) मौन-सर्वरक्षक, न्यायकारी, निर्विकार, आनन्दस्वरूप	–०८ मि.	
	–१२मि.	
९. मौन	–०२ मि.	(घ) ०४ मि.
१०. धन्यवाद-कृतज्ञता	–०१ मि.	
११. ध्यान से बाहर आना	–०१ मि.	

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

वैदिक-ध्यान (३० मिनट का विस्तृत प्रारूप)

१. **स्थिर आसन (शरीर की शिथिलता, मन की शान्ति)**- स्थिरता एवं सुखपूर्वक बैठना। सुखासन, स्वस्तिकासन, सिद्धासन, पद्मासन या अन्य किसी ऐसे आसन में बैठना जिसमें स्थिरता भी रह सके व वह सुख-पूर्वक (कष्ट रहित) भी हो। आसन लगा कर संपूर्ण शरीर को शिथिल करना है, तनाव-खिंचाव रहित करना है, मुख पर प्रसन्नता और मन में शान्ति का भाव लाना है। इससे आसन अधिक स्थिर व अधिक सुखपूर्वक हो सकेगा। -**२ मिनट**

२. **ओ३म् व गायत्री मन्त्र**- ओ३म् के दीर्घ उच्चारण के बाद धीमी गति से गायत्री-मन्त्र का उच्चारण। इसे इच्छानुसार मध्यम स्वर में, मन्द स्वर में या मानसिक रूप से (जिससे भी अच्छी अनुभूति व एकाग्रता होती हो) कर सकते हैं। -**१ मिनट**

३. **संकल्प**- हे परमात्मन्! मैं विविध दु:खों की निवृत्ति और आनन्द की प्राप्ति के लिए अपने पूर्ण सामर्थ्य से आपका ध्यान करने के लिए आपकी शरण में आया हूँ। मुझे इस कार्य में सफलता मिले, ऐसी कृपा कीजिए। -**१ मिनट**

४. **दीर्घ-श्वसन**- नासिका से लम्बा गहरा लयबद्ध श्वास सहजता से लेना व छोड़ना। -**२ मिनट**

५. **बाह्य-प्राणायाम (ओंकार सहित)**- पूरा श्वास भरना, मूलेन्द्रिय को संकुचित कर उसे ऊपर की ओर खींचकर, श्वास को बलपूर्वक एक बार में ही पूरा बाहर फेंकना (किन्तु झटका न लगे), और उसे बाहर ही रोक देना। नाभि के नीचे के भाग को पीछे थोड़ा ऊपर की ओर आकर्षित करना और पेट को सिकोड़ कर पीठ की ओर दबाए रखना। साथ ही मन में ओम् का जप करते रहना। यथाशक्ति श्वास को बाहर ही रोके रखना। फिर पेट व मूलेन्द्रिय को ढीला छोड़ते हुए धीरे से (बिना झटके के) श्वास को अन्दर भरना। एक-दो सामान्य श्वास लेकर पुन: बल पूर्वक उसे बाहर फेंक कर पूर्ववत् बाहर ही रोके रखना। इस प्रकार तीन प्राणायाम करना। कुछ समय तक शान्त बैठना। -**३ मिनट**

६. **प्रत्याहार (इन्द्रियों को विषयों से हटाना)**- शरीर को शिथिल रखते हुए, मन को निराकार सर्वव्यापक परमेश्वर के स्मरण में लगाना। यदि इन्द्रियों का शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध आदि कोई विषय मन में आ ही जाता है, तो मन को वहाँ से हटाकर पुन: परमेश्वर में ही लगाना। मन से ईश्वर-चिंतन करते रहने पर इन्द्रियों की विषयों में प्रवृत्त होने की वृत्ति शान्त हो जायेगी। -**३ मिनट**

७. **धारणा**- नाभि, हृदय, कण्ठ, भ्रूमध्य, मूर्धा आदि शरीर के किसी एक स्थान पर अन्दर ही अन्दर मन को एकाग्र करना। मन को यहीं टिकाये रखना।-**२ मिनट**

८. **ध्यान-ओ३म्+अर्थ चिन्तन**- श्रद्धा सहित प्रणव जप-

(**क**) **उच्च स्वर से**- नासिका से धीमा, लम्बा और गहरा लयबद्ध श्वास लेकर, इसी तरह छोड़ते हुए ओ३म् का ऊंचे-स्वर से मधुर उच्चारण, ३ बार। जप के साथ ईश्वर के **सर्वव्यापक** स्वरूप की भावना। समस्त जगत् को व स्वयं निराकार अणु-स्वरूप चेतन आत्मा को ईश्वर में डूबे हुए की भावना बनाना। -**२ मिनट**

(**ख**) **मन्द स्वर से (उपांशु)**- नासिका से धीमा, लम्बा और गहरा लयबद्ध श्वास लेकर, इसी तरह छोड़ते हुए ओ३म् का मन्द-स्वर से मधुर उच्चारण, ३ बार। जप के साथ ईश्वर के **सर्वज्ञ** स्वरूप की भावना। ईश्वर समस्त जगत् को व मुझ निराकार अणु-स्वरूप आत्मा को यथावत् जानता है। इस समय भी वह मुझे भली-भांति जान रहा है, मेरे प्रत्येक विचार व भाव को यथावत् जान रहा है।-**२ मिनट**

(**ग**) **मानसिक**- ओ३म् का मानसिक जप। जप के साथ ईश्वर के निम्नलिखित अर्थों की क्रमश: भावना।

(१) **सर्वरक्षक**- ईश्वर सदा, सर्वत्र, सबकी रक्षा कर रहा है, मेरी भी कर रहा है। ईश्वर के प्रति कृतज्ञता का भाव।

(२) **न्यायकारी**- ईश्वर सबके अच्छे-बुरे कर्मों का उचित न्याय करता है। ईश्वर के न्याय की सहर्ष स्वीकार्यता का भाव।

(३) **निर्विकार**- ईश्वर अज्ञान-राग-द्वेष आदि समस्त विकारों से रहित पूर्ण निर्मल-अत्यन्त पवित्र है। मुझे भी इसी प्रकार निर्विकार बनना है।

(४) **आनन्द स्वरूप**- आनन्द से परिपूर्ण, तृप्त, दु:ख रहित ईश्वर की भावना। ईश्वर के आनन्द की कामना, प्रार्थना।- **२ मि.×४=८ मिनट**

९. **मौन**- अन्तर्मुखी रहते हुए गहन व पूर्ण मौन। ध्यान से प्राप्त मानसिक स्थिति का अनुभव। शान्ति, सन्तोष, स्थिरता, सात्विकता का अनुभव। ध्यान के अनुभव की दृढ़ स्मृति बनाना। -**२ मिनट**

१०. **समर्पण-धन्यवाद-कृतज्ञता**- 'हे परमेश्वर दयानिधे! आपकी कृपा से जप, उपासना रूप कर्मों को करते हुए हम धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को शीघ्र प्राप्त होवें'। अन्त में ईश्वर को धन्यवाद करके एक बार 'ओ३म्' व तीन बार 'शान्ति' का लम्बा धीमा मधुर उच्चारण। -**१ मिनट**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

११. ध्यान से बाहर आना– मन को श्वास पर लाना, श्वास की स्थिति का अनुभव। फिर मन को शरीर पर लाना, शरीर की स्थिति का अनुभव। हाथ की अंगुलियों में धीरे–धीरे गति देना। फिर हाथों को धीरे–धीरे भिन्न स्थान पर ले जाना। पैर की अंगुलियों में धीरे–धीरे गति देना। फिर पंजे–टखने–घुटने को धीरे–धीरे गति देकर सक्रिय करना। मानसिक स्थिति बनाये रखते हुए नेत्रों को धीरे से थोड़ा खोलना–**१ मिनट**

समस्या का हल–प्राकृतिक स्थल

अगली बार जब भी आप किसी मुश्किल का सामना करें तो बिलकुल चिंता ना करें, क्योंकि इसका जवाब आपके घर के बाग या किसी भी बाग में हो सकता है। पहला काम यह करें कि लैपटॉप घर पर छोड़ दें, स्मार्ट फोन बंद कर दें और प्रकृति के सान्निध्य में पैदल घूमें, क्योंकि एक शोध से पता चला है कि इससे आपके मस्तिष्क की क्षमता ५० प्रतिशत तक बढ़ सकती है। यूटाह युनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने पता लगाया है कि वयस्क अगर तीन–चार दिन किसी प्राकृतिक स्थान में आधुनिक तकनीक से दूर रहकर बिताएं तो वे रचनात्मक क्षेत्र में अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं। पहली बार वैज्ञानिक तरीके से यह सिद्ध हुआ है कि किसी पार्क या जंगल में समय बिताने से समस्या हल करने की क्षमता बढ़ सकती है। शोधकर्ता डेविड स्ट्रेचर ने कहा कि ''इससे स्पष्ट होता है कि व्यस्त कार्यक्रम से छुट्टी लेकर किसी प्राकृतिक स्थल में समय बिताने से नई स्फूर्ति का संचार क्यों होता है।''

सौजन्य–राष्ट्रदूत–३०.१२.२०१२

कृपया ''परोपकारी'' पाक्षिक शुल्क, अन्य दान व वैदिक–पुस्तकालय के भुगतान इलेक्ट्रोनिक मनीऑर्डर से ना भेजें

निवेदन है कि ई.एम.ओ. द्वारा ''परोपकारी'' शुल्क, अन्य दान व वैदिक पुस्तकालय के पुस्तकों के भुगतान भेजने का कष्ट न करें, क्योंकि इस फार्म में न तो ग्राहक संख्या का उल्लेख होता है और न ही पैसे भेजने के उद्देश्य का। सभा कर्मचारी उचित खाता शीर्ष में राशि नहीं जमा कर पाते हैं क्योंकि पैसे भिजवाने का उद्देश्य ज्ञात नहीं हो पाता है। इस मनीऑर्डर फार्म में संदेश का स्थान रिक्त रहता है। कृपया साधारण एम.ओ. द्वारा ही राशि भिजवाने का कष्ट करें तथा फार्म में संलग्न समाचार वाली स्लिप पर ग्राहक संख्या, दान सम्बन्धी सूचना व पुस्तकों के विवरण का अवश्य उल्लेख करें। **यदि ई.एम.ओ. से भेजना है तो संपूर्ण स्पष्ट विवरण लिखा पत्र भी अलग से अवश्य प्रेषित करें।** **–व्यवस्थापक**

शिविर–सूचना

१. **शिविर नाम**–अष्टांग योग प्रायोगिक प्रशिक्षण शिविर **दिनांक**–२३–३० जून २०१३ पूर्ण आवासीय।

२. **स्थल**–संस्कार भारती पी.जी. कॉलेज, अजमेर रोड़, बगरू, जयपुर (राज.) पिन–३०३००७।

३. **प्रशिक्षक**–आचार्य सानन्द (ऋषि उद्यान, अजमेर), आचार्य कर्मवीर (ऋषि उद्यान, अजमेर), रवि आर्य, दिल्ली।

४. **आयोजक**–श्री अशोक आर्य, जयपुर।

सम्पर्क सूत्र–आचार्य सानन्द

०९९२८४८६५७५–दोपहर: १–२ बजे, ०८३०२२१२३५५ रात्रि: ९–१० बजे।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

पुस्तक-परिचय

१. नाम-नारी दुष्कर्मियों पर वेदों द्वारा दण्ड, **लेखक**-श्री स्वामी रामस्वरूप (योगाचार्य), **मूल्य**-२५.००, **पृष्ठ संख्या**-३८, **प्रकाशक**-वेदमन्दिर, टीका लेहसर योल बाजार, योल केम्प, जिला-कांगड़ा, हि.प्र.।

आज सम्पूर्ण भारत में अराजकता का ताण्डव नृत्य हो रहा है। बहन-बेटियों के साथ दुष्कर्म हो रहा है। मानव ने मानवता को अध:पतन में धकेल दिया है। प्रतिदिन दूरदर्शन, समाचार-पत्र आदि में ये घटनाएँ सभी के कान खड़े करती है। जघन्य अपराध, हत्या, पशुता का व्यवहार आदि किसका प्रतीक है?

दिल्ली में १६ दिसम्बर २०१२ को चलती बस में युवती से सामूहिक बलात्कार किया उसके बाद दयाहीन होकर उसे बस से फैंक दिया गया वह क्रूरता से काल का ग्रास बन गई। विरोध होने पर सरकार ने घाव पर मरहम पट्टी का काम किया। अब यह देखना है कि ऊंट किस करवट बैठता है? इस घटना के बाद भी आये दिन भोली-भाली कन्याओं, नारी यहाँ तक कि वृद्धाओं पर भी घिनौनी घटनाएँ हो रही है। कानून का भय नहीं है।

प्राचीन भारतीय संस्कृति परम्परा में कुदृष्टि पाप का द्योतक थी। दण्ड प्रक्रिया कठोर थी। लेखक ने वेदों में वर्णित दण्डों पर लघु पुस्तिका में भावाभिव्यक्ति दी है। वैदिक संस्कृति में देश के राजा को प्रजा के धर्म की रक्षा करना अनिवार्य है।

यजुर्वेद मन्त्र २३/२२ में-धार्मिक, कर्मनिष्ठ, चरित्रवान् और ईश्वर भक्त राजा के अभाव में, जब राजा न्याय से प्रजा की रक्षा न करे और प्रजा से कर लेवें तो उस राष्ट्र की जनता दु:खी व निर्बल हो जाती है। राजनेता जेड श्रेणी की सुरक्षा में तथा जनता बेसहारा-यह घोर अन्याय है।

यजुर्वेद मन्त्र १०/३३-राजा/नेता श्रेष्ठों की दुष्टों से रक्षा के लिए हो।

अथर्ववेद २०/८/७-हे राजन्! पहले समान ही हमारी रक्षा कर।

वाल्मीकि रामायण-हे बाली! अब आप पश्चाताप न करें। आपको जो प्राणदण्ड दिया गया है। यह धर्म की रक्षा के लिए ही दिया गया है। वैदिक-काल में नारी का अपमान सहन नहीं किया जाता था। 'स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ'

ऋग्. ८/३३/१५ नारी को ब्रह्मा का सर्वोत्तम रूप दिया है। लघु पुस्तिका में रामायण, महाभारत, वेदों द्वारा कहानी कथनों से समझाया है। पुस्तक उपयोगी है भाषा की अशुद्धियाँ यदा-कदा हैं। पाठक अवश्य पढें, पढ़ावें। **-देवमुनि, ऋषि उद्यान, अजमेर।**

२. नाम-शिशु निर्माण बाल शिक्षा, **लेखक**-स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, **प्रकाशक**-आर्ष गुरुकुल न्यास, वडलूर, कामारेड्डि, आन्ध्रप्रदेश, ५०३१११, **मूल्य**-३०० रु. मात्र, **दूरभाष**-०८४६८२०१२०१

किसी देश की संस्कृति, सभ्यता, इतिहास, देश का प्राण हुआ करते हैं। इन्हीं के बल पर देश खड़ा रहता है, बढ़ता है, प्रगति करता है। देश अपनी संस्कृति, सभ्यता, इतिहास के बिना दूसरे देश की सभ्यता, संस्कृति, इतिहास को अच्छा मानकर अपना लेता है और ऐसा करने पर वह देश पतन को प्राप्त होता है। जिस देश के निवासी अपने देश के इतिहास, संस्कृति पर गौरव की अनुभूति करते हैं वह देश निश्चित रूप से महान बनता चला जाता है और इसके विपरीत यदि होता है, तो देश गर्त में चला जाता है।

देश की सन्तति अपने देश की संस्कृति, सभ्यता, इतिहास पर गौरव तब करती है जब उसकी प्रारम्भ से अर्थात् घर पर माता-पिता से और विद्यालय में प्रथम कक्षा से इसके महत्त्व की शिक्षा दी जाती है।

आज वर्तमान में हमारे भारत की शिक्षा पद्धति का लगभग-लगभग विदेशीकरण हो गया है। अंग्रेज ने भारत की संस्कृति को नष्ट कर अपनी संस्कृति को लाने के लिए बड़े षड्यन्त्र से काम लिया। जब अंग्रेज ने यहाँ के लोगों को देखा कि ये लोग अपने देश, संस्कृति के प्रति अनुरक्त क्यों हैं? तो इन्होंने पाया यहाँ की विशिष्ट शिक्षा पद्धति। यहाँ का आचार्य (अध्यापक) प्रथम से ही अपने शिष्य के अन्दर ईश्वर भक्ति, धर्म भक्ति, राष्ट्र भक्ति, मातृ-पितृ भक्ति, गुरु भक्ति को बड़े ही सहजता से प्रवेश करा देता था। अंग्रेज ने इसके विपरीत एक योजना बनाई यहाँ की शिक्षा पद्धति को बदलने की, इसके लिए नियुक्त किया गया लार्ड मेकाले को। मेकाले ने इस देश के लिए शिक्षा पद्धति बदलने के बाद अपने पिता को पत्र लिखा-

''प्रिय पिताजी! हमारे अंग्रेजी स्कूल अद्भुत ढङ्ग से सफल हो रहे हैं.....इस शिक्षा का प्रभाव हिन्दुओं पर बहुत अधिक हुआ है। कोई हिन्दू, जिसने अंग्रेजी शिक्षा को ग्रहण कर लिया है, तो सच्चे हृदय से अपने मत(धर्म) से सम्बन्ध नहीं रख सकता। कुछ ऐसे हैं जो इस की नीति के रूप में नाम मात्र स्वीकार करते हैं और कुछ तो ईसाईयत को ही स्वीकार करते हैं। यह मेरा विश्वास है कि यदि हमारी शिक्षा नीति पर आचरण किया गया, तो आगामी तीस वर्ष में बंगाल के सम्भ्रान्त परिवारों में एक भी मूर्तिपूजक (ब्राह्मण) नहीं रहेगा। बिना मत परिवर्तन कराए अथवा उनकी मजहबी स्वतन्त्रता में किसी प्रकार का हस्तक्षेप किये बिना यह सब कुछ हो जायेगा। स्वाभाविक रूप

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

में ज्ञान-प्रसार और विचार-प्रोत्साहन से यह होगा। भावी आशा से मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। **टी.बी. मेकाल''**

(बाल शिक्षा पुस्तक से)

इससे मेकाले की भावना का हमें पता लगता है कि वह अपनी शिक्षा पद्धति से पूर्ण रूप से भारत को ईसाईयत के रंग में रंगना चाहता है।

अंग्रेजों की इस विकृत नियती को देखते हुए हमारे आर्य जगत् के योग्य विद्वान् संन्यासी स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने छोटे बच्चों के लिए 'शिशु निर्माण बाल शिक्षा' पुस्तक की रचना की है। पुस्तक अपने आप में अद्भुत है। अक्षर ज्ञान सिखाने के लिए जो विधि अपनाई है वह प्रसंशनीय है। पहले हम ऊ से ऊन पढ़ते थे अब हम इस पुस्तक से ऊधम सिंह पढ़ेंगे, क से कबूतर पढ़ते थे, अब क से कपिल, कणाद, कण्व आदि ऋषियों को पढेंगे। अस्तु इस बाल शिक्षा पुस्तक प्रथम व द्वितीय भाग में विभक्त हैं। ३९१ के लगभग चित्र हैं, प्रत्येक वर्ण की पहचान के लिए उस वर्ण सम्बन्धी चार-चार चित्र दिये गये हैं। उन चित्रों में ४७ ऋषियों के, १४ क्रान्तिकारियों के, ५७ वेदादि शास्त्रों के, ५ आयुर्वेदज्ञों के, १६ चक्रवर्ती राजाओं के, २९ एतिहासिक व्यक्तियों के, १६ राजाओं के, २ विश्वप्रसिद्ध भवनों के, १४ विद्वानों के, ६ विदेशियों से देश को बचाने वालों के। १८४ चित्रों के द्वारा ४६ वर्णों का परिज्ञान कराया है। यह पुस्तक यदि पूरे भारत में सभी विद्यालयों में पढ़ाई जाये तो धीरे-धीरे पुन: हमारे देश की आने वाली पीढ़ी अपनी संस्कृति, सभ्यता, इतिहास पर गर्व करने लगेगी और अपने देश के प्रति देशभक्ति से ओतप्रोत हो जायेगी। पुस्तक पूर्ण रूप से रंगीन आकर्षक है। सुन्दर कागज पर सुन्दर मुद्रण है।

पुस्तक प्रत्येक विद्यालय के लिए उपयोगी है। किन्तु निजी विद्यालयों वाले तो इस पुस्तक को अपने पाठ्यक्रम में तुरन्त ही लगा सकते हैं। माता-पिता पुस्तक को मँगवाकर अपने घर पर अपने छोटे-बच्चे को इससे पढ़ा सकते हैं।

-सोमदेव, ऋषि उद्यान, अजमेर।

३. नाम-हिन्दू श्रेष्ठता, **लेखक**-हरविलास शारदा, **अनुवादक**-लक्ष्मीचन्द्र आर्य (आर्य मुनि वानप्रस्थ), **प्रकाशक**-आचार्य विश्व बन्धु, मानव सेवार्थ न्यास, **पृष्ठ संख्या**-३८४, **मूल्य**-६००.०० रु.।

समीक्ष्य पुस्तक स्व. श्री हरविलास शारदा द्वारा रचित हिन्दू सुपीरियोरिटी (Hindu Superiority) का हिन्दी अनुवाद है। यह पुस्तक एक उत्कृष्ट कृति है। इसमें भी शारदा जी ने भारत के प्राचीन गौरव को दर्शाया है।

इस पुस्तक का मूल उद्देश्य प्राचीन हिन्दुओं की उपलब्धियों का एक विहंगावलोकन प्रस्तुत करना है, जिससे कुछ विद्वान् विचारकों का ध्यान इस महान् देश की उस सभ्यता, जिसने मानवता के भौतिक एवं नैतिक उत्थान में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है, की प्रमुख विशेषताओं की ओर आकर्षित किया जा सके।

इस पुस्तक का ध्येय लोगों को हिन्दू सभ्यता की महानता के मूल्यांकन से व प्राचीन हिन्दुओं के चरित्र एवं उपलब्धियों से परिचित कराना है। वर्तमान भारत के विषय में चर्चा करना इस पुस्तक के क्षेत्र से बाहर है। अत: जहाँ कहीं भी हिन्दूओं के समाज, धर्म, साहित्य या चरित्र या उनकी योग्यता व क्षमता का वर्णन है वहाँ प्राचीन भारत के हिन्दुओं की सभ्यता के परिपेक्ष्य का ही स्पष्टीकरण है।

इस पुस्तक के लेखक श्री शारदा जी को बाल्यकाल में ही महर्षि दयानन्द के दर्शन तथा उनका आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। १८९० ई. में वे परोपकारिणी सभा के सभासद बने तथा तीन वर्ष बाद १८९३ ई. में इस सभा के संयुक्त मन्त्री पद पर चुने गये। आप एक प्रसिद्ध समाज सुधारक, शिक्षा शास्त्री, लेखक, विधायक तथा साहित्यकार के रूप में स्मरण किये जाते हैं। इनकी लिखी प्रसिद्ध पुस्तकों के नाम हैं जगत् गुरु स्वामी दयानन्द का जीवन चरित (Life of Dayanand Saraswati-World teacher), महाराणा सांगा, महाराणा कुम्भा, रणथम्भौर के हमीर, अजमेर का ऐतिहासिक विवरण आदि। समीक्ष्य पुस्तक इनकी बड़ी प्रसिद्ध पुस्तक है। इसमें हिन्दुओं अथवा भारत के (१) संविधान (२) विश्व में भारत के उपनिवेश (३) साहित्य (४) दर्शन (५) विज्ञान (६) कला (७) वाणिज्य एवं सम्पदा तथा (८) धर्म इत्यादि शीर्षकों के अन्तर्गत उनका श्रेष्ठता का वर्णन है।

पुस्तक की छपाई आवरण सुन्दर है, पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है।

-मोहनचन्द्र, अजमेर।
चलभाष-९४६८६९५७९०

आवश्यकता

आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द मार्ग (अचल मार्ग), अलीगढ़ हेतु युवा एवं योग्य ''आर्य पुरोहित'' की तुरन्त आवश्यकता है। वेद-विद्वान् एवं आर्य संस्कृति एवं विचार वाले, जो वैदिक संस्कारों को कराने में पूर्ण दक्ष एवं सक्षम हों, वही तुरन्त सम्पर्क करें। मानदेय योग्यतानुसार। आवास की व्यवस्था।

सम्पर्क-राजेन्द्र पथिक (मन्त्री)
चलभाष-०९४१२६७१५५४

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

संस्था-समाचार

-१६ से ३० अप्रैल २०१३ तक

१. मीमांसा दर्शन-अध्यापन कार्यक्रम का सफलता पूर्वक पूर्ण होना-महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित 'परोपकारिणी सभा' के अन्तर्गत 'महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल ऋषि उद्यान, अजमेर' में वैदिक दर्शनों के अध्यापन क्रम में आचार्य सत्यजित् जी द्वारा १ जनवरी २०११ से प्रारम्भ हुए मीमांसा दर्शन का समापन ३ अप्रैल २०१३ को हुआ। महर्षि जैमिनि प्रणीत इस दर्शन का १२ अध्याय तक शाबर भाष्य तथा बाद के चार अध्याय जिसे संकर्ष-काण्ड भी कहते हैं, उस पर श्री देवस्वामी जी के संस्कृत भाष्य का अध्यापन हुआ। इस प्रकार कुल १६ अध्याय वाला मीमांसादर्शन ७६ पाद वाला है, प्रत्येक अध्याय में चार पाद है, किन्तु ३,६ तथा १० वाँ अध्याय आठ-आठ पादवाला है। एक पाद में कई अधिकरण हैं। एक अधिकरण में एक विषय होता है। साथ ही 'अर्थ संग्रह' नामक मीमांसा सम्बन्धित ग्रन्थ भी पढ़ाया गया। कर्मकाण्ड को आधार बनाकर वाक्यार्थ बोध कराना मीमांसा का विषय है। आचार्य सत्यजित् जी के द्वारा इसे बहुत ही रोचक शैली व मुख्य लौकिक दृष्टान्तों के माध्यम से समझाने से अध्येताओं के लिए कठिन विषय भी सरल हो गया। कर्मकाण्ड को भी समझने के लिए केरल में 'अतिरात्र' नामक सोमयाग देखने गये तथा जोधपुर में 'वाजपेय' सोमयाग देखने का सुअवसर प्राप्त हुआ। पं. युधिष्ठिर मीमांसक का शाबर भाष्य हिन्दी तथा पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय जी का अनुवादित शाबर भाष्य व मीमांसा प्रदीप का भी अध्येताओं ने सहयोग लिया।

मीमांसा अध्येताओं की संख्या १३ थी, जिनमें आचार्या शीतल जी कन्या गुरुकुल अलियाबांद, ८ ब्रह्मचारी, ३ वानप्रस्थी मुनि तथा एक वानप्रस्थिनी माता कौशल्या देवी भी रही। इससे अतिरिक्त भी कुछ अध्येताओं ने ३ अध्याय तक तथा कुछ ने और अल्पकालीन अध्ययन का लाभ लिया। [**कक्षा के अनुभव संबंधी लेख**-**१.** मीमांसा एक मनोहारी दर्शन-आचार्या शीतल (मई प्रथम २०१३), **२.** मीमांसा दर्शन-एक भाषाबोधक शास्त्र-वेदनिष्ठ (मई द्वितीय २०१३) शीर्षक से परोपकारी में प्रकाशित है।]

२. डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार-प्रसार कार्यक्रम-

(क) सम्पन्न कार्यक्रम-**१. १५-१७ अप्रैल** को हरिद्वार ज्वालापुर वानप्रस्थ आश्रम में उत्सव में व्याख्यान दिए। **२. १८-२० अप्रैल** को मण्डावली आर्यसमाज, दिल्ली के उत्सव में भाग लिया। **३. २१ अप्रैल** को जनकपुरी आर्यसमाज, दिल्ली के साप्ताहिक सत्संग में भाग लिया। **४. २५-२८ अप्रैल** आर्यसमाज शास्त्री नगर, मेरठ के वार्षिकोत्सव में व्याख्यान दिए।

(ख) आगामी कार्यक्रम-**१. २-५ मई**-चेतनगरोत गाँव (ग्वालियर, म.प्र.) में आर्यसमाज उत्सव में प्रवचन, **२. ११-१२ मई**-आर्यसमाज घरोड़ा, करनाल में आर्यसमाज उत्सव में व्याख्यान, **३. १३ मई**-ब्यावर आर्यसमाज (अजमेर, राज.) में प्रवचन, **४. १८ मई**-वैदिक विद्वान् विरजानन्द जी दैवकरणि जी के परिवार में यज्ञ व प्रवचन (झज्झर, हरि.), **५. २२-२६ मई**-राउरकेला (ओडिसा) में 'संस्कार प्रशिक्षण शिविर' में संस्कार विधि वर्णित संस्कार प्रशिक्षण, **६. २९ मई-४ जून**-गोरखपुर (उ.प्र.) की कई आर्यसमाजों में प्रवचन, **७. ४-५ जून**-राजकोट आर्यसमाज में प्रवचन कार्यक्रम, **८. १६-२३ जून**-योग शिविर, ऋषि उद्यान में प्रशिक्षक, **९. २७-३० जून**-'आर्यसमाज की यज्ञपद्धति' विषयक तृतीय गोष्ठी में (आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, नर्मदापुरम्, होशंगाबाद, म.प्र.) भाग लेंगे।

३. आचार्य सत्येन्द्र जी व वानप्रस्थी-गण की ओडिशा प्रचार यात्रा-दिनाँक १८ मार्च से १२ अप्रैल तक आचार्य सत्येन्द्र जी (उपाचार्य, गुरुकुल ऋषि उद्यान), वानप्रस्थी मुमुक्षु मुनि जी व देवमुनि जी, ब्र. वामदेव जी, भीम जी आर्य आदि ओडिशा में आर्य-धर्म प्रचार-प्रसार यात्रा में रहे। इस दौरान आप लोगों ने ओडिशा के नयागढ़ आदि जिलों के अनेकों ग्रामों में जाकर नशा-सेवन तथा मांस भक्षण का विरोध कर वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार किया। यद्यपि यहाँ लोगों में आहार-विहार संबंधी अशुचिता है तथापि यह समुदाय धर्म के प्रति अपनी विशेष श्रद्धा रखता है। अत: लोगों में विद्वानों के प्रति श्रद्धा का अतिरेक यहाँ देखा गया तथा सभी ने उपदेशों को अच्छी प्रकार से ग्रहण किया। यात्रा संबंधी विवरण इसी अंक में '**ओडिशा यात्रा-उमड़ते अनुभव**' शीर्षक से प्रकाशित है।

४. आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रम-**१. ७-१४ अप्रैल**-आर्यसमाज कोटली कॉलोनी, रिहाड़ी, जम्मू के आर्यसमाज स्थापना दिवस के अवसर पर वेद प्रवचन माला, दोनों समय प्रवचन व आर्यसमाज की ध्यान पद्धति का नित्यप्रति अभ्यास। ध्यान अभ्यास में लोगों की बड़ी रुचि रही, प्रतिक्रिया के रूप में कहा कि प्रत्येक आर्यसमाज के कार्यक्रम में इसी प्रकार ध्यान अवश्य करवाया जाए। कार्यक्रम के अन्तिम दिन में सैकड़ों लोगों ने भाग लिया। भजनोपदेशक पं. उपेन्द्र आर्य। **२. १५ अप्रैल**-प्रात: आर्य बाल भारती स्कूल, पानीपत में लगभग १५०० विद्यार्थियों को पाखण्ड-खण्डन व नैतिकता के विषय में उद्बोधन। ग्राम उग्राखेड़ी पानीपत में गुलाब सिंह

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

जी के परिवार में यज्ञ व प्रवचन किया। उसी दिन पानीपत की ऐतिहासिक लड़ाई का स्मारक स्थल देखा। **३. १८ अप्रैल**–ग्राम–टिटोली (रोहतक) श्री रामचन्द्र जी के घर यज्ञ व प्रवचन। **४. १९ अप्रैल**–आर्यसमाज किंजवे कैंप दिल्ली में प्रातः रामनवमी के अवसर पर श्रीराम जी के जीवन पर प्रकाश डाला। **५. २०–२१ अप्रैल**–आर्यसमाज आर.के.पुरम, दिल्ली के कार्यक्रम में मुख्य वक्ता। **६. २४ अप्रैल**–परोपकारिणी सभा व स्थानीय सज्जन श्रीमान् किशनाराम जी (बिल्लू वाले) के सहयोग से हो रहे २० दिवसीय वेदप्रचार कार्यक्रम (कुचामन सिटी, नागौर) में प्रवचन।

५. आचार्य सानन्द जी का प्रचार कार्यक्रम–**१. २० मार्च २०१३**–को श्रीमान् दिनेश कुमार सोनी, शास्त्री नगर, भीलवाड़ा के यहाँ पिता श्री लक्ष्मण कुमार आर्य की पुण्यतिथि पर यज्ञ–प्रवचन। **२. २५–३१ मार्च**–नवाब का बेड़ा, डिग्गी बाजार, अजमेर में श्री सुनील वैदिक की अध्यक्षता में समायोजित योगासन–ध्यान शिविर में प्रतिदिन आगन्तुक शिविरार्थी महानुभावों को ३० मिनट ध्यान का प्रशिक्षण एवं ध्यान के व्यवहारिक स्वरूप को समझाते हुए गायत्री मन्त्र का जप कराया। **३. १ अप्रैल**–श्रीमान् वीर जी आर्य के केकड़ी (अजमेर) स्थित विद्यालय में ब्र. रामदयाल के साथ भजनोपदेश व प्रवचन का कार्यक्रम। प्रवचन में यज्ञ के व्यवहारिक, अध्यात्मिक स्वरूप को समझाया तथा विद्यार्थी जीवन, विद्यार्थी के कर्त्तव्य, अध्यापकों के कर्त्तव्य, नवयुवक–नवयुवतियों की सौंदर्य–प्रसाधनों आदि के प्रयोग से होती हानियाँ, वैदिक गृहस्थ इत्यादि विषयों पर रोचक उपदेश दिया।

६. राज्यस्तरीय योगासन प्रतियोगिता–परोपकारिणी सभा के तत्त्वावधान में २०–२१ अप्रैल को ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में 'राज्य स्तरीय योगासन प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। इससे पूर्व (पिछले वर्ष) यही प्रतियोगिता जिला स्तर पर आयोजित की गई थी। इस राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में नगर–निगम अजमेर के मेयर श्री कमल बाकोलिया जी समुपस्थित रहे, साथ ही रणजीत जी मलिक (उपाध्यक्ष, टेबल–टेनिस खेल परिषद्), महेन्द्र सिंह रलवाता, सौरभ बजाड़ (पूर्व राज. केसरी, महासचिव कुश्ती संघ) की उपस्थिति का लाभ भी विद्यार्थियों को प्राप्त हुआ। इस प्रतियोगिता में अजमेर, अलवर, नागौर, भीलवाड़ा, जोधपुर, भरतपुर आदि जिलों के अनेक विद्यालयों के लगभग २१० विद्यार्थियों ने भाग लिया। विद्यार्थियों की अवस्था के आधार उनका वर्गीकरण **यू–१२** (अंडर–१२ वर्ष, १२ वर्ष से कम अवस्था वाले सभी विद्यार्थियों का वर्ग), **यू–१४, यू–१७, यू–१९, यू–२१** इत्यादि वर्गों में किया गया। प्रत्येक वर्ग में छात्र व छात्राओं की पृथक्–पृथक् परीक्षा ली गई। समापन समारोह कार्यक्रम में श्री ओम मुनि जी (मन्त्री, परोपकारिणी सभा) ने विद्यार्थियों को ऋषि जीवन की अनेकों प्रेरणाप्रद घटनाएँ सुनाई। इस अवसर पर श्रीमती रागिनी चतुर्वेदी, श्री धर्मेन्द्र गहलोत (पूर्व महापौर), श्री सुरेन्द्र सिंह शेखावत (पूर्व उप महापौर), सौरभ बजाड़ (पूर्व राज. केसरी) आदि समुपस्थित थे। सभा कार्यक्रम के सफलता पूर्वक सम्पन्न होने पर श्रीमान् वीरेन्द्र जी शर्मा (कोच–मेयो कॉलेज), सुश्री ऋतु भण्डारी (कोच–मेयो गर्ल्स) तथा अन्य सभी विद्यालयों के प्रशिक्षकों को धन्यवाद व्यक्त करती है कि आपके परिश्रम से ही इन विद्यार्थियों ने यहाँ उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम के मुख्य आर्थिक सहयोगकर्त्ता श्री संजय जैन, लोकेश कोठारी व नेमी चन्द जी सोनी का भी धन्यवाद, आभार।

७. रामनवमी पर्व व हनुमान जयंती पर्व–दिनांक १९ अप्रैल २०१३ को (चैत्र शुक्ल नवमी) को मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में ब्र. सत्यव्रत जी, रविशंकर जी, वानप्रस्थी देवमुनि जी, रमेश मुनि जी ने अपने विचार प्रस्तुत किए तथा ब्र. योगेन्द्र जी ने भजन प्रस्तुत किया। ब्र. सत्यव्रत की दृष्टि में वेद पर्यन्त अध्ययन करने वाले श्री रामचन्द्र जी एक आदर्श पुत्र, आदर्श विद्यार्थी, आदर्श भाई, आदर्श पति, आदर्श राजा–आदर्श क्षत्रिय थे। ब्र. रविशंकर जी की दृष्टि में धर्म–करणीय कर्मों की संज्ञा है, जहाँ ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का 'वेदोक्त धर्म विषय' इस धर्म का लिखित रूप है तो वही श्री रामचन्द्र जी का जीवन उसका व्यवहारिक रूप है।

आचार्य सोमदेव जी ने हनुमान जयंती (२५ अप्रैल) के उपलक्ष्य पर मारुतिनन्दन हनुमान के जीवन पर प्रकाश डाला। आपने बताया कि किस प्रकार एक विद्वान्, परम धार्मिक, बलशाली, विनम्र व्यक्ति को हमारे समाज ने बन्दर बना दिया। दुर्भाग्य इस देश का इस बात पर है कि आक्रमणकारी, अत्याचारी औरंगजेब के दादा–परदादा का नाम तो आज बच्चों को याद है लेकिन इन महापुरुषों के पिता का नाम भी कुछ ही बच्चे बता पाते हैं।

८. यज्ञ एवं प्रवचन कार्यक्रम–जैसा कि विदित है ऋषि उद्यान, आर्य जगत के उन स्थानों में से एक है जहाँ पूरे वर्ष दोनों समय अपरिहार्य रूप से यज्ञ एवं प्रवचन का कार्यक्रम होता है। प्रातःकाल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा पूर्वनिर्धारित मन्त्र का महर्षि दयानन्द कृत भाष्य का स्वाध्याय किया जाता है। प्रातः प्रवचन के क्रम में सामान्य दिनों में डॉ. धर्मवीर जी जहाँ पुरुषासूक्त (यजु. ३१वाँ अध्याय) पर व्याख्यान करते हैं, वही स्वामी विष्वङ् जी अपने योगदर्शन के क्रम को आगे बढ़ाते हैं तथा सायं सत्संग में आचार्य सोमदेव जी ऋग्वेदादि भाष्य–भूमिका का स्वाध्याय कराते हैं।

प्रातः प्रवचन के क्रम में दिनाँक **१६ अप्रैल** को आचार्य सत्यजित् जी ने बताया कि कभी कोई आलम्बन, घटना हमारे

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

सुप्त आध्यात्मिक संस्कारों को प्रदीप्त कर जीवन धारा को मोड़ देती है। यद्यपि हमें अपने पुण्य-कर्मों के कारण ही आर्य-सिद्धान्तों को जानने का मौका मिला तथापि यदि हमने इन सिद्धान्तों को व्यवहारिक रूप नहीं दिया तो हमारा जीवन भी सामान्य मनुष्य की भाँति ही बीत जाएगा। धार्मिकता के लिए ईश्वर के सर्वव्यापक, सर्वज्ञ आदि गुणों के चिन्तन के साथ-साथ 'न्यायकारी-स्वरूप' का चिन्तन परमावश्यक है।

दिनाँक २०-२३ अप्रैल के प्रवचन में स्वामी विष्वङ् जी ने अपनी दुबई (यू.ए.ई.) यात्रा संबंधी अनुभव सुनाए। आपने बताया कि बुद्धिमान वही है जो कम समय में अधिक उपलब्धि करता है। भौतिक उन्नति करने में आज दुबई एक आदर्श है। भारतीयों/विदेशियों की बुद्धि का प्रयोग कर अरब लोगों ने दुबई आदि में जो विनिर्माण किया है वह हमारे लिए निश्चित ही अनुकरणीय हो सकता है।

दिनाँक २४-२६ अप्रैल को आचार्य सोमदेव जी ने स्पष्ट किया कि सुख को कई प्रकार से विभाजित किया जा सकता है। जिसमें एक प्रकार यह हो सकता है-**(क)** शारीरिक सुख **(ख)** मानसिक सुख **(ग)** बौद्धिक सुख **(घ)** आत्मिक सुख। इस वर्गीकरण में निश्चित रूप से आत्मिक सुख सर्वोत्कृष्ट है। इस आत्मिक सुख को कौन प्राप्त कर सकता है? इस प्रश्न का समाधान ऋग्वेद के १/१४/५ मन्त्र के माध्यम से आपने किया।

दिनाँक २७-२९ अप्रैल को आचार्या शीतल जी ने अपने अजमेर अधिवास (लगभग सवा दो वर्ष) के अनुभव सुनाए। आचार्या जी के शब्दों में-'मुझे यहाँ जीवन मिला है।' अपनी इस उपलब्धि का ९०-९५ प्रतिशत श्रेय उन्होंने आचार्य सत्यजित् जी को दिया। आपने बताया कि पूज्य आचार्य जी की कृपा से आप कर्मफल सिद्धान्त, संस्कारों का महत्त्व, साधना का यथार्थ स्वरूप समझ पायी। इस उपलक्ष्य पर आपने डॉ. धर्मवीर जी, स्वामी विष्वङ् जी आदि का भी धन्यवाद ज्ञापित किया।

सायंकालीन प्रवचन के क्रम में दिनाँक १८ अप्रैल-माता शशी खुल्लर द्वारा जापान यात्रा वृत्तान्त-जापानियों का अतिथियों के प्रति व्यवहार, ईमानदारी, कर्त्तव्यनिष्ठा और उनका शान्त जीवन प्रेरणास्पद रहे। **१९-२१ अप्रैल**-ओडिशा अनुभव-देवमुनि जी, मुमुक्षु मुनि जी, उपाचार्य जी। **२४ अप्रैल**-सानन्द जी द्वारा सत्यं वद, धर्मं चर और स्वाध्यायात् मा प्रमदितव्यम् को समझाया गया। **२६ अप्रैल**-श्री भूपेन्द्र जी भजनोपदेशक ने 'करनी का फल है वन्दे' तथा लेखराम जी शर्मा ने 'धर्म वैदिक आर्य नाम' नामक भजनों की प्रस्तुति दी।

सायंकालीन ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका प्रवचन के क्रम में आचार्य श्री सोमदेव जी ने उपासना प्रकरण में आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार के बारे में वर्णन करते हुए बताया कि इनसे मन की एकाग्रता, प्रसन्नता और इन्द्रियों का जीतना होता है। पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जी की जयन्ती के अवसर पर आपने बताया कि कैसे ईश्वर की सत्ता पर संशय रखने वाला व्यक्ति अटूट ईश्वर भक्त बन जाता है। इस अवसर पर महर्षि के अन्तिम समय का सजीव/मार्मिक वर्णन भी आपने प्रस्तुत किया। ✱

प्रभु के प्यार में आनन्द

-दाताराम आर्य 'आलोक'

प्रभु मेरा, तू करदे दूर अंधेरा, जो फैला घोर घनेरा,
चौ-तरफे इस संसार में।
मुझको आनन्द है, बस केवल तेरे प्यार में।

बिन स्वार्थ कोई नहीं पूछता, स्वार्थ की यहाँ माया है।
ज्ञानी कम अज्ञानी ज्यादा, उन पर काली छाया है।
इस दुनियां में प्यार है ऐसा, दीखे जहाँ पर पैसा,
छीना-झपटी, मां के जाये भी कपटी,
इस पैसे के व्यवहार में। मुझको.....। १

नहीं अति मैं दौलत चाहता, इतनी दे बस काम चले।
नहीं कभी मैं हाथ पसारूँ, बस सुखी परिवार पले।
नहीं कलह व क्रोध हो घर में, सद्बुद्धि हो हर में,
शांति हो ऐसी, स्वर्ग में भी ना हो जैसी,
दे दे मुझको उपहार में। मुझको.....। २

खाया-पीया सब रस देखा, सबका ही रस नश्वर है।
अनन्त और आत्म सुखदायक, सत्य सहारा ईश्वर है।
नहीं राग, वैराग्य है तब से, तुमको जाना जबसे,
दे दे शक्ति, करूँ मैं तेरी भक्ति,
और पा जाऊँ उद्धार मैं। मुझको.....। ३

मल, विक्षेप, आवरण तीनों, परदे इनको क्षीण करो।
नित्य-कर्म और ध्यान योग में, प्रभु मुझको प्रवीण करो।
चित्त निर्मल हो मेरा, हो जिसमें दर्शन तेरा,
'आलोक' यही चाहे, तू मुझसे दूर न जाये,
जीवन का जान गया सार मैं। मुझको.....। ४

-ग्राम व पो.-बुटेरी, तहसील-बानसूर, जिला-अलवर, राज., चलभाष-०९८११७४१९७६

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आर्यजगत् के समाचार

१. श्रुति विज्ञान आचार्यकुलम् में छात्रों का प्रवेश–वैदिक परम्पराओं के संरक्षण हेतु जो अभिभावक अपने बालकों को आर्ष क्रम से दीक्षित करना चाहते हैं वे कृपया सम्पर्क करें। बालक की **आयु सीमा** १२ से १३ वर्ष, **शैक्षणिक योग्यता** कक्षा ५ अथवा ६ उत्तीर्ण, प्रवेश की **अन्तिम तिथि** १० जून २०१३। **विशेष**–स्वामी दयानन्द प्रोक्त शास्त्रों का विधिवत् अध्यापन। संस्कृत भाषा के साथ अन्य भाषाओं का समावेश। शास्त्रीय संगीत का अभ्यास। मलखम्ब, धनुर्विद्या, आसन, व्यायाम आदि हेतु उत्तम शिक्षक। शुद्ध भारतीय नस्ल की गायों से युक्त गोशाला। कम्प्यूटर शिक्षण व्यवस्था। उत्तम स्वास्थ्य हेतु उत्तम भोजन, विचार एवं चिकित्सा व्यवस्था। सभी छात्रों हेतु बिना भेदभाव के भोजन आसन आदि की समान व्यवस्था। (मात्र बालकों हेतु) **–आचार्य वेदव्रत, श्रुति विज्ञान आचार्य कुलम्, ग्राम–छपरा, शाहाबाद मारकण्डा, कुरुक्षेत्र, हरियाणा–१३६१३५, मोबाइल–०९४१६४८८२६२**

२. योग–ध्यान–साधना शिविर सम्पन्न–सुप्रसिद्ध आनन्द धाम आश्रम, गढ़ी, उधमपुर (जम्मू कश्मीर) का ग्रीष्म–कालीन योग–ध्यान–साधना शिविर पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी तथा यतिमां सत्यप्रिया जी के सान्निध्य में ७ से १४ अप्रैल–२०१३ तक सम्पन्न हुआ। पूज्य महात्मा जी प्रात:काल वैदिक रीति से ध्यान करवाते थे तथा उसके बाद श्री रामभिक्षु जी द्वारा साधकों को योगासन एवं प्राणायाम करवाए जाते थे। पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण यज्ञ होता था। इस शिविर में आचार्य सानन्द जी तथा श्री अखिलेश भारतीय जी बहुत ही सुन्दर ढंग से जिज्ञासुओं का शंका–समाधान करते थे। शिविर में जम्मू कश्मीर के अतिरिक्त दिल्ली, पंजाब, उत्तराखण्ड, हि.प्र., हरियाणा आदि अनेक प्रान्तों से पधारे हुए लगभग एक सौ साठ शिविरार्थियों ने भाग लिया।

३. आर्यसमाज रामनगर, रुड़की–में देश के अमर बलिदानों की जयन्ती एवं पुण्य स्मृति में विभिन्न तिथियों पर आयोजन–**६ मार्च २०१३** को श्री आर्य मुसाफिर पं. लेखराम जी की पुण्य तिथि पर उनके जीवन चरित्र व उनके द्वारा चलाया गया, हिन्दू रक्षा कार्यक्रम उनकी कार्यशैली पर गम्भीरता पूर्वक प्रकाश डाला गया। **७ मार्च २०१३** को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्म दिवस पर स्वातिक महायज्ञ किया गया। **१९ मार्च २०१३** के मुनिवर पं. गुरुदत्त विद्यार्थी की पुण्य तिथि पर, उनके उच्च जीवन चक्र पर प्रकाश डाला गया। **२३ मार्च २०१३** को अमर बलिदानियों में सरदार भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव का मुख्य स्थान है, उनके बलिदान दिवस पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इन वीर सपूतों ने देश के लिए अपने प्राणों को हँसते हुए न्यौछावर कर दिया। **३० मार्च २०१३** को महान क्रान्तिकारियों के गुरु संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी व फारसी आदि विषयों के प्रकाण्ड विद्वान् डॉ. श्याम जी कृष्ण वर्मा को पुण्य स्मृति पर उनके द्वारा किये गये कार्यक्रम पर प्रकाश डालते हुए बताया कि कई विषयों के विद्वान् व ज्ञाता, मेधावी होने के कारण ही महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपनी प्रखर बुद्धि से आपको पहचानते हुए कहा कि श्याम जी कृष्ण आप मेरे वैदिक मिशन को सफल करने में सहायक हो सकते हो। इस पर आपने महर्षि को वचन दिया कि मैं अन्तिम समय तक देश की रक्षा का प्रयास करूँगा। इस पर विदेश में 'इंग्लैण्ड' जाकर एक बड़ा भवन क्रय किया। जिसका नाम इण्डिया हाउस रखा। जिसमें रहकर भारतीय छात्र निर्विघ्नता पूर्वक पढ़ सके। महर्षि के कार्यक्रम को सफल बनाया जा सके और आजादी प्राप्त की जा सके। इस आजादी की गतिविधि को बहुत गुप्त रखा गया। इसी मिशन में वीर सावरकर, भाई परमानन्द, मदन लाल धींगरा (हरिदयाल) आदि वहीं रहते थे और मुख वार्ता करते थे। इस महान कार्य के कर्णधार श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा ही थे।

४. आर्यसमाज गाँधी चौक, लातूर, महाराष्ट्र का **वार्षिकोत्सव** (७८ वाँ) दिनांक २८ से ३० मार्च २०१३ को सम्पन्न हुआ। पं. सुन्दरलाल जी शास्त्री उपदेशक और पं. सतीश सुमन भजनोपदेशक के रूप में पधारे थे। उनके उपदेश और भजनोपदेश का लोगों पर अच्छा प्रभाव रहा। उपस्थिति भी भरपूर थी। महिला सम्मेलन दिनांक ३० मार्च को आयोजित किया गया जिसमें हैदराबाद की पं. डॉ. वसुधा शास्त्री का भाषण हुआ।

५. गंगाप्रसाद उपाध्याय पुरस्कार समिति, ८४३/१२४८, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद–आर्यसमाज के उद्भट विद्वान्, प्रचारक एवं लेखक पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय की स्मृति में समिति विगत लगभग चालीस वर्षों से आर्यसमाज विचारधारा से सम्बन्धित ग्रन्थ पर पुरस्कार प्रदान कर रही है। इस पुरस्कार में रु. ११,०००/– की धनराशि, प्रशस्ति पत्र एवं अंगवस्त्र प्रदान किया जाता है। विद्वान् सज्जनों से सादर अनुरोध है कि वे अपनी कृति की चार प्रतियाँ कार्यालय–संकेत पर ३१ मई, २०१३ तक प्रेषित करने की कृपा करें।

६. श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा–प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी **४ मार्च से ११ मार्च, २०१३ तक ऋषिबोधोत्सव** सम्पन्न हुआ। यजुर्वेद पारायण यज्ञ के आचार्य श्री रामदेव जी के ब्रह्मत्व में निरन्तर ७ दिनों तक

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

चलता रहा। भारत के लगभग सभी प्रांतों से पधारे ऋषिभक्त इसमें सम्मिलित हुए।

७. सार्वदेशिक आर्यवीर दल, जयपुर–२० अप्रैल। आर्यसमाज के युवा संगठन सार्वदेशिक आर्यवीर दल की जयपुर शाखा द्वारा ब्रह्मपुरी क्षेत्र स्थित डी.ए.वी.सी.सै. स्कूल में मानव जीवन की आस्था के आधार भगवान श्रीराम के जन्मदिवस "**श्रीरामनवमी**" के उपलक्ष्य में कक्षा १० व १२ के विद्यार्थियों के लिए **क्विज प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया। तत्पश्चात् विजेताओं को महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश व अन्य साहित्य पुरस्कार स्वरूप भेंट किया गया। अन्त में विद्यालय की वाईस प्रिंसीपल **श्रीमती शशि माथुर** ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन संगठन के **महामन्त्री** श्री अनिल आर्य ने किया।

८. वार्षिकोत्सव एवं स्थापना समारोह–आप सभी को यह जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि मसूरी की तलहटी में स्थित, प्राकृतिक सौन्दर्य का अनुपम स्थल श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौन्धा (देहरादून) का वार्षिकोत्सव एवं स्थापना समारोह ३१ मई, १, २ जून २०१३ शुक्र, शनि एवं रविवार को भव्य सम्मेलनों के साथ मनाया जा रहा है जिसकी पूर्णाहूति रविवार को होगी। इस कार्यक्रम में मान्य प्रसिद्ध वैदिक विद्वान्, उपदेशक एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं जिनके अनुपम सन्देश आपको सुनने को मिलेंगे।

९. झारखंड, ग्राम–चपरी में १५० यजमानों ने ५० यज्ञवेदियों पर पूर्णाहुति कर इतिहास रचाया–भागलपुर से लगभग १०० किलोमीटर दूर झारखंड में गोड्डा जिले के चपरी ग्राम में ४ दिनों की वेद कथा का आयोजन किया गया था। २९ मार्च से १ अप्रैल तक प्रतिदिन ३ सभायें होती थीं। विभिन्न सत्रों मे पृथक्–पृथक् विषयों पर आमंत्रित विद्वानों ने अपने विचार रखे। जिनमे होशंगाबाद के आचार्य श्री आनन्द पुरुषार्थी जी, मुजफ्फरपुर के सर्वश्री प्रो. व्यासनन्दन शास्त्री जी, दिल्ली के मधुर भजनोपदेशक श्री दिनेशदत्त आर्य प्रमुख थे।

१०. आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग, उदगीर, जिला–लातूर–आर्यसमाज उदगीर के इतिहास में यह पहला अवसर है जबकि एक आर्य महिला ने चतुर्वेद पारायण किया हो। महाराष्ट्र आर्य प्रतिसभा परली वैजनाथ के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री प्रतापसिंह चौहान की सहधर्मिणी, आर्यसमाज की उपमन्त्री, सौ. सुमनदेवी चौहान ने पिछले सवा वर्ष की कालावधि में अपने सांसारिक व्यवहारों में से समय निकालकर, चतुर्वेद पारायण को सम्पन्न किया। जिसका समापन १० अप्रैल २०१३ आर्यसमाज उदगीर में श्री पं. राजवीर जी शास्त्री के कुशल पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ।

११. आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय आबू पर्वत के तेईसवें वार्षिकोत्सव एवं वेदारम्भ संस्कार का दिनांक २५, २६, २७ मई, २०१३ शनिवार, रविवार, सोमवार को आयोजन किया गया है। इस अवसर पर नये विद्यार्थियों को गुरुकुल में प्रवेश दिया जायेगा। पाँच कक्षा पास लगभग १०–११ वर्ष की आयु के विद्यार्थी गुरुकुल में प्रवेश पा सकेंगे, पंचम कक्षा पास विद्यार्थियों की लिखित परीक्षा ली जायेगी, परीक्षा में पास होने वाले विद्यार्थी को ही प्रवेश दिया जायेगा। इसलिये जो सज्जन अपने पुत्रों को चरित्रवान् एवं सुयोग्य विद्वान् बनाना चाहते हैं, वे गुरुकुल में प्रवेश दिलाने हेतु अपने पुत्रों को साथ लेकर इस समारोह में पधारें। पांचवी कक्षा का प्रमाण पत्र साथ लावें।

१२. आर्यसमाज भीमगंजमण्डी, कोटा के सभागार में होली के अवसर पर बोलते हुए हाड़ौती की प्रसिद्ध गायिका श्रीमती मृदुला सक्सेना ने कहा कि भगत सिंह के पावन बलिदान से युवा प्रेरणा लें और गन्दी होली खेलने के स्थान पर वह होली खेलें जो भगत सिंह, चन्द्रशेखर, रामप्रसाद बिस्मिल, सुखदेव, राजगुरु ने खेली थी।

१३. आर्यसमाज रेलवे कॉलोनी, कोटा–आर्यसमाज रेलवे कॉलोनी द्वारा दिनांक २४ मार्च २०१३ तक तीन दिवसीय बासन्ती नवसस्येष्टि पर्व होलिकोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया।

१४. आर्यसमाज बारां–३१ मार्च। ऋषि बोध पर्व के अवसर पर चल रहे तीन दिवसीय यज्ञ, भजन एवं उपदेश कार्यक्रम के अन्तर्गत स्थानीय आर्यसमाज मन्दिर में आज बहुतायत में सैकड़ों धर्म प्रेमियों ने भाग लिया। समापन सत्र के अन्त में आचार्य वेदप्रिय शास्त्री एवं आर्यसमाज के प्रधान ने सभी आगन्तुकों का आभार व्यक्त किया तथा कोटा से पधारे समाज सेवा के क्षेत्र में अग्रगण्य अर्जुन देव चड्ढा को शॉल एवं स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया।

१५. आर्यसमाज स्वामी दयानन्द मार्ग, श्रीगंगानगर–महर्षि दयानन्द सरस्वती पार्क, पुराणी आबादी में, आर्यसमाज श्रीगंगानगर द्वारा आर्यसमाज स्थापना दिवस तथा नवसंवत्सर के उपलक्ष्य में यज्ञ का आयोजन किया गया एवं बड़े हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। आर्यसमाज गंगानगर के प्रधान भूपेन्द्र खन्ना ने सभी उपस्थित लोगों का धन्यवाद किया। आर्यसमाज के संरक्षक श्री सुबोध शर्मा, श्री स्वदेश राज वर्मा, उपप्रधान जसवंत गोदारा, मंत्री गोर मोहन, कोषाध्यक्ष सुधीर शर्मा, डॉ. देवेन्द्र गुप्ता, डॉ. अरविन्द वर्मा, श्री रणजीत आर्य, श्री रवि वर्मा, घनश्याम पाठक, डॉ. दशरथ, डॉ. चन्द्रभान आर्य सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे।

१६. डी.ए.वी. राँची क्षेत्र ने वैदिक चेतना सह संकल्प दिवस मनाया–दिनाँक २९ मार्च से ३ अप्रैल २०१३। डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मार्गदर्शन में आर्य प्रादेशिक उपसभा,

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

झारखण्ड, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल्स, राँची क्षेत्र तथा झारखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में नीरजा सहाय डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, गौशाला मार्ग, काँके, राँची, झारखण्ड में २९ मार्च को 'चलो! लौट चलो वेदों की ओर' इस आदर्श वाक्य को समाज और जीवन में मूर्त रूप देने के लिए संकल्प दिवस मनाया गया। साथ ही ३० मार्च से ३ अप्रैल तक डी.ए.वी. राँची क्षेत्र के २००० बच्चों ने वैदिक चेतना सह जीवन कौशल शिविर में शिक्षक-शिक्षिकाओं के साथ भाग लिया।

१७. आर्यसमाज तिलक नगर, कोटा-१२ अप्रैल। आर्यसमाज तिलक नगर की ओर से चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अवसर पर आर्यसमाज का स्थापना दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ पं. वृद्धिचन्द शास्त्री के पौरोहित्य में अग्निहोत्रपूर्वक देवयज्ञ से हुआ। इस अवसर पर भारतीय नवसंवत्सर २०७० प्रारम्भ होने के उपलक्ष्य में विशेष आहुतियाँ प्रदान की गई। यज्ञ के पश्चात् सत्संग का आयोजन भी किया गया।

१८. जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, कोटा द्वारा आज एम.एस. सेन्ट्रल सीनियर सेकेण्ड़ी स्कूल रंगबाड़ी सर्किल में छात्र-छात्राओं को कॉपियाँ, पेन व अन्य पाठ्य सामग्री बांटी गई।

१९. १५ यज्ञ वेदियों पर ५३ दम्पतियों ने दी आहुतियाँ गोहाना के वार्षिकोत्सव में २२ से २४ मार्च तक के त्रिदिवसीय वार्षिकोत्सव में पूर्णाहूति के अवसर पर १५ यज्ञ वेदियों पर ५३ दम्पतियों ने आहुतियाँ प्रदान की। इनमें अनेक ऐसे परिवार थे जो जीवन में प्रथम बार ही आर्यसमाज मन्दिर आये थे। होशंगाबाद मध्यप्रदेश के आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी ने पञ्च महायज्ञों को सभी यजमानों के सामने स्पष्ट किया। स्वदुर्गुणों बुराइयों को छोड़ने की प्रेरणा की। प्रबुद्ध वर्ग ने श्रद्धापूर्वक आर्यसत्संग में आने और दोषों को छोड़ने का संकल्प लिया। इसके पूर्व दोनों दिनों में पण्डित सत्यदेव जी आर्य रेडियोसिंगर बरेली के मधुर भजनोपदेश हुए। उपरान्त सभी के लिए आर्यसमाज की ओर से ऋषि लंगर की व्यवस्था की गई थी।

२०. आर्यसमाज सांचौर में १४ अप्रैल २०१३ को भव्य यज्ञ का आयोजन किया गया उसमें अजमेर परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री ओममुनि जी गुरुकुल आबू पर्वत के आचार्य जी श्री ओम जी एवं जोधपुर से दयानन्द गोशाला मंडोर के प्रबन्धक श्री दुर्गा सिंह ही उपस्थित थे। शिवगंज से श्री बाबूलाल जी आर्य इनके सान्निध्य में आर्यसमाज सांचौर से यज्ञ किया गया एवं शहर के गणमान्य लोग मौजूद थे। व्यापारी खेमराज खत्री, प्रवीण कुमार सोनी, हरिसिंह राव, सुनील कुमार, नरपत सिंह आर्य, मिस्त्री मुकेश, भाखराराम विश्नोई, पारस जी सोनी, घेवाराम देवासी, भेराराम विश्नोई, रमेश कुमार, श्रवण कुमार सोलंकी, हरदान जी भाट आदि कई लोग मौजूद थे। इन सभी के सान्निध्य में आर्यसमाज की नई कार्यकारिणी बनाई गई। जो सर्व सम्मति से बनाई गई एवं नये भवन बनाने का सबकी मौजूदगी में शिलान्यास किया गया व कार्य रामनवमी १५ अप्रैल २०१३ को विधिवत् आरम्भ करने का निर्णय लिया गया। कार्यकारिणी में निम्न पद व सदस्य लिए गए-**प्रधान**-नरपत सिंह आर्य, **उपप्रधान**-नानसिंह राव, **मन्त्री**-देविचन्द सोनी, **कोषाध्यक्ष**-हरिसिंह राव।

२१. आर्यसमाज, शृंगार नगर, लखनऊ-नव-संवत्सर २०७० वैक्रमाब्द के आगमन पर चैत्र शुक्ला प्रतिपदा, बृहस्पतिवार, ११ अप्रैल २०१३ को आर्यसमाज शृंगार नगर, लखनऊ द्वारा निकटवर्ती पार्क में १०१ कुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया गया। सामूहिक यज्ञ के पश्चात् श्रीमती राकेश रानी (मरणोपरान्त), श्रीमती आनन्द कुमारी गुप्ता, श्री जगदीश लाल खत्री और ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी को वैदिक धर्म के प्रति उनकी दीर्घकालीन सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा और कार्यक्रम के संयोजक पं. रूपचन्द्र 'दीपक' रहे।

२२. गुरुकुल कुरुक्षेत्र, हरियाणा-सार्वदेशिक आर्यवीर दल का राष्ट्रीय शिविर-स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित गुरुकुल कुरुक्षेत्र के सुरम्य वातावरण में सार्वदेशिक आर्यवीर दल द्वारा **३ से १६ जून २०१३** तक विशाल राष्ट्रीय शिविर का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें आर्यवीर, शाखानायक, उपव्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक एवं आचार्य श्रेणी का शारीरिक, बौद्धिक तथा व्यक्तित्व विकास का प्रशिक्षण योग्य शिक्षकों द्वारा दिया जायेगा।

चुनाव-समाचार

२३. आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-आर्यसमाज पिछोली के वार्षिक चुनाव २०१३ चुनाव अधिकारी अमृतलाल तापड़िया द्वारा सम्पन्न कराये गये। चुनाव निर्विरोध निम्नांकित पदाधिकारी चुने गये। **प्रधान**-प्रकाशचन्द्र श्रीमाली, **मन्त्री**-सुरेश चन्द्र, **कोषाध्यक्ष**-नारायणलाल मित्तल।

शोक-समाचार

२४. वेदमूर्ति आचार्य रामनाथ वेदालङ्कार दिवंगत-गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के १९३६ के यशस्वी स्नातक, ४० वर्षों तक गुरुकुल विश्वविद्यालय में विभिन्न पदों पर कार्यरत, वेदों के मर्मज्ञ विद्वान्, सामवेद भाष्यकार, संस्कृत के उद्भट विद्वान् के रूप में राष्ट्रपति सम्मान से सम्मानित, वेदमूर्ति आचार्य रामनाथ वेदालङ्कार का ९९ वर्ष की आयु में ८ अप्रैल २०१३ को मध्याह्न लगभग १२ बजे उनके निवास स्थान वेद मन्दिर, ज्वालापुर में अकस्मात् निधन हो गया। परोपकारिणी सभा ने गत वर्ष पण्डित जी को ऋषि मेले के अवसर पर सम्मानित किया था। पण्डित जी का चले जाना एक शताब्दी का इतिहास में बदल जाना है। पण्डित जी वेद, व्याकरण, साहित्य आदि अनेक विषयों के मर्मज्ञ एवं सिद्धहस्त लेखक थे। आपका स्वर्गवास समाज की अपूरणीय क्षति है। सभा आपको शतश नमन कर श्रद्धाञ्जलि समर्पित करती है। ✱

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

ध्यान प्रशिक्षक-प्रशिक्षण शिविर में प्रथम श्रेणी प्राप्त शिविरार्थी-गण

श्रीमती सुभासिनी, ओडिशा

स्वामी वेदपति, अजमेर

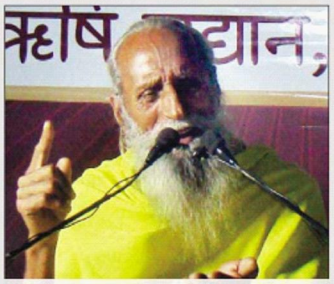
श्री हंसमुनि योगार्थी, नारनौल

श्री दक्षदेव गौड़, इन्दौर

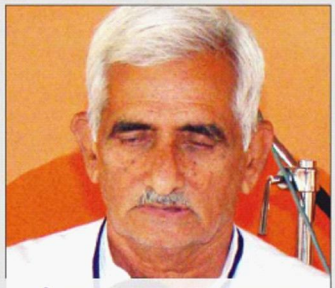
श्री रामफूल यादव, झज्झर

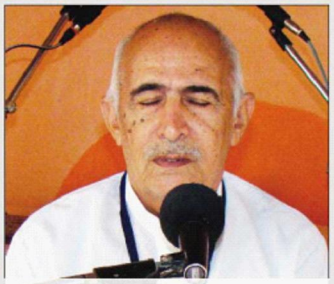
श्री रिसाल सिंह, झज्झर

श्री राजेश कुमार, बिहार

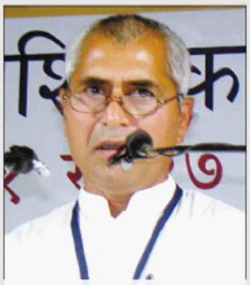
श्री रामनिवास गुणग्राहक, राजस्थान

श्री लक्ष्मण प्रसाद, लखनऊ

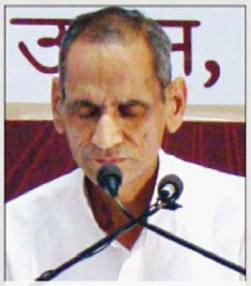
श्री लक्ष्मीनारायण, जोधपुर

श्री तेजपाल सिंह, उ.प्र.

श्री प्रेमशंकर शुक्ला, लखनऊ

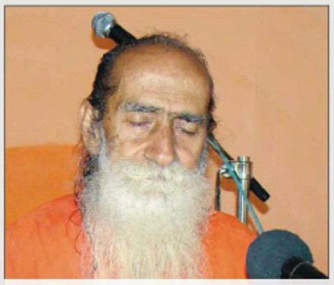
स्वामी सत्यव्रतानन्द, म.प्र.

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.